सेनानी

अंक-13

वर्ष -2022-23

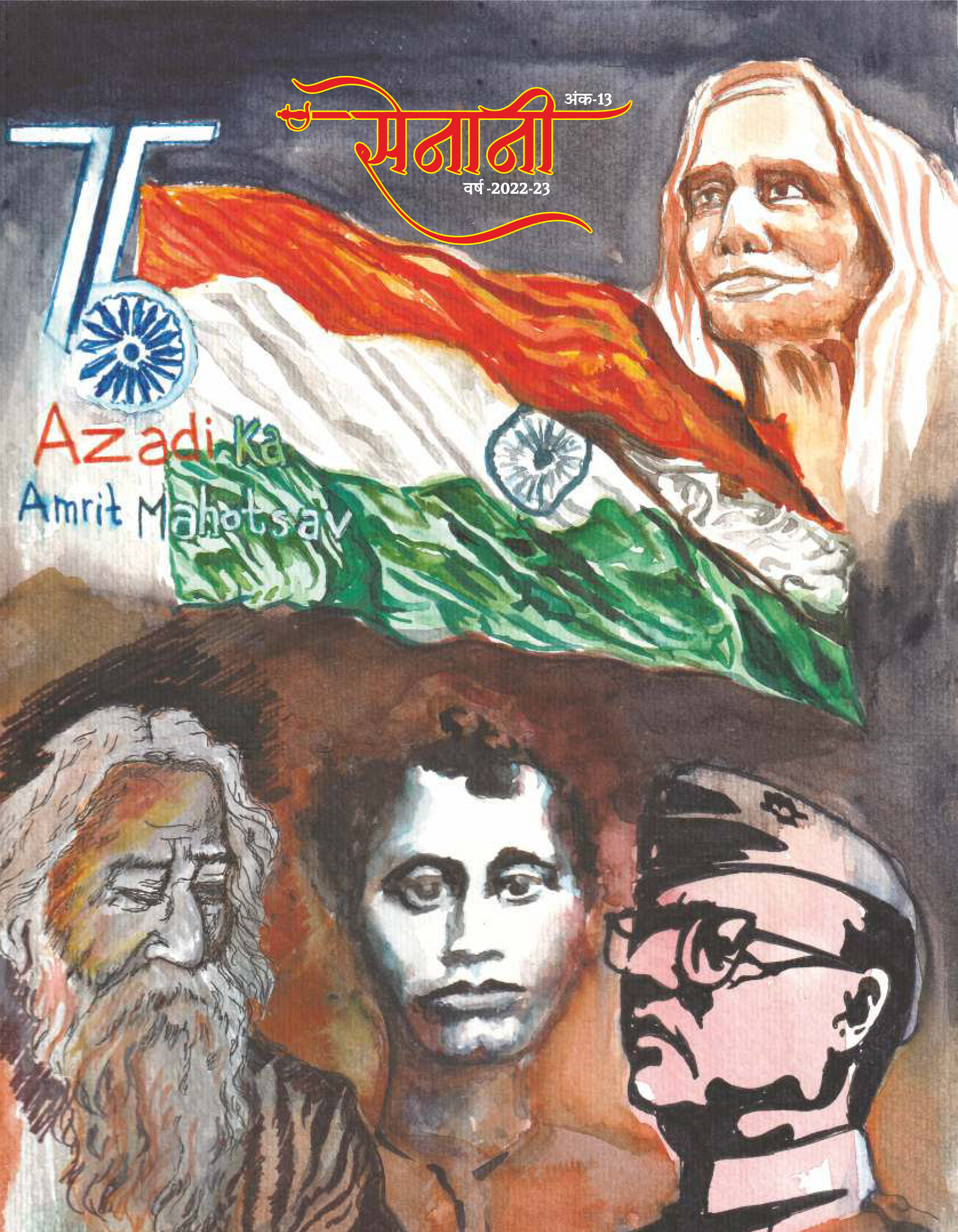

हर घर तिरगां

राजू दास

सेनानी

वर्ष 2022-23, अंक – 13

(केवल आंतरिक परिचालन के लिए)

संरक्षक

अक्षय काला

अपर आयुक्त

प्रधान संपादक

अमित बनर्जी

सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

उप संपादक

पोलीकार्प सोरेंग

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

उप संपादक

सार्जेंट बिनय कुमार शुक्ल

(सेवानिवृत्त, भा.वा.से.)

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय भारत सरकार

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता – 700097, पश्चिम बंगाल,

दूरभाष: 033-23350052

ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

मुद्रक

भूषण स्टूडियो एंव प्रेस

पश्चिम बंगाल 743135, दूरभाष : 9331886129

ई मेल: braj.b.gupt@gmail.com

'सेनानी' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन समिति उनसे सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

खंड	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
संदेश	महानिदेशक का संदेश		4
	बीमा आयुक्त का संदेश		5
	संरक्षक की कलम से..		6
	प्रधान संपादक की कलम से..		7
	पूर्व संपादक की कलम से..		8
अतिथि का कोना	कफ़न की हिंदी	डॉ॰ माणिक मृगेश	13
	मैंने हिंदी प्रौद्योगिकी की जटिलताओं को विलुप्त होते देखा है!	बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'	18
कम्प्यूटर की दुनिया	बैसाखी के सहारे	बिनय कुमार शुक्ल	28
	कर बँहिया बाल आपनों, छोड़ पराई आस	बिनय कुमार शुक्ल	40
	राजभाषा हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के विकास में तकनीकी सहयोग को समर्पित वेबसाइट	बाणी शुक्ल	49
कहानी	ऑफिस डेस्क से समाधि तक	सुब्रत अधिकारी	22
	माँ चली गई, जाते जाते	श्री अर्पण घोष	37
	लाचार	पोलीकार्प सोरेंग	48
कविता, गीत, ग़ज़ल	ग़ज़ल	रवि कहर	12
	प्रेम	रवि कहर	14
	गीत	रवि कहर	15
	गाँव	रवि कहर	30
	माँ	धर्मपाल कुमार	54
भ्रमण	मनुष्य के जीवन में भ्रमण की उपयोगिता	संजय कुमार घोष	24
	एक बार जरूर जाएँ शिमला और मनाली	मुकेश कुमार	26
	मनुष्य के जीवन पर भ्रमण का प्रभाव	राहुल गुप्ता	47
चित्रवीथि	बच्चों की तूलिका से		31
	मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ		33
	रक्तदान समारोह		34
	योग प्रशिक्षण कार्यक्रम		35
	राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह		36
विविधा	उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में राजभाषा कार्यान्वन वर्ष 2021-22: एक सिंहावलोकन		9
	उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह 2022 की रिपोर्ट		10
	कोविड-19 पीड़ित के आश्रितजनों को जब अचानक हितलाभ मिला	शंभु कुमार वर्मा	11
	पंचतत्व	अपर्णा घोष	16
	बाधाएँ कब रोक सकीं हैं आगे बढ़ने वालों को	साक्षात्कार- रवि कहर	42
	पृथ्वी पर जीवधारियों के लिए जल संरक्षण की आवश्यकता	आशुतोष मिश्र	45
	परी के गाँव	अर्णब बनर्जी	51
	सरल प्रशासनिक शब्दावली	राजभाषा शाखा	55

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग,
नई दिल्ली-110002

महानिदेशक का संदेश

मुखमीत एस.भाटिया, भा.प्र.से.
महानिदेशक

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर अपनी विभागीय गृह पत्रिका सेनानी का अगला अंक प्रकाशित करने जा रहा है, यह प्रसन्नता का विषय है। कार्मिकों के रचनात्मक सहयोग से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिकाएं जहां एक ओर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, वहीं दूसरी ओर रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने का भी उपयुक्त माध्यम बनती है।

पत्रिका को अपनी रचनाओं से अलंकृत करने वाले लेखकों को बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

मुखमीत एस. भाटिया, भा.प्र.से.
महानिदेशक

श्री अक्षय काला
अपर आयुक्त
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पश्चिम बंगाल।

बीमा आयुक्त का संदेश

दीपक जोशी
अपर आयुक्त

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर अपनी गृह पत्रिका 'सेनानी' का 13 वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन एक बड़ा कार्य है। इसके साथ ही प्रकाशन के माध्यम से कार्यालय के अनेक कर्मचारी, अधिकारी भी हिंदी से सीधे जुड़ते हैं और इसका सीधा लाभ राजभाषा कार्यान्वयन को मिलता है।

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन में और प्रगति होगी, ऐसी आशा है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

दीपक जोशी अपर आयुक्त

श्री अक्षय काला
अपर आयुक्त
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पश्चिम बंगाल।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक
कोलकाता-700097

संरक्षक की कलम से..

अक्षय काला
अपर आयुक्त

हिंदी पठन पाठन हो, साहित्य चर्चा हो या फिर पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हो, हर रूप में हिंदी के प्रचार प्रसार से लेकर इसके संवर्धन में 'कलकत्ता' सदैव ही अग्रणी रहा है। ऐसा नहीं है कि कलकत्ता की भूमि से केवल हिंदी भाषी समाज के लोगों ने ही हिंदी की सेवा में अपना योगदान दिया है, हिंदीतर भाषी साहित्यकारों एवं भाषा प्रेमियों ने भी इस पुनीत कार्य में सदा ही स्वैच्छिक योगदान दिया है। इसी क्रम में सरकारी कार्यालयों में भी हिंदी कार्यान्वयन को पश्चिम बंगाल में काफी गति मिली है। उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर में हिंदी के कार्यान्वयन की जो प्रगति हुई है वह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। आप जैसे ही हमारे कार्यालय में प्रवेश करेंगे, यहाँ का माहौल ही आपको इस तथ्य से परिचित करवा देगा कि राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से 'ग' क्षेत्र में आने के बावजूद हिंदी कार्यान्वयन पूर्णतः गति पर है। समय-समय पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और मुख्यालय द्वारा कार्यालय की पत्रिका को पुरस्कार दिया जाना भी इस बात का परिचायक है।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'सेनानी' का नवीनतम अंक आपके हाथों में है। आशा है इस बार भी हमारी पत्रिका आपको अच्छी लगेगी। पत्रिका के इस अंक के बारे में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

अक्षय काला
अपर आयुक्त

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम
पंचदीप भवन, सी आई जी मार्ग,
नई दिल्ली-110002

प्रधान संपादक की कलम से..

अमित बनर्जी
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

प्रिय पाठकगण,

जैसे नदी बहती है, भाषा भी वैसे ही बहती है। नदी से नदी मिलती है, भाषा से भाषा मिलती है। नदी और समय जैसे रुकते नहीं, भाषा भी रुकती नहीं। यह आगे बढ़ती ही जाती है। हिंदी को संघ की राजभाषा होने का गौरव दिया गया है। राजभाषा हिंदी की सरिता दफ्तर में भी बहती है। इस अभियान में मंत्रालय तथा मुख्यालय के निर्देशों के मद्देनजर सरिता को समृद्ध करने के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की राजभाषा शाखा निरंतर प्रयासरत है। इस प्रयास में कार्यालय की गृह पत्रिका "सेनानी" एक संयोजन है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हिंदी भाषा, कला और साहित्य में रुचि रखने वाले लेखकों का योगदान, कार्यालय अध्यक्ष की प्रेरणा, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जैसे संगठन के साथ लगाव और राजभाषा शाखा के कार्मिकों के निरंतर आंतरिक प्रयास के द्वारा इस बार भी गृह पत्रिका सेनानी सफलतापूर्वक प्रकाशित कर पाया। इन सभी रुचिशील लेखकों, प्रेरणादायकों और समर्पणभाव से काम करने वाले राजभाषा कार्मिकों को मेरा हार्दिक धन्यवाद है। मेरी यह भी आशा है कि इनका यह प्रयास और जोश आगे भी जारी रहे जिससे हमें आगामी वर्षों में और अच्छे कलेवर में "सेनानी" पत्रिका आप सभी सुधी पाठकों के पास पहुँचाने का प्रयास जारी रख सकें। हिंदी गृह पत्रिका सेनानी के माध्यम से भी राजभाषा हिंदी की सरिता को दफ्तर में अविरल प्रवाहमान करने का हमारा यह प्रयास सफल होगा तो हम यहाँ तक पहुँच पाएँगे :-

"ना किसी के दबाव में, ना किसी के प्रभाव में,
मैं काम करता हूँ अपने स्वभाव से
यह हमारी राजभाषा है।

अंत में सभी पाठकवर्ग जो अपना कीमती समय व्यय करके अपनी रुचि को पैनी करने के लिए इस पत्रिका को पढ़ने के लिए समय दे रहे हैं उसके लिए उनको मैं तहे दिल से धन्यवाद देना चाहता हूँ।

अमित बनर्जी
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
जी.बी.ब्लॉक,प्लॉट संख्या-6,
सेक्टर-3,साल्ट लेक कोलकाता-700097

पूर्व संपादक की कलम से..

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत सरकार के सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं संवर्धन के लिए ढेरों नियम एवं नीति निर्देश बनाए गए हैं। इन नीति निर्देशों के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी हर कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान को दी गई है। इन नियमों के सही रूप में कार्यान्वयन और उल्लंघन संबंधित गतिविधियों के निरीक्षण के लिए भारत सरकार द्वारा संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया है जो समय-समय पर कार्यालयों में जाकर प्रत्यक्ष जाँच करती है तथा किसी प्रकार की कमी के लिए कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का ध्यान तो आकर्षित करती ही है, साथ ही यह जाँच रिपोर्ट महामहिम राष्ट्रपति महोदय तक जाती है। हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं है कि कार्यालय के कार्यों को तेज गति से आगे बढ़ाने के क्रम में कई बार कोताही हो जाती है और हिंदी का कार्यान्वयन यथापेक्षित रूप में नहीं हो पाता है। राजभाषा हिंदी का सही कार्यान्वयन हो इसके लिए धरातल पर देखरेख और फिर अधिकारियों-कार्मिकों की सहायता के लिए हर कार्यालय में हिंदी एवं अनुवाद अधिकारी तैनात होते हैं। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में इनकी बहुत बड़ी भूमिका होती है। ये वे सेनानी हैं जो मन-कर्म और वचन से पूर्णतः समर्पित होते हैं । हालांकि कई बार देखा गया है कि इन सेनानियों को कार्यालयों से समुचित सहयोग तो नहीं मिलता है, साथ ही लोग यह सोच लेते हैं कि जो भी हिंदी में करना है ये ही करें और फिर इनपर कार्यालय के छोटी से छोटी चीजों के हिंदीकरण की जिम्मेदारी डाल दी जाती है। इनका यह समर्पण ही है कि ये बिना शिकायत किए परदे के पीछे रहकर अपना काम किए जाते हैं। धन्य है ये सेनानी अपने इस समर्पण की खातिर। इनकी तपस्या देखकर 'निराला जी' की कविता के कुछ अंश याद आते हैं :-

देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

उप क्षेत्रीय कार्यालय,बैरकपुर के इन हिंदी सेनानियों के प्रयास का एक और पुष्प 'सेनानी' का नया अंक आपके हाथों में है। आशा है कि इस संस्करण के विविध आयाम आपको अवश्य भाएंगे।

शुभकामनाओं सहित,

अपर्णा

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में राजभाषा कार्यान्वन वर्ष 2021-22: एक सिंहावलोकन

संघ के राजभाषा संबंधी सांविधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून, 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई थी। तभी से राजभाषा विभाग संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रगामी प्रयोग बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस कार्य को धरातल पर उतारने के लिए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के प्रत्येक क्षेत्र कार्यालय में राजभाषा शाखा का सृजन किया है। राजभाषा शाखा द्वारा निष्पादन किए जाने वाले कार्य को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है अर्थात अनुवाद, कार्यान्वयन एवं प्रशिक्षण। वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा शाखा द्वारा निष्पादित कार्यो की संक्षिप्त रिपोर्ट नीचे प्रस्तुत है।

1. राजभाषा विभाग की नीति हमेशा से प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की रही है। इसी को ध्यान में रखकर भारत सरकार के कार्यालयों में प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जाती है। इस बाबत राजभाषा के सफल कार्यान्वियन, सरकार की राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार तथा इनका अनुपालन सुनिश्चित करने एवं हिंदी प्रयोग प्रोत्साहन योजना में कार्मिकों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए समय पर परिपत्र जारी किया गया।
2. कार्यालय में गठित विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठके आयोजित करना अपेक्षित है। कार्यालय ने सभी चार बैठकों का आयोजन किया जिसमें समीक्षा, कार्यान्वियन, प्रशिक्षण आदि के लिए आवश्यक उपाय किए गए।
3. उप क्षेत्रीय कार्यालय की विभिन्न शाखाओं, शाखा कार्यालयों एवं मुख्यालय से प्राप्त पत्रों एवं अन्य कागजातों का अनुवाद तथा कंप्यूटर टंकण के कार्य कराए गए।
4. कार्यालय के अधिकारियों एवं कार्मिकों द्वारा राजभाषा शाखा में स्थित हिंदी पुस्तकालय का भरपूर लाभ उठाया गया।
5. राजभाषा शाखा कार्यालय की सभी शाखाओं में संपर्क कार्य द्वारा टिप्पण लेखन, पत्र लेखन, फाइलों एवं रजिस्टरों पर शीर्षनाम लेखन, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण, कंप्यूटर पर हिंदी संस्थापन आदि में आ रही समस्याओं का तत्काल समाधान किया गया।
6. राजभाषा के कार्यान्वयन को गति देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय को वर्ष में कम से कम चार हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित करना अपेक्षित है। उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में अपेक्षित चार कार्यशाला के अतिरिक्त हिंदी पखवाड़े के दौरान एक विशेष कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।
7. कार्यालय की विभिन्न शाखाओं एवं शाखा कार्यालयों से प्राप्त मासिक एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई।
8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है जिसमें केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के संबंध में किए जाने वाले उपायों पर विचार-विमर्श किया जाता है। कार्यालय ने दोनो बैठकों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की है।
9. संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों के लिए वार्षिक लक्ष्य निर्धारित करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है। राजभाषा शाखा द्वारा परिपत्र के माध्यम से इसे सभी के ध्यान में लाया गया। इसके अतिरिक्त जाँच बिंदु भी परिपत्र के माध्यम से सभी के ध्यान में लाया गया।
10. सभी रिपोर्ट यथा हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट, मासिक प्रगति रिपोर्ट, हिंदी शिक्षण योजना की अर्घवार्षिक रिपोर्ट, बीमा आयुक्त को अर्ध सरकारी पत्र आदि का प्रेषण मुख्यालय, हिंदी शिक्षण योजना, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय आदि को समय पर भेजा गया।
11. राजभाषा गृहपत्रिका "सेनानी" का अंक-12 प्रकाशित किया गया।
12. राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी उप क्षेत्रीय कार्यालय के सभी शाखाओं एवं सभी 18 शाखा कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।
13. कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी शिक्षण योजना के अधीन हिंदी प्रवीण/प्राज्ञ/पारंगत/टंकण/कंप्यूटर टंकण का प्रशिक्षण दिलाया गया।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह 2022 की रिपोर्ट

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में 14 सितंबर, 2022 से 29 सितंबर, 2022 तक "राजभाषा पखवाड़ा" मर्यादापूर्वक मनाया गया। कार्यालय के प्रवेशद्वार पर सार्वजनिक सूचना के लिए बड़ा बैनर लगाया गया। इस दौरान अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने एवं राजभाषा नीति संबंधी अनुदेशों से संबंधित परिपत्र सभी शाखाओं एवं शाखा कार्यालयों को जारी किया गया। हिंदी भाषा में कुछ प्रमुख सुक्तियों का एकाधिक पोस्टर शाखाओं में प्रदर्शित हैं। राजभाषा पखवाड़ा के दौरान अधीनस्थ सभी शाखाओं तथा शाखा कार्यालयों को प्राय: प्रयोग होनेवाली छोटी-छोटी हिंदी टिप्पणियों की सूची प्रेषित की गई। संक्षिप्त कार्यशाला के माध्यम से कार्मिकों को सरल हिंदी में कार्य करने की सलाह दी गई, उन्हें उनकी सीट पर जाकर मार्गदर्शन दिया गया। दिनांक- 20.09.2022 को हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दृष्टि से हिंदी पुस्तकें, शब्दावलियाँ प्रदर्शित किए गए। हिंदी की निर्धारित प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिंदी निबंध, राजभाषा प्रश्नोत्तर, हिंदी टिप्पण एवं आलेखन, हिंदी वाक् प्रतियोगिताएँ हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी वर्ग के कर्मचारियों के लिए पृथक रूप से निम्नरूप में आयोजित की गई।

दिनांक	प्रतियोगिता
19.09.2022 (पूर्वाह्न)	हिंदी निबंध प्रतियोगिता
19.09.2022 (अपराह्न)	हिंदी वाक् प्रतियोगिता
20.9.2022 (पूर्वाह्न)	हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता
20.09.2022 (अपराह्न)	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह 2022 का आयोजन 29 सितंबर, 2022 को श्री अनुज गुप्ता, कार्यपालक अभियंता, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता, मुख्य अतिथि की उपस्थिति में यथासंभव सादगी के साथ किया गया। मंच पर आसीन अधिकारियों द्वारा पंचदीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि को पुष्प स्तवक तथा स्मृति चिन्ह भेट किया गया। श्रीमती अपर्णा घोष, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अपने वक्तव्य में राजभाषा के प्रयोग पर बल दिया और सभी कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए उत्साहित किया। अपने वक्तव्य में श्री गुप्ता जी ने बताया कि निगम के इस कार्यलय में अधिकांश संख्या में हिंदीतर कार्मिकों के कार्यरत होने के बावजूद अधिकांश पत्राचार हिन्दी में होना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। वह यह दर्शाती है कि पश्चिम बंगाल के लोग राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में किस प्रकार से समर्पित हैं।

इसके बाद श्री पोलीकार्प सोरेंग, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अगले चरण में मंच पर उपस्थित अधिकारियों द्वारा राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित निर्धारित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। अधिकारियों ने विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी।

लघु सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अपनी सुमधुर आवाज में सुश्री अनुश्री धारा जी ने भजन की प्रस्तुति दी। उनके द्वारा प्रस्तुत संगीत लहरी ने पूरे कार्यक्रम को अनुपम बना दिया। श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो गए। गीत, कविता और संभाषण के साथ ही कार्मिकों द्वारा "करे कोई भरे कोई" नामक एक श्रुति व्यंग्य नाटिका का भी प्रदर्शन किया गया, जिसमें श्री अपूर्व घोष, श्री रविशेखर रवि, श्री आशुतोष मिश्र, श्रीमती देवश्री सेन एवं सुश्री अनुश्री धारा ने भाग लिया। श्री राहुल गुप्ता, अधिक्षक एवं श्री आशुतोष मिश्र, प्र.श्रे.लि. द्वारा हिंदी कविता पाठ किया गया तथा श्री धर्मपाल कुमार ने हिंदी भाषा के प्रयोग पर ओजस्वी वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन अनुवाद अधिकारी श्री बिनय कुमार शुक्ल ने किया।

श्री पोलीकार्प सोरेंग, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने सबको धन्यवाद ज्ञापित कर समारोह का समापन किया।

कोविड-19 पीड़ित के आश्रितजनों को जब अचानक हितलाभ मिला

शंभु कुमार वर्मा,
शाखा कार्यालय, नैहाटी

कोविड-19 महामारी ने पूरे विश्व को हर मोर्चे पर काफी पीछे धकेल दिया है चाहे वह आर्थिक हो समाजिक हो या जानमाल का नुकसान हो। इस महामारी से हमारा देश भारत भी अछूता नहीं रहा यहां भी कोविड-19 महामारी के कारण काफी जानें गई। खासकर इस महामारी के दूसरी लहर में काफी लोगों की जानें गई। इन जान गँवाने वाले लोगों में कर्मचारी राज्य बीमा निगम के बीमित व्यक्ति भी शामिल थे।

ये बीमित व्यक्ति अपेक्षाकृत कम सैलरी पाने वाले व्यक्ति होते हैं यदि इनकी अकाल मृत्यु हो जाती है तो इनके परिवार तथा आश्रितजन के जीवन यापन पर एक गंभीर संकट उत्पन्न हो जाता है।

महामारी के इन गंभीर परिस्थितियों में कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा कोविड-19 रिलीफ योजना का लाया जाना, और इसे लागू करना, उन मृत व्यक्तियों के परिवारों तथा आश्रितों के लिए एक वरदान साबित हुआ जो इस महामारी के कारण काल के ग्रास में समा गए।

उप-क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर के अंतर्गत नैहाटी शाखा कार्यालय में 2 ऐसे मामले प्राप्त हुए, जिन्हें इस हितलाभ के लिए प्रथम दृष्टया योग्य पाया गया। ये मामले थे स्वर्गीय अनूप शर्मा तथा स्वर्गीय मोहम्मद मुकीम के। इन दोनों के परिवार के लोग हमारे शाखा कार्यालय में अंत्येष्टि खर्च के दावे के लिए आए थे। हालांकि हमारे शाखा कार्यालय द्वारा संबंधित नियोक्ताओं को कोविड-19 रिलीफ योजना के बारे में जानकारी मुहैया कराई गई थी, फिर भी उपरोक्त दोनों दावेदारों को इस योजना के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

हमारे शाखा कार्यालय द्वारा जब उपरोक्त दोनों अंत्येष्टि खर्चा के दावों के कागजात की पड़ताल की गई तो यह पाया गया कि दोनों बीमित व्यक्ति मृत्यु पूर्व कोविड-19 महामारी से संक्रमित थे। जब इसके बारे में मृत व्यक्तियों परिवारों से जानकारी मांगी गई, तो उन्होंने भी कोविड-19 महामारी से संक्रमित होने की पुष्टि की।

उसके बाद उपरोक्त दोनों दावेदारों को कोविड-19 रिलीफ योजना के बारे में विस्तार पूर्वक बताया गया तथा CRS-I,II,III,IV एवं V फार्म को प्रसांगिक कागजातों के साथ हमारे शाखा कार्यालय मे जमा करने को कहा गया।

जुबेदा खातून (पत्नी) स्वर्गीय मोहम्मद मुकीम

फाल्गुनी शर्मा (पत्नी) अंकुर शर्मा (पुत्र) स्वर्गीय अनुप शर्मा

जब दोनों मृत बीमित व्यक्तियों के दावेदारों-फाल्गुनी शर्मा (पत्नी) अंकुर शर्मा (पुत्र) स्वर्गीय अनुप शर्मा एवं जुबेदा खातून (पत्नी) स्वर्गीय मोहम्मद मुकीम ने अपना दावा शाखा कार्यालय को जमा किया, तो उनके दावों के कार्रवाई के दौरान एक अड़चन सामने आई। दोनों का कोविड-19 पॉजिटिव टेस्ट रिपोर्ट मैन्युअल फ़ॉर्म में था तथा उनका सत्यापन ऑनलाइन में उपलब्ध नहीं था।

अब दोनों के कोविड-19 रिपोर्ट का सत्यापन पश्चिम बंगाल राज्य सरकार के अधीन कोविड-19 सरकारी अस्पतालों से करना था। इस कार्य के लिए हमारे शाखा कार्यालय के जिम्मेदार कर्मचारियों/ अधिकारियों ने स्वयं संबंधित अस्पताल में जाकर सत्यापन हेतु आवश्यक कदम उठाए। हालांकि दोनों सरकारी अस्पतालों में कोविड-19 से संक्रमित मरीजों की भारी मात्रा में उपस्थित थी, फिर भी कर्मचारियों ने अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हुए उन अस्पतालों में कई बार प्रयास किया, कोविड-19 सुरक्षा मानकों को पालन करते हुए। हालांकि राज्य सरकारों द्वारा अपेक्षाकृत रिपोर्ट का सत्यापन थोड़ी देर से प्राप्त हुआ, फिर भी उन दोनों व्यक्तियों के कोविड-19 होने की पुष्टि की गई।

इसके बाद उपरोक्त दोनों दावों के उपयुक्त कार्रवाई के बाद प्रसांगिक कागजात एवं शाखा प्रबंधक के सिफारिशों के साथ अनुमोदन हेतु क्षेत्रीय निदेशक उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर को भेजा गया। क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उचित समय में शाखा कार्यालय को अनुमोदन भी प्राप्त हो गया। इसके बाद उपरोक्त दोनों मृत बीमित व्यक्तियों के दावेदारों को बकाया भुगतान के साथ कोविड-19 रिलीफ योजना के अंतर्गत आश्रित हितलाभ का भुगतान कर दिया गया।

वर्तमान समय में दोनों मृत व्यक्ति के आश्रितों को हर महीने आश्रितजन हितलाभ प्राप्त हो रहा है और दोनों परिवार इस हितलाभ को प्राप्त कर काफी संतुष्ट है, एवं कर्मचारी राज्य बीमा निगम का आभार प्रकट कर रहे हैं।

रवि कहर

ग़ज़ल

दूर रहकर भी मेरे दिल से
नहीं जाओगे,
सारी दुनिया में कहीं मुझ-सा
नहीं पाओगे।

तुमसे कितनी है मुहब्बत; मैं सफ़ाई क्या दूँ!
अपने ज़ख़्मों पे मुझे
मरहमों-सा पाओगे।।

बात लोगों की भला तुम पे; असर क्या होगी!
ख़ुदकी बातें जो सुनोगे तो
बिखर जाओगे।।

अल्लाह बोला नहीं भगवान से; नफ़रत में कभी!
एक घर में जो रहोगे तो
बिगड़ जाओगे।।

तीर-तलवार से हारा नहीं; कोई दुश्मन!
प्यार बरसाके हर इक दिल में
उतर जाओगे।।

ज़र्रा-ज़र्रा यूँ भटकने की; ज़रूरत क्या है!
ख़ुद पे ईमान जो लाओगे
निखर जाओगे।।

आजकल हर सिंत दिन में; अन्धेरा है "कहर!"
ख़ुद जो जलोगे तो अन्धेरों में
फ़तह पाओगे।।

कफ़न की हिंदी

(डॉ॰ माणिक मृगेश के फेसबुक वाल से साभार)

वाट्स एप ग्रुप के एक सदस्य ने प्रश्न पूछा कि 'कफ़न को हिंदी में क्या कहते हैं ? यह ठीक उसी तरह का प्रश्न है कि जलेबी, समोसा, साड़ी, वर्षा बहन और गया को अंगरेजी में क्या कहेंगे ?

भाषा और संस्कृति साझा होती हैं कोई भी भाषा, कोई भी संस्कृति बिलकुल विशुद्ध नहीं होती और हो भी नहीं सकती राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर' ने 'संस्कृति के चार अध्याय' में विशुद्धतावादियों को ज़वाब देते हुए लिखा है कि 'मेरी कमर में दर्द है' इस वाक्य को कोई भी हिंदी का विशेषज्ञ विशुद्ध हिंदी में लिखकर बता दे कमर और दर्द इनके काम चलाऊ समानार्थी शब्द तो हो सकते हैं जैसे कटि और पीड़ा मगर ये कमर और दर्द की बात को शत प्रतिशत अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं, केवल व्याख्या कर सकते हैं हरेक भाषा की खुशबू होती है, लहजा होता है, उसके अपने देशज शब्द होते हैं उनके दूसरी भाषा में पर्याय नहीं मिल सकते कफ़न का हिंदी पर्याय नहीं हो सकता भाव को प्रकट करने वाला शब्द शव-वस्त्र हो सकता है मगर वह कफ़न के भाव को स्पष्ट नहीं करता किसी भी शब्द का पर्यायवाची केवल निकटस्थ अर्थ व्यक्त कर सकता है मगर सौ फीसदी नहीं।

हवा के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे कि - पवन, समीर, अनिल, मारुति, वात, वायु आदि-आदि पवन = सनसन की आवाज़ के साथ बहने वाली हवा समीर = शीतल हवा अनिल = पर्वत से बहने वाली हवा वात = पेट में बनने वाली गैस वायु = सामान्य हवा मारुति = आँधी अंधड़

कमल के भी अनेकों पर्यायवाची शब्द हैं - सरोज, पंकज, नीरज आदि । सरोज= तालाब का कमल, पंकज=कीचड़ में उत्पन्न कमल, नीरज= किसी भी पानी में उत्पन्न कमल।

संज्ञा शब्दों के अनुवाद नहीं हुआ करते करने भी नहीं चाहिए जलेबी को अँगरेजी में JALEBI लिखा जाता है Round Round stop नहीं, साड़ी को Saree लिखा जाता है Long Long Cloth नहीं, वर्षा बहन (महिला का नाम) को अँगरेजी में Rainy Sister नहीं कहा जाएगा गया (शहर का नाम) को 'went' नहीं लिखा जाएगा ठीक उसी प्रकार टाई विदेशी परिधान है उसका हिंदी में कंठ लंगोट अनुवाद करना हास्यास्पद तो है ही , अश्लील भी है पिज़्ज़ा की हिंदी हो ही नहीं सकती, क्योंकि यह हमारे यहाँ का व्यंजन नहीं है और संज्ञा है समोसा, इडली, छोले भटूरे को क्रमशः रोमन में Samosa, Idali, Chhole, Bhature लिखा जाएगा और विदेशों में लिखा भी जा रहा है

अब संस्कृति की बात करते हैं हरेक संस्कृति में रीतियाँ, कुरीतियाँ व विशिष्टियाँ होती हैं हम ज़्यादातर पश्चिमी सभ्यता को कोसते रहते हैं क्या पश्चिमी संस्कृति में सारी बातें बुरी होती हैं अगर बुरी ही हैं तो रोजाना अँगरेजी स्कूल क्यों खुलते जा रहे हैं और भारतीय भाषाओं के बंद क्यों होते जा रहे हैं मैकाले को कोसने वालों के बच्चे या तो विदेश में पढ़ते हैं या पब्लिक स्कूलों में 'वेस्टर्न स्टाइल टॉयलेट' आज एक आम जरूरत बन गई है रेलगाड़ियों में भी वेस्टर्न स्टाइल टॉयलेट लगाए जा रहे हैं यह भी तो एक पश्चिमी संस्कृति का अंग है।

बरमूडा को लीजिए बरमूडा बच्चे, युवा, बूढ़े सब में इतना लोकप्रिय हो गया है कि बरमूडा और टी-शर्ट को पहनकर शहर में कहीं भी जा सकते हैं क्या घुटन्ने (हमारे यहाँ के परिधान) को पहनकर आप कहीं जा सकते हैं घुटन्ने को तो घर में भी पहनने में शर्म आती है बरमूडा और टी-शर्ट आज साहित्यकारों की पहली पसंद बनते जा रहे हैं हालाँकि साहित्यकारों को तो कुर्ता-पायजामा और कंधे पर लटका लंबा झोला ही शोभा देता है।

भाषा और संस्कृति मेरी-तेरी नहीं हुआ करतीं बल्कि साझा और मिली-जुली होती हैं हमारी भारतीय संस्कृति को ही लीजिए हमारे देश में पता नहीं कितनी संस्कृतियों के, कितने देशों

के लोग आए हैं और मिल-जुलकर रह रहे हैं यही स्थिति लगभग हर देश की है इसलिए भारतीय संस्कृति को सामासिक संस्कृति कहा जाता है।

राजभाषा(हिंदी) का स्वरूप भी धारा 351 में इसी बात को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट किया गया है कि राजभाषा की शब्दावली का चयन / निर्माण भारत की सामासिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा मूलतः संस्कृत के धातुओं में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर किया जाएगा और गौणतः इसमें सारी भारतीय भाषाओं, यहाँ तक विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्दों को अंगीकार किया जा सकेगा और राजभाषा ने यह कार्य किया भी है धमाल, दंगा, लफड़ा, पंगा, लोचा आदि दूसरी भाषाओं के शब्दों को राजभाषा ने अंगीकार कर लिया है अतः कफ़न जिस किसी भी भाषा का शब्द हो, लेकिन यह शब्द शव के संदर्भ में बात को स्पष्ट करने वाला बिलकुल सार्थक शब्द है अतः इसका हिंदी विकल्प नहीं ढूँढा जाना चाहिए।

अंत में यही कहेंगे कि भाषा और संस्कृति के संदर्भ में विशुद्धतावाद की बात करना संगत नहीं है जो भी अच्छा होता है, समाज उसे स्वतः अपना लेता है, बुरा होता है , त्याग देता है।

प्रेम

रवि कहर

मैं माँ की ममता में मिलता
मैं मुखरित होकर हूँ खिलता,
मैं मिलूँ मृदुल मुस्कानों में
मैं नहीं कभी साँसें गिनता।
मैं शिखर-शिखा सरिता-सागर
मैं छलकूँ बन नन्ही गागर,
मैं नित्य करूँ नैना न्यारे
मैं बनूँ अगम गिरिधर-नागर।
मैं दृष्टिहीन मैं दृष्टिवान
मैं भाग्यहीन मैं भाग्यवान,
जग में मेरे रूप अनेकों
मैं हर प्राणी में विद्यमान।

मैं प्रेम हूँ एक तपस्या हूँ
मैं मर्यादा की हत्या हूँ,
मैं मस्त फिरूँ; वन-वन भटकूँ।
मैं सृष्टि की दिनचर्या हूँ।
मैं राग में हुँ अनुराग में हूँ
मैं रहता विरह-विराग में हूँ,
मैं मोह-माया के मौसम में
मैं जलता सच की आग में हूँ।
मैं बीज-तना-जड़-कली-फूल
मैं कण-कण को करता कुबूल,
मैं आशा और निराशा हूँ
मैं झुककर बनता चरण-धूल।
मैं मूरत हूँ मैं अमूरत हूँ
मैं इसकी उसकी सूरत हूँ,
मैं कभी नहीं त्यागा जाता
मैं त्रिभुवन की एक ज़रूरत हूँ।

गीत

रवि कहर

जिसको चाहो वो दुनिय़ा में मिलता नहीं;
फ़िर य़े चाहत बढ़ाने से क्य़ा फ़ायदा,
फूल गुणियों के आंगन में खिलता नहीं;
दिल में कलिय़ाँ खिलाने से क्य़ा फ़ायदा।

बेसबब बेवजह लोग दिल तोड़ते;
दिल से दिल को नहीं अब कभी जोड़ते,
दूर ग़ैरों की बाँहों में रहते हैं जो;
दिल दुखाने के मौके नहीं छोड़ते।
फूल बनकर कली जब चली जाती है!
दिल को गुलशन बनाने से क्य़ा फ़ायदा।।

सिर्फ दौलत व शोहर से पहचान है;
ग़र य़े हैं तो बशर आज भगवान है,
इनके आगे कोई दिल की क़ीमत नहीं;
इनसे बढ़कर नहीं कोई ईमान है।
सोने-चांदी की क़ीमत भी घट जाती है!
मोल अपना बढ़ाने से क्य़ा फ़ायदा।।

तू है सुन्दर बहुत, तुझपे मरते हैं सब,
तेरे कहने से दुनिय़ा में चलते हैं सब,
चांद-तारों से ज़्यादा तेरी मांग है;
इक इशारे पे चेहरे बदलते हैं सब।
सबकी मंज़िल है दो गज़ ज़मीं और क़फ़न!
रूप से लौ लगाने से क्य़ा फ़ायदा।।

फूल गुलशन को तजकर; चले जाते हैं;
फ़िर भी गुलशन की रौनक; जाती नहीं,
पत्ती-पत्ती बिखरते हैं वो बेवफ़ा;
जिनको सीरत में सूरत भी भाती नहीं।
दिव्य-दर्शन की आशा में मुरझा गए
ग़ैर पे जाँ लुटाने से क्य़ा फ़ायदा।।

कोई वेदों की पावन ऋचाएँ पढ़े
कोई मन्दिर में जाकर जलाए दीए,
दान हाथों से भर-भर लुटआए कोई
पुण्य-कर्मों का अमृत पिलाए पीए।
य़े जहाँ है उसी का जो माँ-बाप का!
दर-ब-दर सर झुकाने से क्य़ा फ़ायदा।।

पंचतत्व

अपर्णा घोष
सहायक निदेशक (राजभाषा)

"पंचतत्व" का उल्लेख अक्सर प्राचीन इतिहास और सभ्यता में मिलता है। पंचतत्व संस्कृत शब्द "पंच" और "तत्व" से बना है अर्थात् वे पांच तत्व जिनसे पूरा संसार और मानव शरीर बना हुआ है। हिंदू पुराण के अनुसार मानव शरीर इन पांच आधारभूत तत्वों से बना हुआ है। मनुष्य की मृत्यु के पश्चात उसका देह इन तत्वों में पुन: विलीन होकर पारितंत्र में समाहित हो जाता है। ये पांच तत्व हैं- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश।

"छिती जल पावक गगन समीरा, पंचतत्व रचित अधम सरीरा" यानी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से हमारी काया बनी हुई हैं। इन पाँचों के संयोग से ही हमारा शरीर बनता है इसका पालन पोषण होता है और अंत में इन्ही में समाहित हो जाता हैं।

पांच तत्व भौतिक गुणों, ऊर्जा से संबंधित विशेषताओं और जैविक कार्यों को दर्शाते हैं।

घनत्व के अनुसार, इन पांच तत्वों को निम्नलिखित क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है: पृथ्वी>जल>अग्नि>वायु>आकाश।

न केवल जीवन के लिए इन पांच तत्वों का होना जरूरी हैं, बल्कि जीवनोपरांत भी हमारी देह इन पंचतत्वों में विलीन हो जाती हैं. मुनियों ने पंचतत्वों को सरल शब्दों से समझाने के लिए इन्हें भगवान कहा हैं. यानी भ से भूमि, ग से गगन, वा से वायु अ से अग्नि और न से नीर या जल।

ब्रह्मांड की नींव के रूप में पंच-तत्व पूरे ब्रह्मांड की नींव पांच बुनियादी तत्वों द्वारा रखी गई है। वे इस बहती दुनिया के लिए नदी के किनारे की तरह कार्य करते हैं। इस संसार के सभी जीव-जंतु पंच-तत्त्व या पंच तत्वों से मिलकर बने हैं। इन पांच तत्वों का समामेलन प्रत्येक वस्तु और ब्रह्मांड में होने के लिए एक व्यापक स्पेक्ट्रम प्रदान करता है। यह न केवल इसे विविध बनाता है बल्कि इसे एक असाधारण आयाम भी देता है। प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति में संरचना का अनुपात और सामग्री अलग-अलग हो सकती है लेकिन वे एक अविभाज्य रूप में मौजूद है, जो विभिन्न तत्वों की बहुमुखी प्रतिभा के कारण मिश्रित बनावट की है। समस्त वैश्विक चेतना और आत्मा में इन पांच तत्वों को उनके अस्तित्व के अभिन्न अंग के रूप में शामिल किया गया है।

पंचतत्वों के गुणधर्म

पृथ्वी– धैर्य और सहन शक्ति की पर्याय धरती की सतह पर करोड़ो जीवों का जीवन हैं। इसे से उत्पन्न अन्न से हम अपना पेट भरते हैं। पीने योग्य जल और वायु भी इसी के वातावरण में मिलती हैं।

जल – जीवन के महत्वपूर्ण तत्वों में जल भी एक हैं, इसके बिना महज कुछ घंटे या दिनों में ही जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। मंगल आदि ग्रहों पर जीवन इसलिए नहीं हैं क्योंकि वहां जल नहीं हैं। इसीलिए तो कहा जाता है जल ही जीवन हैं, बिन जल सब सून।

अग्नि – यहाँ अग्नि का आशय ऊर्जा और शक्ति से हैं। ऊर्जा जो हमें भोजन और सूर्य से प्राप्त होती हैं। पृथ्वी पर विद्यमान जल और वायु को पाकर स्वयं को उर्जावान महसूस करते हैं। सजीवों और निर्जीवों में मूल अंतर उर्जा का ही हैं। हमारे लिए ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत सूर्य हैं।

वायु तत्व- सांस लेने के लिए प्राणवायु जरूरी हैं, इसकी अल्पमात्रा में दम घुटने लगता हैं। यह हमारे जीवन के लिए

आवश्यक पंचभूतो में एक हैं। वायुमंडल में उपलब्ध कुल गैसों में केवल ऑक्सीजन ही जीवनदायिनी है इसे प्राणवायु भी कहते हैं।

आकाश तत्व– पंचतत्वों में अंतिम तत्व आकाश या गगन हैं जो सभी तत्वों में संतुलनकारी माना जाता हैं। यह हमारे वायुमंडल और ब्रह्मांड को स्थायित्व देता हैं।

पंचतत्व और स्वास्थ्य सभी चेतन और निर्जीव चीजें इन पांच तत्वों से बनी हैं। इसलिए जो कुछ भी हमारे चारों ओर है, जो कुछ भी हम खाते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र की जैव विविधता, इन पंच तात्वों को एक साथ रखते हैं।

प्रकृति में जो पदार्थ होते हैं जैसे, खाद्य पदार्थ, पौधे, जड़ी-बूटियां, झाड़ियां, सूर्य के प्रकाश, वायु, जल, खनिज आदि में पंच तत्व की अवधारणानुसार मानव शरीर के समान ढांचा होता है। यह स्वास्थ्य को बनाए रखता है और इस श्रृंखला के उचित संतुलन के लिए पर्यावरण के साथ इसे स्पष्ट करता है।

इन तत्वों के एक-दूसरे के साथ सही अनुपात में रहने से स्वस्थ शरीर बनता है। बेहतर स्वास्थ्य के लिए शरीर और प्रकृति के बीच संतुलन को सामंजस्यपूर्ण रखा जाना चाहिए। वैमनस्य होने पर स्वास्थ्य खराब होने लगता है।

यही कारण है कि आयुर्वेद में शरीर को निरोग और बलशाली बनाने के लिए धातु के भस्मों का प्रयोग किया जाता है।

जल तत्व से मतलब तरलता से है। जितने भी तरल तत्व शरीर में बह रहे हैं वे जल तत्व हैं, चाहे वह पानी हो, खून हो या शरीर में बनने वाले सभी तरह के रस और एंजाइम हों। जल तत्व ही शरीर की ऊर्जा और पोषक तत्वों को पूरे शरीर में पहुचाने का काम करते हैं। इसे आयुर्वेद में कफ के नाम से भी जाना जाता है। इसमें असंतुलन शरीर को बीमार बना देता है।

अग्नि तत्व ऊर्जा, ऊष्मा, शक्ति और ताप का प्रतीक है। हमारे शरीर में जितनी गर्माहट है, सब अग्नि तत्व से है। यही अग्नि तत्व भोजन को पचाकर शरीर को स्वस्थ रखता है। इसे आयुर्वेद में पित्त के नाम से जाना जाता है। ऊष्मा का स्तर ऊपर या नीचे जाने से शरीर भी बीमार हो जाता है। इसलिए इसका संतुलन जरूरी है।

जिनमें प्राण है, उन सबमें वायु तत्व है। हम सांस के रूप में हवा (ऑक्सीजन) लेते हैं, जिससे हमारा जीवन है। पतंजलि योग में जितने भी प्राण व उपप्राण बताए गए हैं, वे सब वायु तत्व के कारण ही काम कर रहे हैं। आयुर्वेद में इसे वात नाम से जानते हैं।

आकाश तत्व अभौतिक रूप में मन है। जैसे आकाश अनंत है वैसे ही मन की भी कोई सीमा नहीं है। जैसे आकाश अनंत ऊर्जाओं से भरा है, वैसे ही मन की शक्ति की कोई सीमा नहीं है जो दबी या सोयी हुई है। आकाश में कभी बादल, कभी धूल नजर आते हैं तो कभी वह बिल्कुल साफ होता है, वैसे ही मन भी कभी खुशी, कभी उदास तो कभी शांत रहता है। इन पंच तत्वों से ऊपर एक तत्व है आत्मा। इसके होने से ही ये तत्व अपना काम करते हैं। तभी शरीर में ऊर्जा रहती है और वह इन तत्वों को नियंत्रण में रख सकता है।

मनुष्य का शरीर तंत्रिकाओं पर खड़ा है। विभिन्न प्रकार के ऊतकों से मिलकर अंगों का निर्माण हुआ है। शरीरतंत्र में मुख्य चार अवयव हैं- मस्तिष्क, प्रमस्तिष्क, मेरुदंड और तंत्रिकाओं का पुंज। इसके अलावा कई और तंत्र हैं जैसे श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, ज्ञानेंद्रियां, प्रजनन तंत्र आदि। इन सभी तत्वों को समझ कर हम तत्वों को कुछ प्रयोग के द्वारा संतुलन में कर सकते हैं जिससे हमारे आगे की यात्रा बढ़ सके। जैसे-जैसे हम क्रिया करेंगे उसका अनुभव हमें प्रत्यक्ष मिलेगा। हमारी हाथ की उंगलियों में तत्व संदेश देंगे कि कौन सा तत्व आपके भीतर कम है और कौन सा अधिक है। हम जानते हैं कि हाथ की पांच उंगलियां इन्हीं पांच तत्वों का प्रतिनिधत्व करती हैं। अंगूठा अग्नि का, तर्जनी वायु का, मध्यमा आकाश का, अनामिका पृथ्वी का और कनिष्का जल का प्रधिनिधित्व करती हैं। इन उंगलियों में विद्युत धारा प्रवाहित होती रहती है।

मानव शरीर प्रकृति द्वारा तैयार की गई एक मशीन है जिसके सूक्ष्म संसाधनों व तंत्रों और तत्वों के प्रयोग की सटीक सहज क्रिया के जरिए हम अपनी ऊर्जा को निरंतर गति दे सकते हैं।

मैंने हिंदी प्रौद्योगिकी की जटिलताओं को विलुप्त होते देखा है!

- बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'

ऑनलाइन भेंट वार्ता : वार्ताकार – बिनय कुमार शुक्ल

- बालेन्दु शर्मा 'दाधीच'

तकनीकी दुनिया में प्रवेश के पूर्व आप पत्रकारिता की दुनिया में थे। कृपया अपने पत्रकारिता की दुनिया के बारे में कुछ बताइए।

मेरी रुचि रचनात्मकता में रही है। बचपन से ही मैं लेखन में रुचि रखता था और सातवीं कक्षा में पढ़ते समय ही मेरी पहली टिप्पणी जयपुर के अखबार 'राष्ट्रदूत' में छपी थी। यह संपादक के नाम एक पत्र था। इसके प्रकाशन से मुझे प्रोत्साहन मिला और मैं अधिक सक्रियता से लिखने लगा- कहानियाँ, कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ आदि। वे अक्सर ही अखबारों और पत्रिकाओं में छपते थे। जब तक मैं स्नातक की पढ़ाई शुरू करता, कई प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में मेरी रचनाएँ छपने लगीं थीं और आकाशवाणी पर भी मेरे लिखे नाटक प्रसारित होने लगे थे। धर्मयुग, सरिता, मुक्ता, पराग, चंपक, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, दैनिक हिंदुस्तान, अमर उजाला आदि में भी मैं छपता था। यह अभिरुचि पढ़ाई खत्म होने के बाद मुझे पत्रकारिता में ले गई और मैंने राजस्थान पत्रिका, जयपुर से अपने पत्रकारीय जीवन का प्रारंभ किया। उसके एक साल बाद ही जनसत्ता में मेरा चयन हो गया और मैं दिल्ली आ गया। फिर कुछ टेलीविजन चैनलों, रेडियो कार्यक्रमों तथा वेब पोर्टलों आदि में काम किया। मेरे लिए यह एक विशिष्ट उपलब्धि थी कि मुझे पत्रकारिता के चारों प्रमुख माध्यमों- प्रिंट, टेलीविजन, रेडियो और वेब पर काम करने का अवसर मिला। इस दौरान बहुत कुछ सीखने को मिला।

पत्रकारिता के कैरियर के दौरान ही आपकी अभिरुचि कंप्यूटर में हिंदी के अनुप्रयोग की ओर बढ़ी, इस परिवर्तन के बारे में कुछ बताएं।

राजस्थान पत्रिका में पत्रकारिता के अपने प्रारंभिक काल में ही मैं कंप्यूटरों की ओर आकर्षित था। कुछ महीनों के लिए मेरा तबादला बीकानेर हो गया था जहाँ पर मैं अखबार के पृष्ठों के डिजाइन भी खुद ही करना पसंद करता था। वहाँ अनेक विज्ञापनों को भी मैंने डिजाइन किया और यह सब कंप्यूटर के जरिए ही होता था। हालाँकि उस जमाने में तकनीक कुछ अलग थी और अखबार के पन्नों को डिजाइन करने के लिए प्लास्टिक जैसी पारदर्शी शीट्स का प्रयोग होता था। हम लोग खुद कंप्यूटरों पर काम नहीं करते थे बल्कि अन्य लोगों से करवाते थे। हम पन्नों पर खबरें लिखते और कॉम्पसेट विभाग के मित्र उन्हें कंप्यूटर पर टाइप किया करते थे। जब मैं जनसत्ता में पहुँचा तब भी कमोबेश यही स्थिति रही। हालाँकि वहाँ पर प्लास्टिक की शीट्स की बजाए मजबूत कागज की शीट्स का प्रयोग होता था जिन्हें ब्रोमाइड कहा जाता था। बाद में जनसत्ता में कंप्यूटरीकरण हो गया। अब हमसे अपेक्षा थी कि हम खुद ही कंप्यूटर पर अपनी खबरें टाइप करें। अनेक साथियों ने इसका विरोध किया लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि मैं जानता था कि दुनिया में बदलाव आ रहा है और यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मैंने कंप्यूटर सीखा और जल्दी ही अखबार से जुड़ी अधिकांश डिजिटल प्रक्रियाओं में प्रवीणता प्राप्त कर ली। तभी मैंने इनस्क्रिप्ट टाइपिंग भी सीखी।

चूंकि उन दिनों आज की तरह से उन्नत कंप्यूटर और संसाधन नहीं थे तो चुनौतियां भी खूब रही होंगी ? कृपया उन चुनौतियों के और उनके समाधान के लिए अपने

प्रयासों के बारे में कुछ बताएं।

उस समय कंप्यूटर आम आदमी की पहुँच में नहीं आया था, विशिष्ट लोगों की बात छोड़ दीजिए। कंप्यूटर सिर्फ संस्थानों के पास ही होता था और उसमें भी हिंदी के सॉफ़्टवेयर या तो होते ही नहीं थे या फिर बहुत महंगे सॉफ़्टवेयर खरीदे जाते थे। लोगों के बीच कौशल का भी अभाव था। हिंदी के सॉफ़्टवेयर थे तो कई लेकिन उनके बीच आपस में कोई तालमेल नहीं था। सभी में अलग-अलग ढंग से टाइप किया जाता था और अलग-अलग फॉन्ट ही उनमें इस्तेमाल होते थे। एक ही फॉन्ट सबके बीच प्रयुक्त हो जाए, ऐसा सामान्य प्रचलन में नहीं था। एक सॉफ़्टवेयर पर टाइपिंग सीखने के बाद आप उसी से बंध जाते थे क्योंकि दूसरे सॉफ़्टवेयर में अलग तरह से हिंदी की टाइपिंग होती थी। इसकी एक वजह तो मानकीकरण का अभाव था और दूसरे सॉफ़्टवेयर निर्माता नहीं चाहते थे कि आप किसी दूसरे सॉफ़्टवेयर के जरिए काम करने में सक्षम हो जाएँ। वे चाहते थे कि आप उनके सॉफ़्टवेयर से ही बंधे रहें। समानता होती तो उनका खेल बिगड़ जाता। उस दौरान सीडैक ने मानकीकरण की दिशा कुछ अच्छा काम किया और इस्की फॉन्ट सामने आए। लीप ऑफ़िस के नाम से सीडैक का सॉफ़्टवेयर सुइट भी आया जो दूसरों से बेहतर था और मानकों पर आधारित था। किंतु यह भी आम प्रयोक्ता की पहुँच में नहीं था। इस निराशाजनक स्थिति को देखते हुए कालांतर में मैंने 'माध्यम' के नाम से एक वर्ड प्रोसेसर विकसित करके इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध करवाया था ताकि हिंदी का हर प्रयोक्ता अपनी भाषा में निर्बाध काम कर सके, बिना एक भी पैसा खर्च किए हुए।

आप अचानक पत्रकारिता से कंप्यूटर तकनीकी के क्षेत्र प्रवेश कर गए, इस परिवर्तन के बारे में कुछ बताएं।

पत्रकारिता में रहते हुए मैं खबरें लिखने-लिखाने की एकरसता से तंग आ गया था। साथ ही साथ पत्रकारिता के आंतरिक माहौल में मुझे बेचैनी होती थी- विशेषकर आंतरिक राजनीति और पक्षपात से। मैं इन प्रवृत्तियों से दूर ही रहना चाहता था। एक टेलीविजन चैनल में कार्य करते हुए मैंने तय किया कि अब बहुत हुआ, किसी अन्य क्षेत्र को आजमाया जाए। आप सोच सकते हैं कि जो व्यक्ति एक पूरे क्षेत्र को ही छोड़ने के लिए तैयार था, वह पत्रकारिता के माहौल से कितना अधिक निराश और हताश रहा होगा। किंतु सवाल था कि कौनसे क्षेत्र में जाऊं? बहुत सारे मंथन के बाद सूचना प्रौद्योगिकी पर ध्यान केंद्रित किया जिसमें मेरी शुरू से रुचि थी और जिसमें संभावनाएँ भी उभर रही थीं। बहरहाल, सूचना प्रौद्योगिकी में मेरी औपचारिक पृष्ठभूमि नहीं थी क्योंकि मैंने विज्ञान में स्नातक और हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधियाँ ली थीं। फिर भी, मैं पत्रकारिता से निकल गया और कंप्यूटर के क्षेत्र में शून्य से पढ़ाई शुरू कर दी। कुछ वर्ष लगाकर एमसीए किया और आईटी के क्षेत्र में आ गया। बाद में मैंने एमबीए भी किया। यहाँ भी कुछ साल संघर्ष के रहे किंतु मूल्यवान अनुभव भी मिला। अनेक छोटी कंपनियों में काम करने के बाद एक इंटरनेट पोर्टल प्रभासाक्षी.कॉम में मुझे मैनेजर (टेक्नॉलॉजी) का काम मिला। चूँकि मैं पहले से पत्रकारिता में अनुभव रखता था सो अपनी काबिलियत का प्रदर्शन करते हुए मैं संपादकीय पद पर आ गया। पोर्टल के संपादकीय तथा तकनीकी दोनों ही क्षेत्रों का प्रमुख मैं ही था। मजे की बात यह है कि पोर्टल का निर्माण भी मैंने ही किया था और ऐसा पोर्टल जिस पर किसी-किसी दिन तो आठ लाख-दस लाख तक दैनिक व्यूज़ हो जाते थे।

इस परिवर्तन के प्रेरणास्रोत कौन रहे हैं?

सच कहूँ तो कोई नहीं। मुझे 'जब वी मेट' फिल्म में करीना कपूर का यह डॉयलॉग याद आ रहा है कि 'बाई गॉड, मैं अपनी फेवरिट खुद हूँ।' मेरे लिए उस दौर की तनावपूर्ण परिस्थितियाँ ही प्रेरक रहीं या फिर मेरी अभिरुचि और जोखिम लेने का जज्बा। एक भी व्यक्ति याद नहीं आता जिसने कहा हो कि तुम पत्रकारिता छोड़कर कंप्यूटर के क्षेत्र में शून्य से शुरूआत करके अच्छा कर रहे हो। हाँ, मेरी पत्नी का साथ रहा। उसने कहा कि जब ठान लिया है तो देखा जाएगा। उसके बिना इतना बड़ा जोखिम ले पाना और कई वर्षों तक बिना किसी ठोस नौकरी के, पढ़ते हुए, जीवन बिता पाना असंभव था। इस घटनाक्रम से इतर यदि मुझसे मेरे प्रेरणा स्रोतों के बारे में पूछा जाए तो महात्मा गांधी तथा कुछ ऐसे व्यक्तित्व जो एक से अधिक क्षेत्रों में प्रतिभा रखते थे और अनेक क्षेत्रों में अपनी छाप छोड़ने में सफल रहे, वे मुझे बहुत प्रभावित करते हैं। उदाहरण के रूप में रवींद्रनाथ ठाकुर जो स्वाधीनता सेनानी, उपन्यासकार,

कथाकार, कवि, संगीतकार, चित्रकार और शिक्षाविद् भी रहे। इसी तरह से लियोनार्दो दा विंची जो एक साथ दार्शनिक, आविष्कारक, वैज्ञानिक और कलाकार थे। मैं उनसे प्रेरणा लेता हूँ और इसीलिए तकनीक, पत्रकारिता, लेखन, संगीत, कविता, शिक्षण, मार्केटिंग आदि विविध क्षेत्रों में सहजता महसूस करता हूँ।

जब भी तकनीकी क्षेत्र में हिंदी की बात की जाती है तब ऐसा दिखाया जाता है कि कंप्यूटर में हिंदी का प्रयोग या तो हो ही नहीं सकता या फिर सीमित संसाधन हैं, इस संबंध में आपकी राय।

यदि आज भी कोई व्यक्ति इस तरह से सोचता है तो वह अपने आसपास हो रहे घटनाक्रम से अनभिज्ञ है क्योंकि अब हिंदी में कंप्यूटर, मोबाइल फोन और इंटरनेट के संदर्भ में कोई बाधा शेष नहीं है। मैंने हिंदी प्रौद्योगिकी की जटिलताओं को विलुप्त होते देखा है! यूनिकोड के आने के बाद तीन-साढ़े तीन दशकों के भीतर हिंदी तकनीकी रूप से अत्यंत समृद्ध हो चुकी है। अब भी कुछ लोग अगर इसका प्रयोग किसी सॉफ़्टवेयर में नहीं कर पाते तो जागरूकता का अभाव, कौशल की कमी या सही उत्पादों तक पहुँच का न होना इसका जिम्मेदार है। पेजमेकर, कोरल ड्रॉ, क्वार्क एक्सप्रेस, फोटोशॉप, इन-डिजाइन आदि में हिंदी का प्रयोग न हो पाने की बात कुछ मित्र करते हैं लेकिन इन सभी में लगभग 15 साल से हिंदी का प्रयोग आसानी से हो रहा है। जो लोग यूनिकोड से पहले के संस्करणों का प्रयोग कर रहे हैं उन्हें ही दिक्कत आती है। आज दुनिया का लगभग हर सॉफ़्टवेयर यूनिकोड का समर्थन करता है और यूनिकोड समर्थित हर सॉफ़्टवेयर में हिंदी में काम करना संभव है- बशर्ते उसे किसी खास भाषा के ही लिए अनुकूलित न किया गया हो। आज हिंदी के लिए कोई भी सॉफ़्टवेयर अलग से खरीदने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यूनिकोड की मदद से तथा माइक्रोसॉफ़्ट, एप्पल, लिनक्स, एंड्रोइड एवं आईओएस जैसे ऑपरेटिंग सिस्टमों में हुए काम की बदौलत एक तरह का समानतापूर्ण वातावरण मौजूद है। सॉफ़्टवेयर समान है, भाषाएँ भले ही अलग-अलग हों। और आपको हिंदी में काम करने के लिए न फॉन्ट ढूंढने की ज़रूरत है तथा न ही टाइपिंग के लिए कोई कीबोर्ड लेआउट तलाशने की क्योंकि आपकी आवश्यकता की सभी सुविधाएँ खुद विंडोज में ही शामिल हैं। बल्कि अब तो डिक्टेशन और हस्तलिपि की पहचान जैसी आधुनिकतम तकनीकें आ गई हैं जिन्होंने ऐसे लोगों के लिए भी काम करना संभव बना दिया है जिन्हें हिंदी में लिखना नहीं आता या टाइपिंग नहीं आती। मैं अक्सर मित्रों से यही आग्रह करता हूँ कि सब कुछ आ चुका है, जनाब अब काम कीजिए!

अक्सर देखा गया है कि हिंदी भाषी आम जन भी जिनको अंग्रेजी की जानकारी नहीं होती वे भी मोबाइल में हिंदी को अंग्रेजी की लिपि में लिखते हैं। इस अभ्यास से कहीं न कहीं हिंदी को नुकसान ही हो रहा है। इस दुष्प्रभाव से हिंदी भाषा को बचाने के लिए आसान तकनीकी समाधान क्या हो सकता है?

डिजिटल हिंदी के लिए पहली चुनौती तो यह है कि लोग हिंदी में टाइप करें। भले ही वे रोमन के जरिए टाइपिंग करते हों या फिर इनस्क्रिप्ट के जरिए। इतना ही नहीं, डिक्टेशन का भी स्वागत है क्योंकि ज्यादा से ज्यादा लोग हिंदी में काम करें यह पहली प्राथमिकता है। इसलिए हिंदी के प्रसार के लिहाज से हर तरीके का स्वागत है। लेकिन अब दूसरी बात पर आते हैं और वह यह कि अगर आप बेहतर, शुद्ध तथा तीव्र ढंग से काम करना चाहते हैं तो हिंदी में टाइपिंग के मानक तरीके को सीखें, यह आपके हित में है। आज हिंदी में मेरी अधिकतम टाइपिंग गति 112 शब्द प्रति मिनट है। अनेक लोग इसके लिए मुझे बधाई देते हैं किंतु मैं उन्हें कहता हूँ कि यदि आप भारतीय भाषाओं के मानक कीबोर्ड लेआउट (इनस्क्रिप्ट) का प्रयोग करते हुए टाइप करेंगे तो आप भी बहुत तेज गति से और बेहद शुद्धता से टाइप करने लगेंगे। तब आप रोमन के जरिए टाइपिंग के झमेले में क्यों पड़ते हैं क्योंकि हिंदी में टाइपिंग का कोई विज्ञान सम्मत तरीका यदि है तो वह इनस्क्रिप्ट ही है। इनस्क्रिप्ट के पक्ष में दूसरी अहम दलील यह है कि आप मानकों का पालन कर

रहे हैं। तीसरी विशिष्टता यह कि आप नैतिक रूप से अपनी भाषा के प्रति उत्तरदायित्वपूर्ण दृष्टिकोण दिखा रहे हैं क्योंकि किसी भी भाषा में काम करने के लिए किसी दूसरी भाषा पर निर्भर क्यों हुआ जाए? जो मित्र हिंदी इनस्क्रिप्ट में टाइपिंग सीखना चाहें तो मेरे द्वारा विकसित किया गया 'स्पर्श' हिंदी टाइपिंग ट्यूटर इंटरनेट से डाउनलोड कर लें जो निःशुल्क है। आपने पूछा कि तकनीकी समाधान क्या हो, तो इनस्क्रिप्ट वही तकनीकी समाधान है। आवश्यकता है इसे लोकप्रिय बनाने की, लोगों के बीच जागरूकता फैलाने की और उन्हें समझाने की कि इसे सीखने में दिए जाने वाले आठ-दस घंटे जीवन भर आपके काम आएंगे। अपनी भाषा के लिए, जिससे हमारी आजीविका है, हम इतना तो कर ही सकते हैं!

अब जब सबकुछ मोबाइल पर आता जा रहा है ऐसी स्थिति में आम जन कंप्यूटर का प्रयोग बहुत कम कर रहे हैं, ऐसी स्थिति में मोबाइल में और अन्य भारतीय भाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग इसके लिए क्या किया जा सकता है और इस दिशा में आपलोग क्या कर रहे हैं?

मोबाइल एक सहायक उपकरण है। वह कभी भी उत्पादकता का मूल उपकरण नहीं हो सकता। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी हवाई अड्डे पर विमानों का संचालन मोबाइल के जरिए किया जा सके? या फिर किसी शेयर बाजार का कामकाज मोबाइल के जरिए नियंत्रित किया जा सके? किसी वैज्ञानिक प्रयोगशाला का संचालन मोबाइल से हो सके? छोटे स्तर पर ऐसा किया जा सकता है किंतु आज भी उत्पादकता का प्रधान उपकरण कंप्यूटर ही है, भले ही वह डेस्कटॉप के रूप में हो या लैपटॉप या टैबलेट के रूप में। मोबाइल ने बहुत मदद की है। उस पर उपलब्ध अनेक एप्लीकेशन हमें अनेक सुविधाएँ देते हैं। मोबाइल हमें चलते-फिरते हुए भी, जब हम कंप्यूटर से दूर हों, अपना काम चला लेने की सुविधा देता है। वह संचार, संवाद और मनोरंजन का सुविधाजनक माध्यम है। लेकिन मोबाइल मोबाइल है और कंप्यूटर कंप्यूटर। जहाँ तक मोबाइल पर उपलब्ध भाषायी सेवाओं का प्रश्न है, उनका विकास निरंतर हो रहा है और अनेक सुविधाएँ तो ऐसी हैं जो पहले मोबाइल पर दिखाई देती हैं तथा उसके कुछ अरसे बाद कंप्यूटर तक पहुँचती हैं। टाइपिंग और ध्वनि प्रसंस्करण (स्पीच प्रोसेसिंग) मोबाइल पर बहुत लोकप्रिय हैं। कंप्यूटर पर प्रयुक्त होने वाले अधिकांश लोकप्रिय सॉफ़्टवेयरों के मोबाइल एप्लीकेशन प्रतिरूप उपलब्ध हैं ही। लोकप्रिय ब्राउज़र, इंटरनेट सर्च, ऑडियो-वीडियो संपादन, सोशल मीडिया, ईपेपर आदि से लेकर वित्तीय प्रौद्योगिकी, सेहत, क्लाउड आदि से जुड़े उपयोगी एप्लीकेशन भी हम मोबाइल पर इस्तेमाल कर सकते हैं। जहाँ तक भारतीय भाषाओं का प्रश्न है, चाहे कंप्यूटर हो या मोबाइल फोन, दोनों पर विकास की स्थिति लगभग समान है। बहरहाल, छोटी स्क्रीन यदि आवागमन में सुविधाजनक है तो उसकी अपनी सीमाएँ भी हैं।

बालेन्दु शर्मा दाधीच राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित सुविख्यात तकनीकविद् और पूर्व संपादक हैं। वर्तमान में वे माइक्रोसॉफ़्ट में 'निदेशक- भारतीय भाषाएँ एवं सुगम्यता' के पद पर कार्यरत हैं।

ऑफिस डेस्क से समाधि तक

सुब्रत अधिकारी

अपने डेस्क से बगल वाले डेस्क पर झांक कर देखा। कुर्सी पर बैठे बाबू बीच बीच में लंबी सांसे ले रहे थे,कभी सिर खुजाते कभी सिर रगड़ते और फिर लंबी सांसे लेने लगते।ऐसा लग रहा था मानो दर्द से उनका सिर फट रहा हो या फिर कोई गहरी बेचैनी उनको खाए जा रही हो। पहले तो मैंने उनकी इन हरकतों को अनदेखा किया, सोचा थोड़ी देर में स्वतः ठीक हो जाएंगे,पर जब उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुई तो मैं उनकी सीट के पास पहुँचा और पूछ बैठा कि दादा माजरा क्या है।

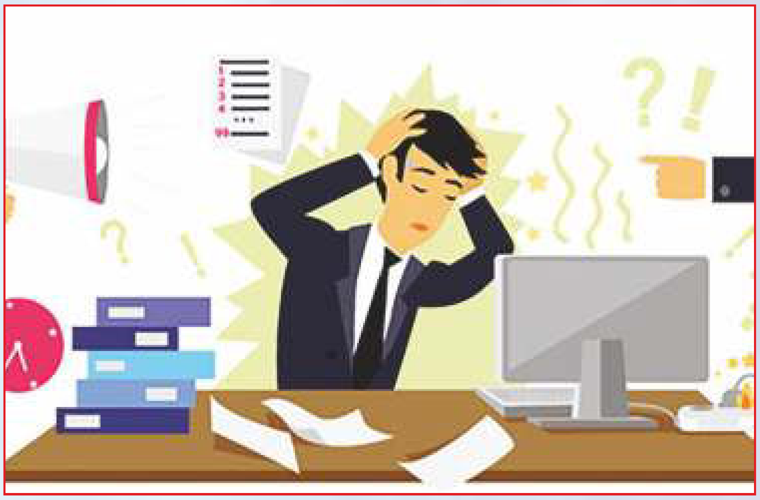

काम के बोझ के कारण कुछ समझ नहीं आ रहा है कि क्या किया जाए। अभी पिछला ही समाप्त नहीं हुआ कि बस दिनों-दिन नए काम का टेंशन सिर पर आ जा रहा है, उन्होंने कहा।

उनकी बात सुनकर मुझे ठाकुर रामकृष्ण परमहंस की बात याद आ गई। वे अक्सर कहा करते थे "कोथाओ सुख नेई रे भाई,ईश्वेरेर चरण छाड़ा", अर्थात ईश्वर के चरण के अलावा कहीं सुख नहीं है। मैने सहकर्मी को समझाया कि क्यों व्यर्थ चिंता करते हैं। यह सब व्यथा तो क्षणिक ही है। आज यह समस्या लग रही है, कल कुछ और नया आ जाएगा। उस समय वह समस्या बड़ी लगने लगेगी और यह छोटी। आप कभी विमान से यात्रा करके देखिए, आपको जमीन पर खड़ा मनुष्य चींटी के समान छोटा दिखेगा। जैसे जैसे आप ऊपर उठते जाएंगे, मनुष्य की स्थिति आसमान में टिमटिमा रहे तारों जैसी भी नहीं रहेगी, अर्थात इस धराधाम पर मनुष्य की औकात तिल भर भी नहीं है फिर भी मनुष्य मिथ्या उछाल मारता रहता है। इसे दूसरी तरह से यदि सोचें तो इस ब्रह्माण्ड को चलाने वाले के पास कितनी चिंता और फाइलें पड़ी होंगी? अनगिनत न!! पर काम के सिलसिले में वह न तो कभी भ्रमित रहता है ना ही तो कभी तनाव में। यदि कभी वह तनाव में आ जाए तो यह श्रृष्टि चक्र छिन्न भिन्न हो जाए,पृथ्वी सूर्य से जा टकराए, अन्य ग्रह आपस की परिधि छोड़ अन्य परिधि की ओर भाग खड़े हों। पर ऐसा कुछ नही होता है, क्योंकि वह कभी तनाव में नहीं आता है, कभी भ्रमित नही होता।

लेकिन हम तुच्छ नौकरी पेशा लोग, फाइलों में मुँह डाले यह सोच लेते हैं कि यही हमारी दुनिया है,इसे ही अपनी परिधि मान लेते हैं और सोते जागते चलते फिरते बस ऑफिस, फाइलें और ऑफिस के कामों की चिंता में उलझे रहते हैं। यदि साफ शब्दों में कहें तो जो क्लार्क है वह क्लार्क का, जो अधिकारी है वह अधिकारी का या अन्य लोग अपनी नौकरी के अनुरूप लबादा ओढ़े रहते हैं और फिर ऐसा ही व्यवहार और अनुभव करने लगते हैं मानो यही लबादा हमारी स्थाई पहचान है। सचमुच हम सब पढ़े लिखे मूर्ख हैं जो अपने आपको भूलकर क्षणिक और छद्म आभासी दुनिया में ऐसे निमग्न हैं जिसका कोई तोड़ नहीं है। यह झूठा लबादा ही हमारे कष्टों और व्याधियों का कारक है। शायद यही कारण है कि पढ़े लिखे, सभ्य और नौकरी पेशा लोग अधिकतर काम उम्र में विविध व्याधियों से पीड़ित होकर अपना अधिकांश समय या तो कार्यालय में बिताते हैं या फिर अस्पतालों या डॉक्टरों के ओपीडी पर। इसके विपरीत सड़क पर घूम रहा भिखारी या पागल कभी समझ ही नहीं पाता कि उसे कोई बीमारी है।

एक से एक महंगे शैंपू और हेयर केयर का प्रयोग, साफ सुथरे घर, एयर प्यूरिफायर और एयर कंडीशंड वाहन में रहने और घूमने वाले अधिकांश लोग आपको गंजेपन के दंश से पीड़ित मिल जाएंगे पर शायद ही सड़क पर घूमने वाले भिखारी या कोई पागल गंजा दिखे, जबकि वे न तो अपने स्वास्थ्य और ना ही तो सफाई के प्रति सजग होते हैं, ना कभी गैस के लिए ओमेज खाते हैं

ना ही पेट साफ करने के लिए कायम चूर्ण का प्रयोग करते हैं। सेहत के इस भेदभाव का मूल कारण क्या है बता पाएगे?

इन सबका मूल कारण है बेफिक्री! यह बेफिक्री एक वर्ग के लोगों में आ नहीं पाती इसलिए वे नाना प्रकार की व्याधियों से पीड़ित हैं जबकि भिखारी और पागल वर्ग के लोगों की संपत्ति बेफिक्री ही है जिसके बल पर हर हाल में वे स्वस्थ और मस्त रहते हैं।

इतना सुनने के बाद सहकर्मी मित्र की ओर से प्रश्न आना स्वाभाविक था। उन्होंने पूछा, 'ये सब बातें, सुनने में तो बड़ी अच्छी लगती हैं पर इनको जीवन में उतारकर चल पाना आखिर संभव कैसे है?'

उनका प्रश्न भी बड़ा ही स्वाभाविक है। हम लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा और ईर्ष्या के जाल में कुछ ऐसे उलझे हुए हैं कि अन्य मार्ग का हमें चेत ही नहीं होता है। यही कारण है कि आजीवन हम इसमें ही उलझे रह जाते हैं और स्वयं को न तो कभी पहचान पाते हैं और ना ही तो अपना हो पाते हैं। यही हमारे समस्त कष्टों का मूल भी है। यदि हमें इन कष्टों से निपटना है तो पहले खुद को जानना होगा कि हम क्या हैं, क्यों हैं और हमारा अंतिम लक्ष्य क्या होना चाहिए।

गीता के एक श्लोक का यदि वर्णन करें तो :

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः॥

इस श्लोक का मूल आशय यह है कि मनुष्य को अपने मन को नियंत्रण में रखने का प्रयास करनी चाहिए। जिस व्यक्ति ने अपने मन पर नियंत्रण कर लिया वह इस ब्रह्मांड के रहस्य को कुछ-कुछ जानने लगेगा और फिर अपने जीवन के उद्देश्य को भी समझने लगेगा।

'लेकिन मन को वश में करना इतना आसान हैं क्या?' मित्र ने पूछा।

कठिन तो है पर असंभव नहीं है। अपने मन पर नियंत्रण करने के लिए सबसे आपको खुद को साधना पड़ेगा, साधना अर्थात नियंत्रण की प्रक्रिया में ढालना होगा खुद को, और इसके लिए शांत और स्थिर होकर एक स्थान पर बैठने से शुरुआत करनी होगी। मन तो है ही चंचल, और जब मन ही चंचल हो तो वह तन को कहाँ शांत बैठने देगा। जैसे ही आप शांत बैठने का परायास करेंगे, आपका मन उसे विरक्त करना शुरू करेगा। नाना प्रकार की बातें याद दिलाएगा, यह प्रयास करेगा कि आप एक स्थिति में अधिक देर तक बैठ न सकें। अब जब आप बैठ ही नहीं पाएंगे तो इसके निग्रह का प्रयास भला कैसे कर पाएंगे। इसके लिए आपको थोड़ा हठ करना ही होगा। हठ अर्थात बैठने की प्रक्रिया पर ध्यान देना होगा अर्थात एक निर्धारित समय में निश्चित योग या आसन में और निश्चित समय के लिए बैठना शुरू करना होगा। इसके बाद दूसरी स्थिति की ओर चलने का प्रयास करना है। मन पर नियंत्रण का प्रयास। चूंकि मन पर नियंत्रण करने का आप जितना प्रयास करेंगे, आपका मन उतना ही बेचैन करेगा। इससे बचने के लिए आपको इसे ढील देना होगा अर्थात, इसे अपनी रौ में बहने देना होगा। यहाँ आप अपने मन से अलग हो जाते हैं, अर्थात केवल मन को देखते रहते हैं कि वह किधर जा रहा है, कितना भाग रहा है। जैसे ही आप मन को ढीला छोड़, उससे खुद को अलग करना प्रारंभ करते हैं, आपका मन भी क्रमशः आपकी ओर ही खींचे आने के लिए बाध्य होने लगता है और धीरे-धीरे आपके नियंत्रण में आने लगता है, शांत होने लगता है।

मन के नियंत्रण में आते ही आप 'विरक्त' अर्थात निर्लिप्त होने लगते हैं,शरीर और आत्मा का संबंध समझने लगते हैं। यही स्थिति आपको समाधि की ओर ले जाती है। समाधि का अर्थ मृत्यु नहीं है। कुछ लोग समाधि को मृत्यु या जीवन का अंत मान लेते हैं पर ऐसा कुछ भी नहीं है। अध्यात्म में समाधि का अर्थ है आप खुद को जानने की राह पर अग्रसर हो उठते है, खुद को जानने लगते हैं। और फिर मन पर नियंत्रण पाते ही आपमें यह भावना आ जाती है कि आप जो कुछ भी कर रहे हैं क्यों कर रहे हैं, आप किस कार्य के लिए जीवन ग्रहण किए हैं और फिलहाल क्या कर रहे हैं!!

मन पर नियंत्रण ही हमें मनुष्य जीवन और हमारे कर्म-धर्म की सही राह दिखाएगा और यही हमें हमारे दफ्तर के काम के बोझ को कैसे हल्का करना है और कैसे द्रुत गति से निस्तारित करना है, हर मार्ग स्वयं ही प्रकट होता जाएगा।

मनुष्य के जीवन में भ्रमण की उपयोगिता

संजय कुमार घोष

भ्रमण से एक तरफ हमारा मन जैसे जीवन की अशान्ति और ग्लानि दूर करता है और मन सतेज हो उठता है, तो दूसरी तरफ हमारा शरीर भी समस्त जड़ता काटकर सतेज होकर प्रफुल्लित हो उठता है यहाँ तक कि विभिन्न रोगों की मुक्ति में भी भ्रमण का विशेष महत्व है।

अजाना को जानने के लिए, अनजान को पहचानने और अपूर्णता को पूर्ण करने में सहायक होता है। अज्ञानता के बदले नए ज्ञान का संचार देता है भ्रमण|

मन की उदारता, हृदय के प्रसार और प्रेम के प्रवाह के लिए भ्रमण नितांत आवश्यक है। किसी भी सीमा में लगातार बंधे रहने के कारण मनुष्य के जीवन में अवसाद आ जाता है, मन में एकरूपता और उदासीनता सी आ जाती है। उस समय मन खुलकर भाग जाना चाहता है, आबोहवा परिवर्तन से मन इस एकरूपता और उदासीनता को दूर लेना चाहता है। खूँटे से बंधे दैनिक जीवन के बदले भ्रमण मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

भ्रमण का एक शिक्षमूलक रूप भी है । इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्कूल-कॉलेज का पठन-पाठन, पत्र-पत्रिका पाठ, भाषण और सभा समिति से मनुष्य ज्ञान अर्जन करता है। एक स्थान का प्राकृतिक सौन्दर्य, उसका ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक महिमा, साहित्यिक प्रेरणा शिक्षा देती है। शिक्षा के अपूर्णता को सम्पूर्ण करने के लिए भ्रमण अति आवश्यकता है।

देश भ्रमण के माध्यम से हमलोग विभिन्न जातियों के मनुष्यों के पास आ सकते रीति-रिवाज, आचार-आचरण, जीवन यात्रा, शिक्षा-दीक्षा, पोशाक, उनके स्थान की आबोहवा और परिवेश से परिचित होते हैं। अनेक दिनों के अनुभव जो उन्होंने अपने जीवन में उतारा है उसे बड़े ही सहज रूप से केवल भ्रमण के अनुभव से हम भी प्राप्त कर सकते हैं। भ्रमण मनुष्य के मन को प्रफुल्लित कर विश्व मानवता के साथ एक सूत्र में बांध देता है। यह देश मेरा, वह देश तुम्हारा है जैसे छुद्र सीमाओं के बाहर विश्व जगत के मानव जाति के साथ हृदय से मिलन हो पाता है।

देश-विदेश भ्रमण केवल मन के आनंद, नैन सुख, व्यक्तिगत जीवन की पुष्टि नहीं है। जाति के मंगल साधन में भी इसकी सार्थकता है। अलग देश की शिल्पकला, व्यवसाय-वाणिज्य, शिक्षा इत्यादि की चर्चा और अपने देश में उनका अनुप्रयोग करके तरक्की का साधन तैयार करना इस भ्रमण का ही प्रतिफल होता है।

भ्रमण केवल मन की प्रसन्नता, नैन सुख, व्यक्तिगत जीवन की तुष्टि नहीं है, मंगल साधन की सार्थकता भी है।

अमेरिका जैसे धनी देशों के छात्र-छात्राओं के जैसे हमारे गरीब देश के छात्र के भ्रमण बाध्यतामूलक न होने पर भी उनके लिए विशेष सुयोग-सुविधा है। यह सुयोग सुविधा बढ़ता ही रहेगा। बंगालियों में देशाटन की प्रवृति काफी है और सर्वविदित भी है। ये लोग हर वर्ष नए स्थान पर जाते ही हैं। गरीब से गरीब लोग भी वर्ष में एक बार अवश्य ही कहीं घूमने जाते हैं और इसके लिए पहले योजनाबद्ध तरीके से धन संचय भी करते रहते हैं। यही हमारे बंगाल की विशेष है। उत्तरोत्तर भ्रमण और भी बढ़ेगी ऐसी आशा है।

मैंने भी वैयक्तिक तौर पर भारत के कई स्थानों का भ्रमण किया है। इससे न केवल मेरे मन को संतुष्टि मिली है बल्कि मेरे ज्ञान

की परिधि भी बढ़ी है। कुछ-एक स्थानों को मैंने अपने कैमरे के लेंस में भी बंद किया है।

तस्वीरें -संजय कुमार घोष के लेन्स से

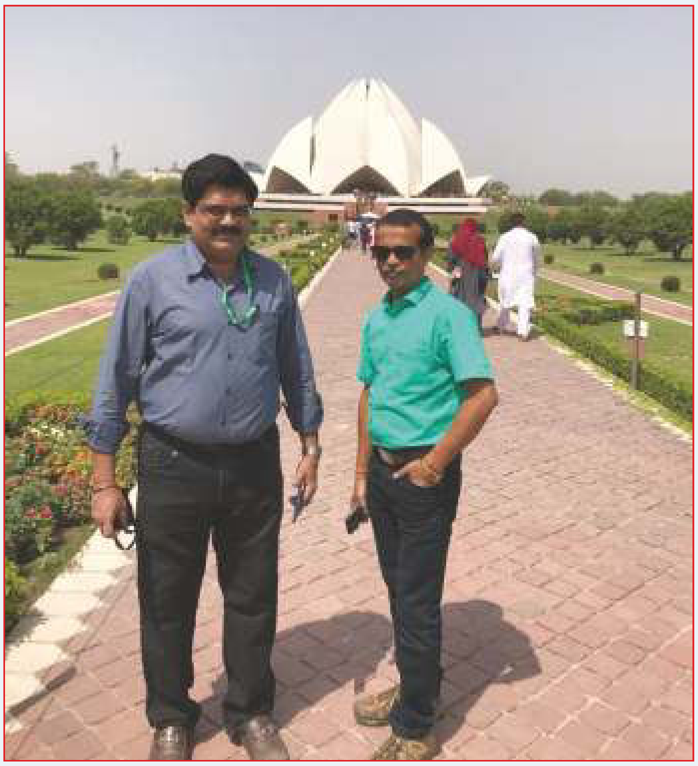

एक बार जरूर जाएँ शिमला और मनाली

मुकेश कुमार

जैसा कि हम सभी जानते हैं शिमला एवं मनाली हमारे देश के सबसे सुंदर शहरों में से एक हैं। जहां शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी है वहीं दूसरी ओर मनाली हिमाचल का एक अन्य प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। आजादी से पहले ब्रिटिश शासन काल के दौरान अंग्रेजों ने अपने ग्रीष्मकालीन शासन के लिए शिमला को अपनी राजधानी बनाया था। यह एक विश्वप्रसिद्ध हिल स्टेशन है। यहाँ सुंदर-सुंदर बर्फ से ढके पहाड़, तालाब, बाग-बगीचे आदि बहुत ही रमणीय है। शिमला का वातावरण बहुत ही शांत है। वहां की बर्फीली पहाड़ियों को देखकर मन बहुत हीं रोमांचित हो जाता है। लोगों की चाहत होती है कि इतनी रमणीय स्थल का अपने जीवन में एक बार अवश्य दर्शन करें और इसका आनन्द उठाएँ। शिमला-मनाली में भारत देश ही नहीं बल्कि विदेशी पर्यटक भी बहुत बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं। मेरी भी शिमला एवं मनाली घूमने की तमन्ना काफी दिनों से थी। मैं अक्सर सोचा करता था कि जब भी समय मिले तो वहाँ छुट्टी बिताने जरूर जाऊंगा। अंततः वह समय भी आ ही गया। अपनी शादी के तुरंत बाद धर्मपत्नीजी के साथ एक नामी ट्रैवल एजेंट के द्वारा शिमला-मनाली भ्रमण की योजना बनाई। जरूरत का सारा सामान पैकिंग की (ज्यादातर गर्म कपड़े आदि) और निकल गए शिमला और मनाली के सैर-सपाटा पर।

अब शुरू होता है हमारा रोमांचक सफर। चूँकि मैं बिहार, नवादा से हूँ तो हमारी ट्रेन की टिकट गया से नई दिल्ली की थी। फरवरी का महीना था। बिहार में भी काफी ठंड थी। हमलोग अगले दिन नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचते हैं। पहुंचते ही कैब वाले भाई गर्म-जोशी से हमारा स्वागत करते हुए सारा सामान लेकर गाड़ी मे रख दिए और निकल पड़े सुहाना सफर पर शिमला की ओर। दिल्ली से हरियाणा, पंचकुला के रास्ते होते हुए जब हम हिमाचल में प्रवेश किए लगभग शाम हो गई थी। क्या अद्भुत दृश्य था। चारों ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियाँ, दुर्गम घाटियां ऊँची-ऊँची चोटियाँ, जलेबी की तरह घुमावदार रास्ते देखकर सच मे मजा आ गया। जब हमलोग सोलन शहर पार कर रहे थें तो घाटी से नीचे शहर ऐसा दिखाई दे रहा था मानो हम आसमान में तारे देख रहे हैं और हाँ तबतक ठंड काफी बढ़ चुकी थी। तापमान 2 डिग्री सेलसियस हो चुका था। रास्ते का सुखद अनुभव लेते हुए अंततः हमलोग शिमला पहुंचे। शिमला के होटल में पहुँचने से पहले ही रास्ते मे सड़क के दोनों किनारों पर बर्फ ही बर्फ देखने को मिला। अब हमलोग शिमला होटल के पास पहुंचते हैं। काफी समय से गाड़ी के अंदर बैठे थे तो ठंड बहुत ज्यादा नहीं लग रही थी। लेकिन ज्यों ही हमलोग गाड़ी से बाहर आए पूरा शरीर ठंड से कांपने लगा। मैंने होटल वाले को बोला भाई जल्दी से मेन गेट खोलो, काफी ठंड लग रही है। होटल कर्मी तुरंत गेट खोलकर हमे अंदर ले गए। सच मे जीवन में पहली बार हमलोगों ने इतना ठंड महसूस किया। उस दिन वहाँ का तापमान -6 डिग्री सेल्सियस था।

अगले दिन हमलोग शिमला में ग्रीन वैली देखने गए। वहाँ पर फूचका (गोलगप्पे) का मजा लेते हुए यादगार लम्हें की तस्वीरें उतारी। ऊसके बाद हमलोग स्नो सूट-बूट पहनकर कुफ़री दर्शन करने गए। कुछ ऊंचाई तक जाने के बाद गाड़ी रूक गई क्योंकि गाड़ी ऊपर तक नहीं जा सकती थी। वहाँ से हमलोगों ने घोड़े पर सवार होकर ऊपर कुफ़री तक सफर तय किया। (उस समय पैदल जाना भी काफी मुश्किल था क्योंकि उस रास्तें में घुटने से ऊपर तक कीचड़ एवं पथरीला संकीर्ण उबड़-खाबड़ रास्ता था)। ऊपर का दृश्य बहुत ही मनोरम था। खुला आसमान और चारों ओर बर्फ ही बर्फ बिल्कुल सफेद चादर की भांति। सभी लोग इस मनोरम दृश्य का भरपूर आनंद ले रहें थे जिसमें से ज्यादातर प्रेमी युगल एवं नौजवान हीं थे। लोग बर्फ का गोला बना-बनाकर एक दूसरे पर फेंक रहें थें। वहाँ हमलोगों ने भी भरपूर आनन्द लिया। याक की भी सवारी की। याकराइडिंग करते हुए बहुत सारी सुंदर तस्वीरें अपने कैमरे में कैद किया। इसके साथ-साथ हमलोगों ने बहुत सारे रोमांचक गतिविधियाँ जैसे- स्नो स्लाइडिंग, जीपलाइनिंग, रोप क्लाईम्बिंग आदि का मजा लिया। उस दिन पूरा समय यही सारे रोमांचक गतिविधियां करने में हीं निकल गई। रात्रि में होटल पहुंचकर स्वादिष्ट भोजन का भरपेट आनन्द लिया। और हाँ वहाँ जब कभी भोजन परोसी जाती थी, सीधे स्टोव से उतारकर

थाली में परोसी जाती थी। उसके बाद तुरंत गरमा-गर्म पेट में। क्योंकि अगर आपने थाली से मुँह तक पहुँचाने में कुछ ही पल की देरी की तो भोजन भी बर्फ के समान ठंडा हो जाता था। अगले सुबह हमलोग नास्ते के बाद शिमला जाकु टेम्पल (बजरंग बली की ऊंची प्रतिमा), लोअर बाजार, लक्कर बाजार, क्राइस्ट चर्च, कालीबाड़ी मंदिर और शिमला का माल रोड देखा। वहाँ कुछ गर्म कपड़े एवं याक वुल की चादर की भी खरीदारी की। अगले दिन हम फिर कुल्लू होते हुए मनाली के लिए निकले। शिमला से पूरी घाटी रास्ता पार करते हुए हमलोग पहले कुल्लू गए। वहाँ जाने के क्रम में लगभग ३ किलोमीटर की औट टनल से गुजरा। यह भी काफी रोमांचकारी था। गुफा से निकलने के बाद एक मातारानी की मंदिर दिखाई दिया। हमलोगों ने वहाँ जाकर प्रसाद ग्रहण किया। वहाँ हवा काफी तेज बह रही थी। थोड़ी देर ठहरकर कुछ समय के बाद फिर सफर शुरू होती है कुल्लू की। वहाँ पहुंचकर कुल्लू शहर का भी भ्रमण किया। वहाँ भी ऊनी वस्त्रों का अच्छा बाजार लगता है। कुल्लू शहर चारों ओर से ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से घिरा है। इसके बीचों-बीच बहती हुई व्यास नदी का दृश्य भी काफी सुंदर एवं मनोरम था। उसके बाद हमलोग मनाली पहुंचे। वहाँ भी होटल में पहुँचने पर हमारा भव्य स्वागत किया गया। उस दिन हमलोगों ने आराम किया फिर अगले दिन हमलोग स्नो सूट पहन कर सोलांग वैली गए। सोलांग वैली पहुँचकर हमने देखा कि लोग काफी मौज-मस्ती कर रहें हैं। हमलोगों ने भी काफी मस्ती की और हाँ उस दिन वहाँ का तापमान -12 डिग्री सेलसियस था। वहाँ हमने स्नो स्कूटर एवं ATV(All Terrain Motorcycle) बाइक का भी आनंद लिया। अपनी सफर को अविस्मरणीय बनाने के लिए हमने बहुत सारी तस्वीरें ली साथ ही विडियोग्राफी भी की। सोलंग वैली में बहुत ज्यादा भीड़ थी। वहाँ हमने काफी नजदीक से बर्फ से ढकी ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों को देखा। उस दिन स्नो फॉल का भी आनंद लिया फिर लोकल साइट सीइंग करते हुए, क्लब हाउस घूमते हुए, नेहरू कुंड (यहाँ पहाड़ों के बीच से पीने योग्य पानी निकलती है) के पास रुका। हमने वहाँ शुद्ध शीतल जल से अपनी प्यास बुझाई और चलते-चलते दो बोतल पानी भरकर रख भी लिया। ड्राइवर भैया का कहना था कि वहाँ का पानी पूर्व प्रधान-मंत्री नेहरू जी पिया करते थे। आगे हमारा रोहतांग दर्रा जाने का भी प्लान था किन्तु उस वक्त पूरी तरह से मार्ग बर्फ से ढका होने के कारण हम लोग जा नहीं सके और वापस होटल लौट आए। उस दिन देर शाम तक मनाली का माल रोड भ्रमण किया एवं माल रोड का देवी मंदिर में दर्शन भी किए।

अगले दिन हमलोग हाडिम्बा मंदिर गए जो उस वक्त आधा बर्फ से ढका था, घटोत्कच मंदिर का भी दर्शन किया। इसके आलवा वहाँ के स्थानीय विशाल रोएँ वाले खरगोश को हाथों में लेकर तस्वीरें खिंचवाई। इसके अलावा हमलोगों ने वहाँ की स्थानीय पहाड़ी परिधान में फोटो शूट करवाया। उसके बाद हमलोगों ने तिबत का मठ, वन विहार मनाली का दर्शन किया साथ ही साथ बहुत सारे लोकल साइट सीइंग भी किया। वहाँ मनाली के लोकल मार्केट में धीमी-धीमी स्नोफाल के बीच मोमोज का लुत्फ उठाया। वाह क्या स्वाद था। शब्दों मे बयाँ करना मुस्किल है। उसके बाद वहाँ के लोकल मार्केट से कुछ ड्राइ फ्रूइट्स की खरीदारी भी की।

एक और मजे की बात साझा करना चाहूँगा। हमलोग वहाँ के स्थानीय लोगों से काफी प्रभावित हुए। वहाँ के लोग काफी सहयोगी, मधुरभाषी एवं मिलनसार हैं। इस तरह एक सप्ताह की हमारी हिमाचल यात्रा काफी सुखद, मनोरम, रोमांचकारी एवं यादगार रही। वह सुखद पल हमेशा के लिए हमारी यादों एवं सुंदर तस्वीरों में कैद हो गई। अगले दिन हम वापस नई दिल्ली के लिए लौट आए। वहाँ से हमारी वापसी की ट्रेन थी।

बैसाखी के सहारे

बिनय कुमार शुक्ल

भारत का संविधान, अपने आप में अद्भुत, अपरिमेय और अतुलनीय संविधान है। एक ऐसा संविधान जिसका पूरे विश्व में कोई सानी नहीं है। जिस देश का संविधान ही इतना अद्भुत हो उस देश के लोग भी तो अद्भुत होंगे ही। हम भारतवासी भी पूरे विश्व में अद्भुत हैं तभी तो हमारी प्रतिभा का डंका पूरे विश्व में बजता है। शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ किसी न किसी रूप में भारतवंशियों का वर्चस्व न हो। अमेरिका हो या इंग्लैंड सबको अपने यहाँ सरकार बनाने के लिए भारतवंशियों को रिझाना ही पड़ता है।

हर प्रकार का नियम कानून चाहे वह रहन सहन की सुविधा के लिए हो, चाकरी-रोजगार के लिए हो, अमन-शानित के लिए हो, सबके लिए कानून इस संविधान के सूत्रों के माध्यम से ही बना है। कहा भी जाता है कि यह संविधान जाति-धर्म से ऊपर है। भारतवासी चाहे किसी धर्म को मानें या न मानें पर संविधान को सर्वोपरि मानते ही हैं, उसकी कही बातों का अनुसरण करते ही है। भारत के संविधान की ही देन है कि हर राज्य की अपनी अधिकृत राजभाषा निर्धारित है और अपनी भाषा के संवर्धन और प्रचार प्रसार से संबंधित उपाय करने के लिए हर राज्य और केंद्र संविधान के अनुरूप बाध्य है। भारत के संविधान के भाग 17 के अध्याय 1 के अनुच्छेद 343-344 में संघ की राजभाषा और राजभाषा से संबंधित समिति की चर्चा है तो अध्याय 2 में अनुच्छेद 345 से लेकर 347 तक प्रादेशिक भाषाओं (राज्य की भाषाओं) से संबंधित प्रावधान हैं। इसके साथ ही राजभाषा अधिनियम 1963 बना फिर इसका संशोधन 1967 में हुआ। अब भाषा है तो पत्राचार के बारे में भी कुछ नियम बनाना आवश्यक होगा ही। इस क्रम में इस अधिनियम की धारा 3, धारा 3(2) और धारा 3(3) पत्राचार से संबंधित प्रावधान दिए गए हैं। अधिनियम के प्रावधानों के सुचारु रूप से संचालन के लिए राजभाषा नियम 1976 बना जिसमें समय समय पर(1987, 2007और 2011 में) संशोधन होता रहा तथा कुछ नए प्रावधान जुडते गए। मूलतः इस संशोधनों का उद्देश्य पत्राचार बढ़ाने और भारत की राजभाषा को प्रतिस्थापित करना है। इसके उपबंधों में सरकारी और गैर सरकारी पत्राचार, हिंदी प्रशिक्षण और अंत में इन समस्त प्रावधानों के अनुपालन की जिम्मेदारी और निरीक्षण के बारे में उपनियम 12 में स्पष्ट रूप से दिशानिर्देश वर्णित है। इसके बाद राष्ट्रपति जी का आदेश, राजभाषा संकल्प आदि। कुल मिलाकर राष्ट्र गूंगा न कहलाये इसके लिए भारत के संविधान में काफी कुछ वर्णित है और हम संविधान में विश्वास करने वाले और संविधान को अपना सबकुछ मानने वाले, सरकारी अधिकारी और कर्मचारी नौकरी में प्रवेश करते ही यह कसम खाते हैं कि संविधान सम्मत हर कार्य करेंगे तथा संविधान के अनुसार ही हमारा आचरण होगा।

वैसे भी भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। हमलोग अपनी रुचि के अनुसार अभिव्यक्ति के लिए अलग-अलग भाषाओं का चयन और प्रयोग कर सकते हैं पर जहाँ तक किसी देश या राज्य के भाषा की बात आती है, यदि उस देश या राज्य की अपनी खुद की कोई भाषा न हो तो वह राष्ट्र या देश गूंगा हो जाता है। हालांकि भाषा की दृष्टि से गूंगापन भी अपने आप में कोई विकृति नहीं है क्योंकि इसके लिए भी एक भाषा(साइन लैंग्वेज) निर्धारित है।

राजभाषा के प्रतिस्थापन, प्रचार-प्रसार के लिए उतने प्रावधानों और व्यक्तिगत रूप से कसम खिलाने के बाद भी यह देखा जाता है कि राजभाषा हिन्दी का विकास सरकारी कार्यालयों में केवल आंकड़ों में ही होता है। आम जनता के लिए बनाए जाने वाले नियम हों या उनका मसौदा हो। रोग-व्याधि से बचाव के उपाय हों या फिर उनके टीकाकरण की बात हो। मंत्रालय से लेकर सरकारी कार्यालयों तक सबकुछ पहले अंग्रेजी में ही तैयार होता है। मजदूरों की भलाई के लिए उनके प्रयोजन का लेबर कोड हो या राशन या अन्य मुद्दे हों, हर मंत्रालय और सरकारी कार्यालय के वेबसाइट पर सबकुछ अंग्रेजी में ही मिलेगा। हालांकि हर मंत्रालय या विभाग या कार्यालय न्यूनतम निर्धारित लक्ष्य के अनुसार अपने कार्यालय के आँकड़े के अनुसार हिंदी में पत्राचार करता ही है और राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अक्षरशः अनुपालन करता है, तब यह स्थिति है कि कार्यालय के मुखपृष्ट पर जारी होने

वाले अधिकांश धारा 3(3) के कागजात केवल अंग्रेजी में ही पाए जाते हैं। यदि इस संबंध में कोई बात पूछ ली जाए तो यह बताया जाता है कि कार्यालय में कोई अनुवादक तैनात नहीं है इसलिए ऐसे कागजात अंग्रेजी में जारी किए गए हैं। बात उनकी भी सही है। भारत के अधिकांश लोगों को केवल अंग्रेजी ही आती है इसलिए वे पहले अंग्रेजी में सोचते हैं फिर अंग्रेजी में पत्र बनाया जाता है उसके बाद यदि कोई अनुवादक कार्यालय में तैनात रहा तो उसका अनुवाद हिंदी में करवा दिया जाता है अन्यथा कौन बोलने वाला है। कसमें तो सभी खाते हैं, खाने के बाद उसे तोड़ते भी हैं, कोई पाप थोड़े ही लगता है। अब नौकरी लेनी थी, करनी थी सो संविधान की कसम खा लिया क्योंकि खाना पड़ता है। ऐसे ही एक प्रबुद्ध हिंदी अधिकारी का आलेख पढ़ रहा था। उन्होंने अपने आलेख में इस बात पर काफी बल दिया था कि यदि सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का संविधान सम्मत कार्यान्वयन सुनिश्चित करवाना है तो वह केवल अनुवाद के माध्यम से ही संभव है। अब चूंकि अधिकारी हैं तो उनकी बात में वजन भी है और मान्य भी है। हालांकि राजभाषा नियम के कतिपय प्रावधान उनकी बातों से इत्तेफाक नहीं रखते क्योंकि धारा 3(1), के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

4(b) के अनुसार केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

4(c) के अनुसार क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

वैसे यह दशा केवल सरकारी कार्यालयों की ही नहीं है। कई बार राह चलते कुछ ऐसी मजेदार बातें दिखती हैं कि तरस भी आता है और विस्मय भी होता है। हाल ही में बांग्ला-हिंदी भाषी मिश्रित जनसंख्या वाले औद्योगिक क्षेत्र से गुजर रहा था जहाँ गिने चुने अंग्रेजी विद्यालय होंगे बाकी तो बांग्ला, हिंदी और ओडिया भाषा के विद्यालय अधिक हैं वहाँ एक राजनीतिक विज्ञापन देखा जो अंग्रेजी में था। शायद विज्ञापन जारी करने वाले को यह भ्रम हो गया हो कि यहाँ के लोग क्षेत्रीय भाषा या हिंदी भाषा न समझते हों, अंग्रेजी ही समझते हों इसलिए विज्ञापन अंग्रेजी में जारी किया गया था।

इन बातों का अर्थ कदापि यह नहीं है कि सरकारी कार्यालयों और कतिपय लोगों की उपेक्षा के कारण राजभाषा हिंदी की प्रगति बाधित हुई हो या धीमी हुई हो।

हिंदी भाषा को यदि हम विभाजित करें तो इसे दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। पहली सरकारी कार्यालयों की हिंदी और दूसरी आम जनता की हिंदी। सरकारी कार्यालयों में एक तरफ जहाँ अंग्रेजी के भारी भरकम बोझ के नीचे हिंदी दबती जा रही है और केवल अनुवाद की बैसाखी के सहारे किसी तरह से लंगड़ाकर चल रही है क्योंकि संवैधानिक कुछ प्रावधान ऐसे हैं जो इसे सहारा दिए जा रहे हैं।

दूसरी ओर आम जानता की हिंदी को यदि देखें तो आजकल विदेशों से भारत में आकर व्यवसाय करने वाली कंपनियाँ अपने ग्राहक बनाने और बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी सीख रही हैं, हिंदी का प्रयोग कर रही हैं। अपने उत्पाद पर हिंदी में भी विवरण छाप रही हैं। सिनेमा के माध्यम से हो या अन्य प्रचार माध्यम से, हिंदी का अनुप्रयोग काफी बढ़ा है। अब तो विदेश से आने वाले नेता और सैलानी भी टूटी-फूटी हिंदी बोलने लगे हैं।

वैसे तो कहा जाता है कि प्रशासन जिस भाषा को प्रश्रय देती है वही भाषा फलती-फूलती है। जिसे प्रशासन छोड़ने लगती है वह धीरे –धीरे धूल धूसरित होने लगती है पर भारतीय भाषाओं के मामले में इसका ठीक उल्टा देखा जा रहा है। जिस अनुपात में राज्य और केंद्र की राजभाषाओं के बदले अंग्रेजी भाषा को प्रशासन द्वारा प्रयोग में लाया जाता है उससे कभी-कभार तो ऐसा प्रतीत होता है कि राजभाषाएँ आने वाले समय में कहीं इतिहास की बात बनकर न रह जाएँ पर मुक्त बाजार ने अब स्थानीय राजभाषाओं को सहारा देना प्रारंभ कर दिया इसके कारण जबतक मुक्त बाजार है, आम जनता में राजभाषा का अंश बना रह जाएगा।

क्या ही अच्छा होता यदि भारत के संविधान में सच्ची आस्था रखने वाले अधिकारी एवं कार्मिक अपने संवैधानिक कसम पूरी करने के लिए दिल से आगे आते और अनुवाद की बैसाखी के बजाय पहले मूल पत्र राजभाषा में लिखा जाता, बाद में उसका अंग्रेजी अनुवाद जारी होता तो राजभाषा हिंदी दो श्रेणियों में विभक्त न होकर एकाकार हो जाती और सही रूप में देश की भाषा होती।

गाँव

रवि कहर

तुम भारत के बड़े शहर हो
मैं छोटा-सा गाँव बिचारा,
अभी तलक हूँ खुद में सिमटा
कल होगा विस्तार तुम्हारा।
सुना है बातों-ही-बातों में
शोला-शबनम जनते हो,
कोई कुछ भी कहे कहावत
विश्व-पटल पर जमते हो।
मैं प्रगति में रूढ़ीवादी
संस्कार का मुझे सहारा।

बुना है तुमने हर मौसम को
लेकिन लगते नहीं क्रूर हो,
मैं इस दुनिया का पिछड़ापन
तुम इस दुनिया का ग़ुरूर हो।
मुझसे सब ले लेते हो
पर चल जाता है मिरा ग़ुज़ारा।

मैं हूँ निपट अनाड़ी अनपढ़
और तुम ज्ञानी कहलाते हो।
राष्ट्र-भक्त हो मुझसे बेहतर
हर मुद्दे पर चिल्लाते हो,
तुम मानव के शुभचिन्तक हो
मैं हूँ परम्परा का मारा।
सच में तुम हो बड़े दयालु
शरण सभीको देते हो,
रोजगार देकर बच्चों को
वरण कष्ट कर लेते हो।
फ़ुटपाथों पर लोग हैं बसते
गाँव में कोई नहीं सहारा।

क्या है मुझमें ज़रा बताओ
लोग रोज ही मरते हैं,
योजनाएँ देते हो नित दिन
पर ग्रहण नहीं ये करते हैं।
ग्रहण इन्हें लग जाते हैं
जैसे हों ये चन्दा-तारा।

तुम नई संस्कृति के पोषक
मैं पुरा सभ्यता का वाहक,
तुम अंग्रेजी को जीते हो
मैं उर्दू-हिन्दी का साधक।
तुम वृद्धों को आश्रम देते!
हरा-भरा मेरा चौबारा।

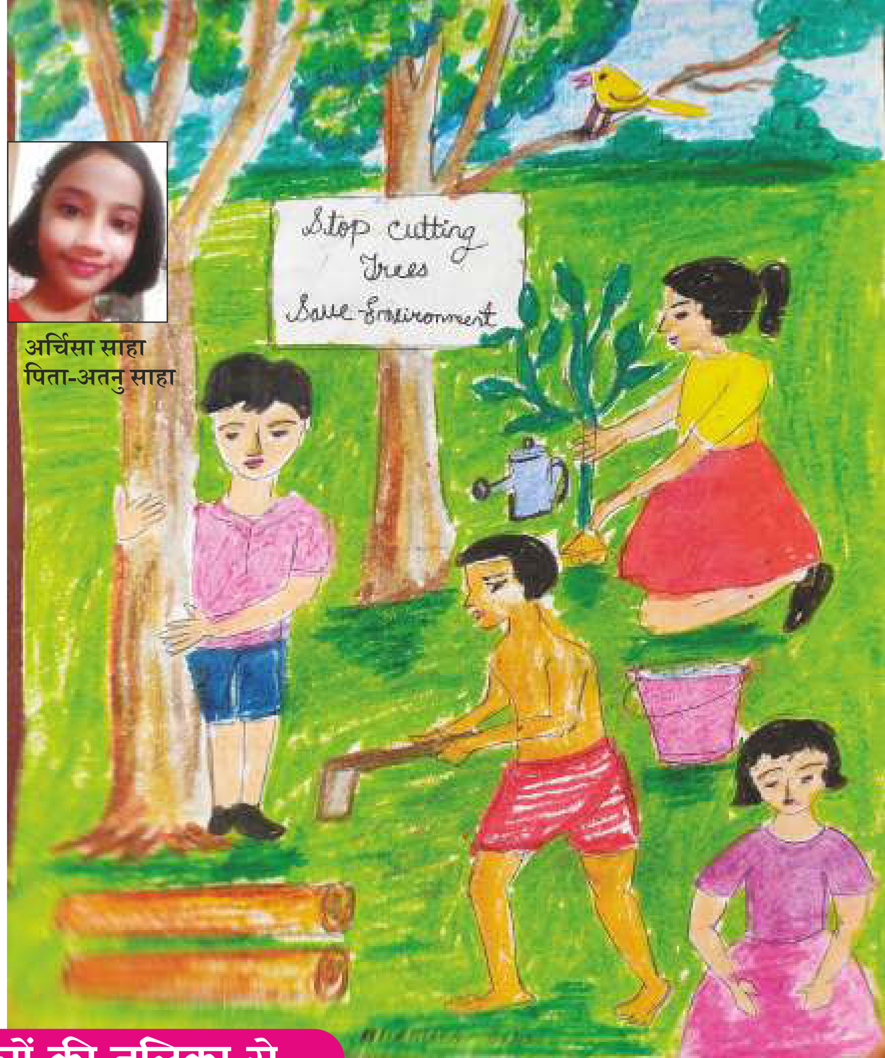

अर्चिसा साहा
पिता-अतनु साहा

बच्चों की तूलिका से

रोहित विश्वास
पिता- बिप्रजीत विश्वास

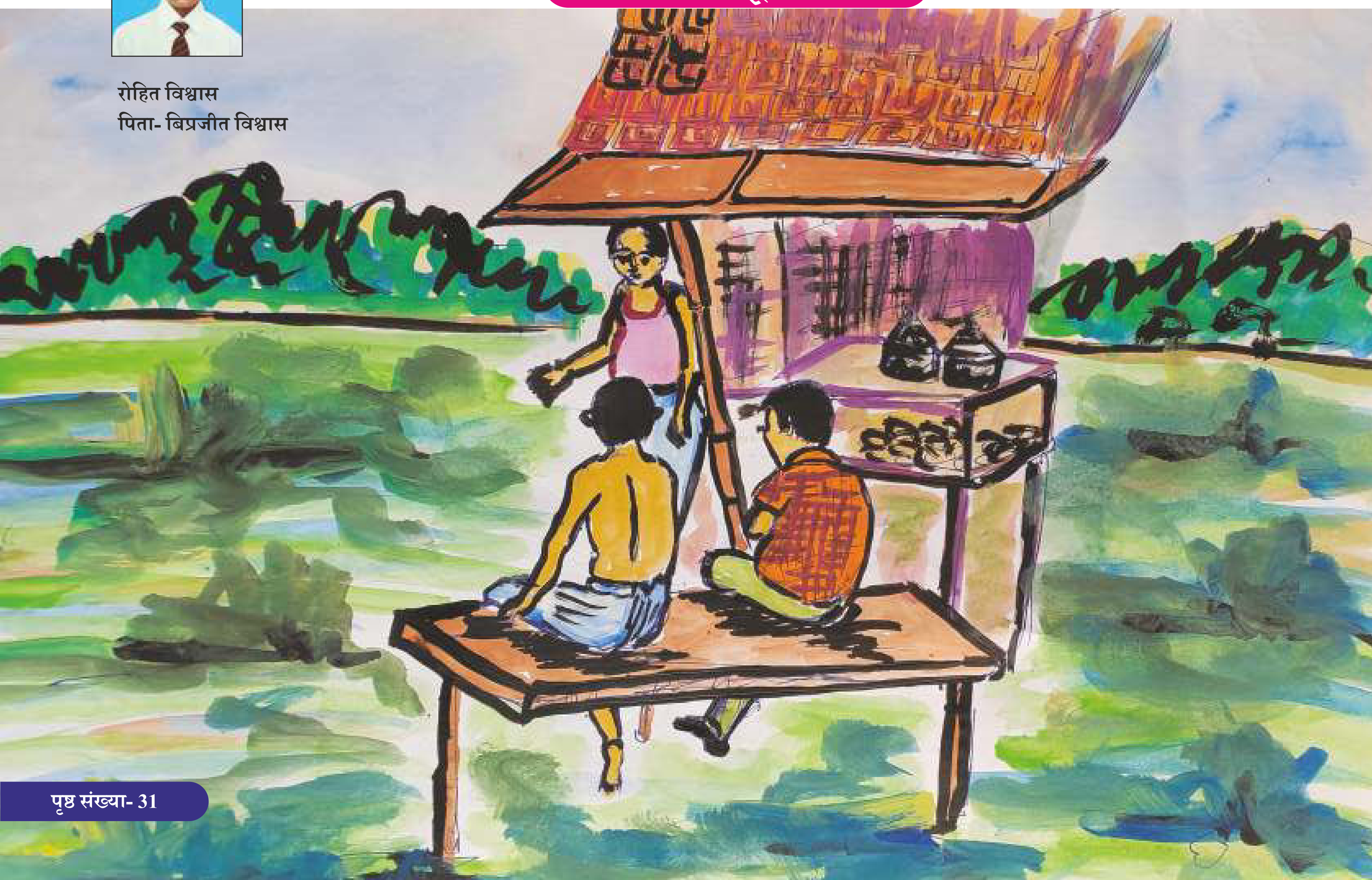

स्वप्नील दास
पुत्र- प्रद्युत दास

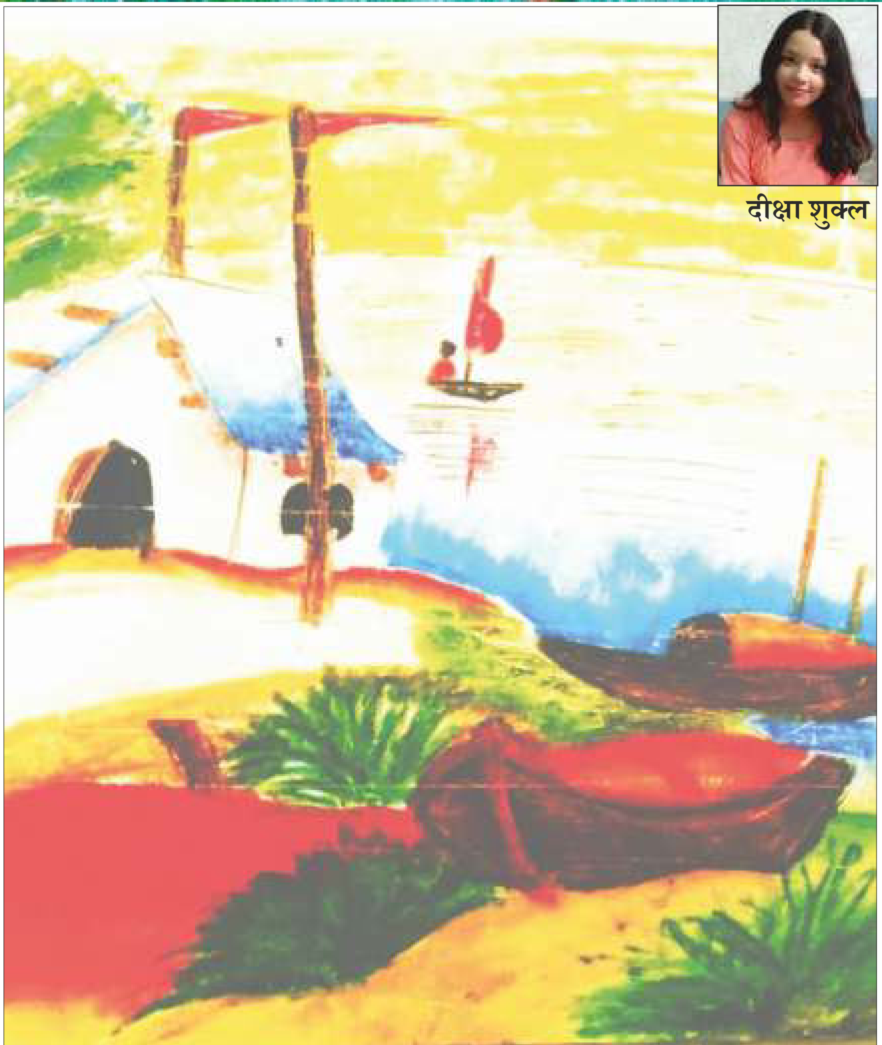

दीक्षा शुक्ल

मनीषा

मनोरंजन क्लब की गतिविधियाँ

रक्तदान समारोह

योग प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह

माँ चली गई, जाते जाते

श्री अर्पण घोष
पुत्र श्री अपूर्व घोष,सा.सु.अ.

सुबह का 10:30 बज रहा था। पूर्व समय के महामारी से आक्रांत महानगरी का एक सुनसान और गंदगी से भरा रास्ता। कुछ दिन पहले तक इस रास्ते पर अस्पताल का कचरा फेंका जाता था। प्रकाश विहीन शहर की इस गली में किसी सभ्य व्यक्ति का पैर कभी नहीं पड़ा और वैसे जरूरत पड़े तो अलग बात है...

इसी गली के अंतिम छोर पर दो जीवों ने आश्रय लिया था, एक माँ और उसका 10 वर्ष का बेटा। अगर सरकारी खातों में ढूंढा जाए तो इनका नाम किसी गृहणी या शरणार्थी / प्रवासा / बेघर के रूप में मिल सकता है।

कोरोना अभी गई नहीं थी, हालांकि महामारी का शेयर वाजार में इसका मूल्यांक निम्नगामी है, हालांकि मौत का आंकड़ा काफी कम हो गया था फिर भी बीमारी पूरी तरह से खत्म नहीं हुई थी।

10 अक्टूबर के आसपास का समय था। दुर्गा पूजा आने वाला था। आफत से विदीर्ण शहर अब कुछ सजना चाहता था, फिर से शरद ऋतु के गहने से भर जाना चाहता था।

अब तक इस बेसहारा लड़के को किसी ने कोई काम नहीं दिया। दरअसल कोरोना दो प्रकार की है, एक जो प्रमाणित है और दूसरी जो कल्पित है। इस लड़की को उसी प्रकार में रखा जा सकता है अरे हां वही कल्पित और कौन सा। किसी संदेह के कारण आज उसे कोई काम नहीं दे रहा है। जो कभी भरपेट भोजन नहीं पाई उसका स्वास्थ्य खराब होना ही है, स्वाभाविक सी बात है, अब जहां भी काम माँगने जाती उसे एक ही बात सुननी पड़ती, "अरे, कोरोना आ रही है,अगर इसे काम पर रखा तो सत्यानाश हो जाएगा।"

उसका पति उसे और इसके बच्चे को बेसहारा छोड़कर चला गया। महामारी के दिन में भी उसका पति गाड़ी चलाता था, लोगों को अस्पताल लेकर जाता था, एक दिन उसने बताया कि उसकी तबीयत खराब सी लग रही है।

एक दिन बीता, दो दिन बीते, तीन दिन......

नहीं, अब और नहीं बीते।

धीरे धीरे सांस की गति कम होने लगी या यूं कहें कि सांस की तकलीफ बढ़ गई। बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रहा था। कमरे के कोने में जल रहे केरोसिन के दिए की लौ की तरह एक दिन फड़फड़ाया और फिर बुझ गया।ऐसा प्रतीत हुआ मानों इनके भाग्य में अंधेरा ही लिखा है।

अंतिम यात्रा के लिए चार कंधे भी न मिले, सरकारी लोग आकर लाश ले गए, ना जाने उसका क्या किया होगा। इसके बाद मकान का किराया ना दे पाने के कारण मकान मालकिन ने भी घर से निकाल दिया। इस निर्जन गली के अलावा कहीं रहने का ठिकाना भी नहीं मिल पाया है।

इस गली के बीच में अकेला एक बच्चा खेल रहा है। उसके हाथ में नूरी पत्थर और पेड़ की सूखी डाली थी। आज सुबह से ही उसकी माँ बीमार सी,उनिंदी और निस्तेज लग रही थी। उसने भी

उसे अधिक तंग नहीं किया।

पर कब तक खेलता, आखिर था तो बच्चा ही। माँ मरणासन्न पड़ी थी। पिछले कुछ दिनों से माँ ही उसका संभाल थी, किसी दुष्ट शनि के छल के कारण पिता शब्द उसकी स्मृति से मिट चुका था, इसीलिए भूख-प्यास लगने पर भी माँ, नींद आने पर भी माँ, बस केवल माँ, और माँ....

माँ को पुकार रहा था। उसके शरीर से लिपटे चादर को हिला रहा था पर कोई आवाज नहीं।

"न जाने माँ कैसे सो रही है! रहने दो, नहीं पुकारूँगा, सोने देते हैं, चलो देखता हूँ, कुछ उपाय करके यदि खाने के लिए कुछ ला सकूँ।"

वह दस वर्ष का बालक, जिसे उसकी माँ अपने सामर्थ्य के अनुसार उसे अच्छे से रख रही थी। हँसते-हँसते हर कष्ट सहकर भी बेटे को अच्छे से रखने का प्रयास करती थी, वही बेटा आज भोजन की तलाश में फुटपाथ पर भटक रहा था। चाय की एक दुकान के पास आकार रुका।

खाली पैर, मैले कुचैले कपड़े, बिना मुखौटे का मुँह(अर्थात मास्क नहीं लगाए था); बस क्या था, लोगों ने कटु वचन,घृणा और कई प्रकार की बातें कहना शुरू कर दिया।

एक बाबू का कुर्ता खींचते हुए उसने कहा, "बाबू कुछ पैसे दे दीजिए, सुबह से मेरी माँ और मैंने कुछ खाया नहीं है। बड़ी जोर से भूख लगी है।"

उसकी इस बात से बाबू लोगों के महत्वपूर्ण सिने चर्चा में व्यवधान पैदा हुआ।

"तो मैं क्या करूँ? ले मुझे खा .. .. ..ले !! जीतने भी अभागे, भिखारी हैं सुबह-सुबह ही चले आते हैं।"

"तेरा नाम क्या है रे?" बाबू के एक अन्य मित्र ने पूछा।

"मुस्ताफ़ा, बाबू।"

"ये लो .... ऊपर से मुसलमान ...."

"उससे क्या हुआ बाबू, क्या हमें भूख नहीं लगती, कष्ट नहीं होता है?"

बापरे, पिद्दी सा बच्चा, बातें कैसी बड़ी-बड़ी, एक थप्पड़ लगाऊँगा, साला, यह ले दस रुपये, चल भाग जा...."

"ठीक है बाबू,वही दीजिए, लाइये ...."

दस रुपये से कुछ रोटी थोड़ी सी तरकारी लेकर माँ के पास गया। माँ अभी सो रही थी।

"माँ, ओ माँ, उठो ना माँ, माँ उठो !!"

कोई आवाज नहीं आई।

"देखो तो खाना ले आया हूँ, उठो तो....!"

"आँखें तो खोलो!! छोड़ो चालों मैं अकेले खा लेता हूँ, तुम्हारा रख दे रहा हूँ, जब इच्छा हो खा लेना।"

इसके बाद खा-पीकर खेलने लगा। काफी देर बाद अचानक याद आया, "क्या बात है, दोपहर होने चला, माँ अबतक उठी क्यों नहीं? इतनी नींद क्यों! चलो देखता हूँ!"

काफी पुकारता रहा लेकिन काम नहीं हुआ,माँ घोर निद्रा में ही रही। अब मुस्ताफ़ा को डर लगने लगी, छोटा बच्चा, रोना शुरू कर दिया,हालांकि उसकी सोती हुई माँ और कुछ कौवों को छोड़कर उसका रोना सुनने वाला कोई नहीं था। उसकी माँ का मुँह अब धीरे-धीरे सफेद पड़ने लगा था।

शाम को नगर निगम की गाड़ी आई। इलाका साफ करने, यह उनका रोज का नियम था। उन्होंने देखा कि एक महिला के पास एक बच्चा बैठा हुआ है।

"क्या बाबू, यहाँ क्या?" हाथ में खैनी रगड़ते हुए उसने मुस्ताफ़ा से पूछा।

"सुबह से माँ कुछ बोल नहीं रही है,कितना पुकार पर सुन ही नहीं रही है, तीन दिन से कुछ खाया भी नहीं,आज घोर निद्रा में सो रही है...."

"वह सब बोलकर कोई लाभ नहीं है, चल निकल ले यहाँ से, इलाका साफ करना है"

"पर जाऊँगा कहाँ, मेरी माँ तो उठ ही नहीं रही है!", मुस्ताफ़ा ने सिसकते हुए कहा।

"कहाँ, देखूँ तो.. ..", जीतू आगे बढ़ आया।

"आरे साला, यह तो कब की मरकर भूत हो गई है, यह अब कहाँ से उठेगी???"

"मेरी माँ मर गई?"

"हाँ, मर गई, काफी पहले, लगता है कि कल रात में मरी होगी, इस लाश को और अधिक रखने से सड़ने लगेगी, हे पोटा इसे गाड़ी में डालने की व्यवस्था करो रे, रास्ते में इसे श्मशान में दे आएंगे।"

अब लगता है कि मुस्ताफ़ा महामारी के विकराल रूप को समझ गया,पिता को तो लील ही गई, अब लगता है कि माँ भी नहीं उठेगी।

"तेरा नाम क्या है रे?" , पँटा ने पूछा.. ..

क्या होगा जानकार, बोल क्या करेगा जानकार,अपना काम कर, वैसे भी सब जंजाल ही है, जीतू झुँझला उठा।

"पर हमलोग तो" मुस्ताफ़ा बोलता रहा .. ..

"तुमलोग क्या हो, क्या हो तुमलोग? जो भी हो, कोई फरक नहीं पड़ता, काम करने दे, हट जा", बीड़ी जलाते हुए जीतू ने कहा।

"हमलोग तो मुसलमान हैं, हमलोगों में तो जलाते नहीं हैं, दफनाते हैं," ऐसा कहने पर भी दस वर्ष का मुस्ताफ़ा, वह मातृहारा वह बालक उठकर खड़ा नहीं हुआ।

अस्ताचल सूर्य के साथ ही उसके जीवन का भी सूर्य धीरे-धीरे अस्त हो चला, माँ चली जा रही है, दूर बहुत दूर, अब दिख भी नहीं रही है।

जीवित रहने के लिए जो भोजन का प्रबंध न कर सकी, मरने के बाद उसका अंतिम संस्कार धर्मानुसार हो पाएगा! अंतिम संस्कार पाने के लिए जो भाग्य चाहिए वह इन मनुष्यों के लिए उपलब्ध नहीं है।

माँ काफी दूर चली गई है।

उस अंधेरी गली में मुस्ताफ़ा चुपचाप बैठा है

उसे भूख लागी है, निगाहें दो रोटी की ओर चली गई; इसे उसने माँ को खाने के लिए दिया था.. ..

चलते चलते माँ चली गई.. ..

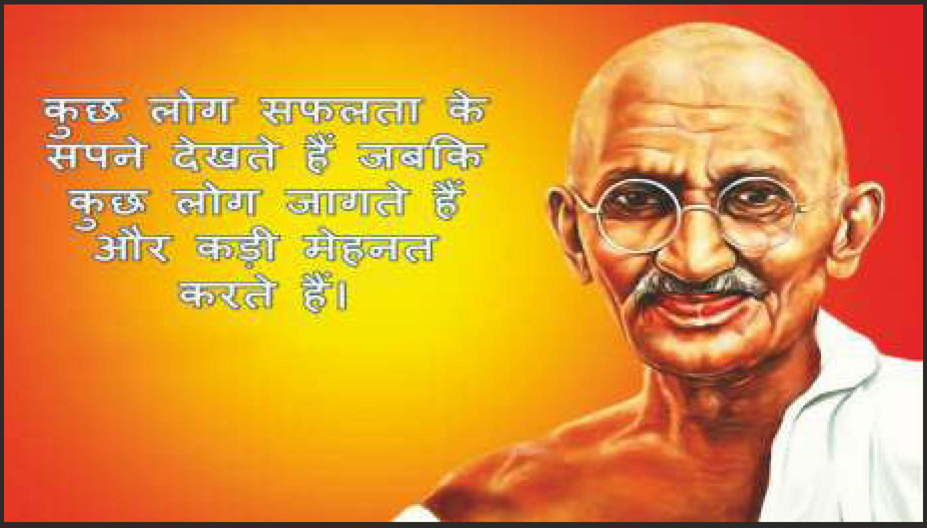

कर बँहिया बाल आपनों, छोड़ पराई आस
(आपबीती तकनीकी कहानी)

बिनय कुमार शुक्ल

पिछले चार-पाँच दिनों से मैं कोई काम नहीं कर पा रहा था। अनुवाद अधिकारी के पद पर कार्यरत होने के नाते सारा काम हिन्दी में ही करना अपेक्षित है। टंकण की कोई औपचारिक प्रशिक्षण कभी ली नहीं, शुरू से ही फोनेटिक की बोर्ड में हिन्दी टंकण का कार्य करता आ रहा हूँ, लिहाजा इन्स्क्रिप्ट में कभी प्रयास की भी नहीं । पर आज यह कमी बड़ी खल रही थी। दस दिन पहले कार्यालय के कंप्यूटर में न जाने क्यों और कैसे इनबिल्ट फोनेटिक की-बोर्ड धराशायी हो गया था। और धराशायी भी कुछ यूँ हुआ कि कहते भी शर्म आती थी। जैसे किसी कला की स्याही खत्म हो जाए और उससे आप कागज पर लिखना शुरू करें तो लिख भले ही डालेंगे पर जबतक कलम की स्याही रंग न हो आपका लिखा हुआ अक्षर दिखेगा ही नहीं, वही हाल मेरे कंप्यूटर में हो रहा था । मैं लिखने के लिए की बोर्ड के अक्षर तो दबा रहा था, पर बिना स्याही वाले कलम के जैसे अक्षर विलुप्त हो जा रहे थे । हमारे आईटी विशेषज्ञ भी यह चमत्कार देखकर हैरान थे पर वे भी कुछ नहीं कर पाए और अंततः उन्होंने कंप्यूटर फॉर्मेट करने की सलाह दी। मरता क्या न करता। मैंने भी बड़े बेमन से उनकी बात मान ली और मेरे कंप्यूटर पर फॉर्मेट प्रक्रिया की आरी चल पड़ी। विशेषज्ञ अपनी विद्वता पर फूले नहीं समय रहे थे। आखिर उन्होंने बड़े परिश्रम से मेरे कंप्यूटर को फॉर्मेट जो किया था ! फॉर्मेट करने के बाद उन्होंने मुझे मेरा कंप्यूटर सौंप दिया और कहा, 'हमें हिंदी सॉफ्टवेयर की जानकारी नहीं है और आप तो एक्सपर्ट हैं, अतः अब आगे की प्रक्रिया आप कर लें।'

जब कोई विशेषज्ञ आपकी तारीफ कर रहा हो तो आप भी बड़े खिल-खिल उठते हैं और अज्ञान के अहंकार सा आपके मन में भी अहंकार के बुलबुले उठने लगते हैं, मेरे साथ भी यही हुआ। जानता तो कुछ भी नहीं, पर ढपोर शंख की तरह बाते बड़ी-बड़ी करता था, खुद को बड़ा विशेषज्ञ मान बैठा था। कहा भी जाता है कि अहंकार रावण का न रहा तो फिर मैं किस खेत की मूली हूँ। मेरे कंप्यूटर ने मुझे भी मेरी औकात दिखा दी।

चूंकि विंडोज 10 वाले कंप्यूटर में लैंग्वेज पैक पहले से ही मौजूद रहता है, आपको केवल सक्रिय ही करना होता है। प्रक्रिया तो पता ही था। मैंने लैंग्वेज पैक सक्रिय कर लिया और उसमें इच्छानुसार हिन्दी फोनेटिक की बोर्ड भी सक्रिय कर ली और अब टंकण करने बैठा। पर यह क्या!! इस बार तो और भी चमत्कार हो गया। मानो मेरा कंप्यूटर हठ कर बैठा था कि आज तो अहंकार तोड़ना ही है । इस बार एक और नई समस्या आन पड़ी। इस बार खाली कलम की स्याही जैसा कुछ नहीं हुआ। टंकण भी बराबर हुआ पर बस फॉन्ट अंग्रेजी के ही आते रहे । अर्थात फोनेटिक हिंदी की बोर्ड का चयन करने के बाद भी फॉन्ट हिंदी के न आकर अंग्रेजी के ही आ रहे थे । कंप्यूटर भी जैसे ठान चुका था कि सुधरना नहीं है, सुधारना है। जितना ज्ञान है उसके अनुसार मैंने हर संभव प्रयास कर लिया पर फॉन्ट हिंदी में परिवर्तित नहीं हुए।

मैं भी भला कहाँ मानने वाला था। मैंने 'तू नहीं तो कोई और सही' कहते हुए, भाषा इंडिया डॉट कॉम से माइक्रोसॉफ्ट इंडिक

की बोर्ड हिंदी एसकेडी वर्जन डाउनलोड कर लिया और अपना काम शुरू कर दिया। इसमें हिंदी में टंकण होने लगी। मैं मन ही मन बड़ा खुश हुआ मानों एक और जंग जीत ली हो। पर..

मेरी यह खुशी मेरे कंप्यूटर को कतई नहीं भाया और तीन चार दिन पहले इस की बोर्ड का भी इनबिल्ट की बोर्ड जैसा हाल हुआ, यह भी बिना स्याही वाली कलम की भांति वार्ताव करने लगा। लाख मिन्नते की, प्रयास किया पर सब असफल रहा। बड़े वाले कंप्यूटर विशेषज्ञ सॉफ्टवेयर का तोड़ ढूँढने के नाम पर तीन दिनों से छुट्टी पर हैं। उनके सहकर्मी से बात की तो वे रोज सुबह करने की बात कहकर पीछा छुड़ा लेते थे और सुबह से शाम तक ऊपर वाले माले के कंप्यूटरों की मरम्मत करते रहते थे। तीन चार दिन बीत गए पर कोई समाधान न निकला। अब खुद को ही खराब लगने लगा था बेकार बैठा रहना, ऐसा दुख जिसका निवारण करने वाला कोई न था। सब यह कहकर निकल लेते कि आपको तो सब आता है, प्रयास कीजिए हो जाएगा। मैं मुंह बनाए बस देखता रह जाता था।

अंत में हार मानकर मैंने अपना दुखड़ा कुछ व्हाट्सअप समूहों में साझा किया कि शायद कोई कुछ सहायता कर दे। एकअध मंचों से सलाह आई पर कुछ भी कारगर न रहा। अंत में मुझे आदरणीय अग्रवाल साहब की याद आई। श्री ओपी अग्रवाल जी भारतीय रिजर्व बैंक से अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हैं तथा कंप्यूटर का अच्छा-खासा ज्ञान रखते हैं। व्हाट्सएप्प और टेलीग्राम चैनलों पर उनके तकनीकी सहयोग के समूह हैं,जिनमें या भी जुड़ सकते हैं और अपनी समस्या का निदान पूछ सकते हैं। उनसे मैंने अपनी समस्या साझा की।

उन्होंने मेरी समस्या का गहन अध्ययन करके मुझे कंप्यूटर के सी ड्राइव में यूजर वाले भाग में जाकर वहाँ रोमिंग डाटा में जाकर फिर टेम्पलेट और वर्ड में घुसकर normal.dotm फ़ाइल डिलीट करके देखने की सलाह दी। इसके अलावा उनकी सलाह के अनुसार विंडोज अपडेट करने के साथ ही कुछ और भी उपाय किया गया पर ये सारे उपाय भी काम न आए। मैं भी अब हताश होने लगा था। थोड़ी देर के लिए कंप्यूटर को छोड़कर अन्य कार्य में व्यस्त हो गया। लगभग आधे घंटे बाद फिर से अग्रवाल साहब का फोन आया और उन्होंने सलाह दी कि एक बार एडमिन की आईडी वाले हिस्से में लॉगिन करके उसमें हिंदी फ़ोनेटिक में टंकण करके देखूँ, उसमें क्या होता है। उनकी बात मानकर मैंने एडमिन पैनल से लॉगिन कर नया डॉक्युमेंट खोला और टंकण करने का प्रयास प्रारंभ किया। पर यह क्या, इसमें तो हिंदी का लैंग्वेज पैक तो इंस्टाल ही नहीं था। फिर आनन-फानन में हिंदी लैंग्वेज पैक इंस्टाल किया और फिर टाइप करके देखा। अब तो मानो चमत्कार हो गया। हिंदी में टंकण होने लगा। सहसा मुझे याद आया कि कुछ चीजें जबतक एडमिन पैनल में सक्रिय नहीं की जाती है, दूसरे पैनल में काम नहीं करता। इस बार टंकण सक्रिय होते ही, इस आईडी के वर्ड डॉक्युमेंट में हिंदी में टंकण होने लगी। अब ऐड्मिन पैनल से निकलकर यूजर पैनल में प्रवेश किया और उसमें मैंने हिंदी में टंकण करने का प्रयास किया। यह क्या!! अब तो मानो चमत्कार हो गया हो। हिंदी फ़ोनेटिक की बोर्ड से टंकण होने लगा पूर्ववत। अब जाकर जान में जान आई। लगा जैसे मेरे कंप्यूटर बाबा ने गलतियों को क्षमा कर दिया और अब सही ढंग से काम करने लगे। मैंने आदरणीय अग्रवाल साहब को भी धन्यवाद दिया और अपने काम पर लग गया।

हो सकता है कि ऐसा ही कोई वाकया आपके साथ भी हो जाए। यदि कभी ऐसा हो ही जाए तो घबड़ाएँ नहीं। अपने कंप्यूटर के एडमिन पैनल में लॉगिन करके पहले सॉफ्टवेयर सब अपडेट करें और एडमिन पैनल से उसे सुधार करने का प्रयास करें। एक बार एडमिन पैनल से समस्या का हल हो गया तो फिर यूजर पैनल में सारी समस्या स्वतः ही हल हो जाएगी।

बाधाएँ कब रोक सकीं हैं आगे बढ़ने वालों को

श्री रवि कहर जी दृष्टि दिव्यांग है और सामान्य कॉलेज में पढ़ कर स्नातक किये है।
फिलहाल सरकारी कार्यालय में कार्यरत है और कंप्यूटर और मोबाइल आम व्यक्ति जैसे चला लेते है

-बिनय कुमार शुक्ल

मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहीं लिखा है—

“जितने कष्ट-संकटों में है
जिनका जीवन-सुमन खिला,
गौरव-ग्रंथ उन्हें उतना ही
यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला।”

इतने लंबे शीर्षक को देखकर आप के मन में एक हलचल हुई होगी, जिज्ञासा उत्पन्न हुई होगी कि आखिर मैंने यह क्या लिख दिया, किंतु आज मैं जिस विषय पर बात करने जा रहा हूँ; उस विषय के लिए मुझे यही, और यही एक मात्र उपयुक्त शीर्षक लगा। मैं आज बात करने जा रहा हूँ श्री रवि कहर जी से, जो मूलतः उत्तर प्रदेश महोबा के रहने वाले हैं, उनका वर्तमान निवास दिल्ली है और इन दिनों इनकी नियुक्ति कर्मचारी राज्य बीमा निगम [कलकत्ता] में हुई है। श्री रवि कहर जी दृष्टि-दिव्यांग व्यक्ति हैं, जो हिंदी में कविता, कहानी एवं नाटक लिखते हैं, साथ ही ये मोबाइल तथा कम्प्यूटर के माध्यम से लगभग वे सभी कार्य कर लेते हैं, जो आप और मैं कर सकते हैं। आज हम इनसे जानेंगे कि इस स्तर तक पहुँचने के लिए इन्होंने क्या-क्या संकट झेलें हैं या किन विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए यहाँ तक पहुँचे हैं। हमारा यह साक्षात्कार सब के लिए एक प्रेरक प्रसंग सिद्ध होगा। आइये आरंभ करते हैं:--

मैं : रवि जी कृपया अपने बचपन एवं परिवार के विषय में कुछ बताइए।

रवि : सर्वप्रथम तो आप सहित सभी पाठकों को मेरा सादर प्रणाम नमस्कार तथा हृदय की अथाह गहराइयों से स्नेहवंदन! मैं मूलतः उत्तर प्रदेश के महोबा जिले के कबरअई ग्राम से हूँ और बड़े भाई साहब के कारण हमारा परिवार दिल्ली आया था। मैं एक बेहद ग़रीब परिवार से हूँ, जहाँ हर चीज़ के लिए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता था। मैंने अपने पिताश्री सहित अपनी माताश्री को घरों में वेतन पर काम करते हुए देखा है। उन्हें मासिक वेतन 300 रुपये मिला करता था। हमारे परिवार ने जीवन में एक दौर ऐसा भी गुज़ारा है, जब रोटी के साथ कभी-कभी दाल-सब्जी नहीं होती थी। जब कभी ऐसा होता था, तब हम सिलबट्टे पर बँटी हुई लहसुन-प्याज की चटनी अथवा पानी में नमक-लहसुन घोलकर रोटी खा लिया करते थे। हमारे पास इतने भी पैसे नहीं हो पाते थे कि 2-4 जोड़ी नए कपड़े खरीदकर पहन पाते, माताश्री जहाँ काम करती थी, वहाँ से कभी-कभी अच्छे कपड़े मिल जाते थे, जिन्हें पहनकर हम बहुत ख़ुश होते थे। आज जब मैं उन दिनों को याद करता हूँ, तब हृदय रोमांच से भर उठता है। उस ग़रीबी में भी बहुत ख़ुश रहा करते थे हम सभी। माता-पिता काम पर चले जाते थे, मैं और मेरे मंझले भाई साहब गिल्ली-डंडा, तीर-कमान, गुलेल, रस्सी वाला लट्टू और कंचे आदि खेला करते थे।

मैं : थोड़ा-सा आप को रोक कर पूछना चाहता हूँ कि क्या आप

जन्म से ही दृष्टि-दिव्यांग हैं या बाद में किन्हीं अन्य कारणों से ऐसे हुए हैं?

रवि : जी, मैं जन्म से दृष्टि-दिव्यांग नहीं हूँ, बचपन में मुझे आप की ही भाँति दिखाई देता था, किंतु लगभग 3 वर्ष की आयु में सफेद मोतियाबिन्द और उसी दौरान छोटी चेचक से पीड़ित हो गया था। इन दोनों बीमारियों के कारण मेरे आँखों की रोशनी चली गई। बाद में परिवार काम के लिए नोएडा सेक्टर चालीस में एक सिक्ख परिवार के यहाँ रहने लगा। वहाँ सरदार जी ने मेरी आँखों का ऑपरेशन करवाया। इस ऑपरेशन का सारा खर्चा उन्होंने ही उठाया। ऑपरेशन के बाद मुझे काफी दिखने भी लगा था। फिर कुछ वर्षों के पश्चात विद्यालय में खेलते समय सर पर चोट लग जाने से अत्यधिक खून बह जाने के कारण मिली हुई रोशनी भी जाती रही।

मैं : विचित्र किस्मत का खेल भी बड़ा है। जानकर बेहद दुख हुआ। अब आप हमें अपनी शिक्षा-दीक्षा के विषय में बताइए।

रवि : जी, जो हुआ, अच्छा ही हुआ। मुझे दिखता होता, तो शायद मैं इतना पढ़-लिख न पाता और शायद यहाँ तक भी न पहुँच पाता। मैं दृष्टि-दिव्यांग हूँ, मुझे कोई खेद नहीं है, अपितु मैं इस स्थिति के लिए भी ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूँ। मेरी शिक्षा सन् 1999 में नर्सरी कक्षा से आरंभ हुई। मैं लाल बहादुर शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली 110003 पर स्थित जे.पी.एम.सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल फ़ॉर द ब्लाइंड में पढ़ा, जहाँ सभी विद्यार्थी दृष्टि-दिव्यांग थे तथा शिक्षक-शिक्षिकाएं दृष्टिवान एवं दृष्टि-दिव्यांग अर्थात् दोनों तरह के थे। इसे ब्लाइंड रिलीफ़ असोशिएशन नामक निजी संस्था तथा सरकार के सहयोग से चलाया जाता है। मेरे मन में आरंभ से ही यह बात थी कि मुझे कुछ अलग करना है और माता-पिता का नाम रोशन करना है। दरअसल, मैं अपनी माताश्री से बचपन में एक गाना बहुत सुना करता था, "तुझे सूरज कहूँ या चंदा; तुझे दीप कहूँ या तारा, मेरा नाम करेगा रोशन; जग में मेरा राजदुलारा।" बाद में यह मेरा उद्देश्य बन गया और मैं पूर्ण तल्लीनता के साथ कक्षा में सब कुछ याद करने लगा। मैं कक्षा में अक्सर प्रथम स्थान पर रहा तथा बाद में विद्यालय के प्रमुख विद्यार्थियों में भी गिना जाने लगा। कक्षा 7 से मैंने कविताएं लिखना आरंभ किया तथा कक्षा 8 से नाटक और कहानी। हालाँकि अभी कोई किताब नहीं छपी है, किंतु कुछ वर्षों में छप जाएगी। मैं कक्षा में प्रथम स्थान पाने के अतिरिक्त स्वरचित कविता-पाठ, भाषण, वादविवाद, एकल श्लोक, शतरंज तथा लेखन-पठन प्रतियोगिताओं में भी प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करता रहा हूँ।

मैं : अच्छा यह बताइए कि आप लिखते-पढ़ते किस तरह से रहे हैं?

रवि : मेरी विद्यालयी शिक्षा ब्रेल लिपि में हुई। ब्रेल लिपि बिंदुओं पर आधारित है, जिसे अंगुलियों से छूकर पढ़ा जाता है। दरअसल, जैसे आप दृष्टिवान जन अक्षरों को नेत्रों से देखकर पढ़ते हैं, ठीक उसी तरह हम दृष्टि-दिव्यांग जन उन्हीं अक्षरों को ब्रेल के माध्यम से छूकर पढ़ते हैं। ब्रेल लिपि में सामान्य वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को एक निश्चित ब्रेल नंबर प्रदान किया गया है, जिसे पहले अक्षरों के साथ याद करना होता है तथा फिर उन्हें छूकर पहचानना सीखना पड़ता है एवं तत्पश्चात उन्हीं अक्षरों को स्लेट पर लिखकर पहचानना भी होता है। विद्यालयी शिक्षा ब्रेल की किताबों से ही पूर्ण हुई तथा महाविद्यालयी शिक्षा ऑडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से। मैं विद्यालय में कार्यक्रमों तथा वार्षिकोत्सव का मंच-संचालन भी किया करता था तथा कक्षा 9 में मुझे कवि सम्मेलन में प्रथम बार कविता-पाठ करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ था।

मैं : वाह! आप के विषय में इतना कुछ जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है और मुझे अपना शीर्षक भी एकदम सार्थक लग रहा है। अब आप अपने महाविद्यालयी काल के विषय में बताइ। कैसे रहे आप के अनुभव?

रवि : सन् 2012 में कक्षा 12वीं पास करने के पश्चात यह परेशानी थी कि यूनिवर्सिटी में कैसे दाखिला होगा, फ़ीस के लिए पैसे कहाँ से आएंगे और रहने का ठिकाना कहाँ होगा? दिन गुज़रे; समय बीता और 12वीं का परीक्षा-परिणाम भी आ गया। मुझे अपेक्षा से कम अंक प्राप्त हुए, जिन्हें मैंने साथ बिठाकर पढ़ाया-समझाया था, उनके कुछ विषयों में मुझसे अधिक अंक आए। हम सब ने जून की गर्मी में भटकना आरंभ कर दिया और जो भी फ़ॉर्म भरने की प्रक्रियाएं थीं, उन्हें पूर्ण किया। पहले मुझे दिल्ली यूनिवर्सिटी का श्री वेंकटेश्वर कॉलेज मिला, जिसकी फ़ीस भी अधिक थी और वह दूर भी था। मैंने रिस्क लेते हुए उसे छोड़ दिया। फिर मुझे जाकिर हुसैन कॉलेज मिला, उसे भी मैंने कुछ समस्याओं के कारण छोड़ दिया। कुछ दिनों पश्चात मुझे पता चला कि हिंदु कॉलेज में हिंदी ऑनर्स में 1 सीट रिक्त है और मुझे जाकर प्रयास करना चाहिए। मैं वहाँ गया, हिंदी की प्राचार्या जी ने मेरा साक्षात्कार भी लिया, किंतु

अंत में उन्होंने पूछा, "बेटा, आप के हिंदी में नंबर कितने हैं?" मैंने बताया, "जी 73 हैं।" तब उन्होंने कहा, "सॉरी बेटा, यहां तो 75 पर भर्ती है, आप इसके लिए योग्य नहीं हैं।" मुझे बड़ा दुख हुआ, क्योंकि मैंने आधे घंटे तक सभी प्रश्नों के सभी उत्तर बिल्कुल ठीक दिये थे और फिर वह कॉलेज यूनिवर्सिटी का एक मुख्य कॉलेज भी था और आज भी है। कुछ दिनों में मुझे फिर पता चला कि हिंदु कॉलेज में बी.ए. प्रोग्राम में 1 सीट रिक्त हुई है, मैंने प्रयास किया और मुझे भर्ती के लिए पर्ची प्राप्त हो गई। अब समस्या थी कि फ़ीस के 900 रुपये कहाँ से आएं, क्योंकि घर से प्राप्त रुपये मैंने आने-जाने में खर्च कर दिये थे तथा प्रतियोगिताओं में प्राप्त राशि भविष्य के लिए कभी सुरक्षित नहीं की थी। तब मैंने अपने विद्यालय के सीनियर आदरणीय हरीश गुलाटी सर से अपनी समस्या बताई और उन्होंने मेरी सहायता की. उसके पश्चात मैंने हिंदु कॉलेज में प्रवेश लिया। मेरा कॉलेज समय भी बहुत संघर्षों से भरा रहा, क्योंकि आने-जाने में बहुत समय लगता था तथा घंटों बस की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी । कई बार तो खाने के लिए अधिक रुपये न होने के कारण बस चाय–मट्ठी से ही काम चलाना पड़ता था। हाँ, कॉलेज में सहपाठियों का अच्छा सहयोग रहा, सभी प्राचार्य-प्रचार्याओं की भी पूर्ण सहायता मिली। कुल मिलाकर वे 3 वर्ष हँसते-हँसते गुज़र ही गए।

मैं : क्या बात है रवि जी! आप के विषय में जानकर तो सच में अत्यंत आनन्द का अनुभव हो रहा है। अब हम साक्षात्कार के अंतिम चरण पर चलते हैं। अब आप यह बताइ कि आप ने मोबाइल तथा कम्प्यूटर में दक्षता कैसे और कहाँ से अर्जित की तथा यहाँ तक आने में आपका सफर कैसा रहा?

रवि : कम्प्यूटर तो हमारे विद्यालय में कक्षा 6 से पढ़ाया जाता था। हम दृष्टि-दिव्यांग जन कम्प्यूटर को स्क्रीन रीडर सॉफ़्टवेयर के माध्यम से संचालित करते हैं। इसी तरह मोबाइल में भी ऐसे ऐप्लीकेशन होते हैं, जो स्क्रीन की रीडिंग करते हैं। जो कुछ भी स्क्रीन पर आता है, उसे स्क्रीन रीडर बोलता है अर्थात रीड करता है। विश्व की लगभग सभी भाषाएं स्क्रीन रीडर के लिए आज उपलब्ध हैं, बस इसके लिए हमें अपना मस्तिष्क प्रयोग में लाना होता है। मैंने सन् 2017-2018 में देहरादून में राजपुर रोड स्थित एन.आई.वी.एच. [जो अब एन.आई.ई.पी.वी.डी. है।] से शॉर्ट-हैंड का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जहाँ मुझे हिंदी टाइपिंग सीखने को मिली तथा कुछ अमूल्य रिश्ते प्राप्त हुए, जिन में मेरे शिक्षक तथा कुछ सुमित कुमार जैसे अनन्य मित्र भी हैं। रही बात यहाँ तक के सफर की, तो यह भी अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा। कॉलेज के पश्चात सन् 2015 में मैं प्रेम में असफल होने के कारण 6 मास तक अवसाद [डिप्रेशन] का शिकार रहा, उसके पश्चात कुछ मित्रों तथा शुभचिंतकों के समझाने पर अपना इलाज करवाया। लगभग 6 मास दवा चली तथा उसके पश्चात मैंने वोडाफोन, आइडिया, रिलाइंस लोन आदि कंपनियों में कम वेतन पर कार्य किया और फिर जिओ के आ जाने से मार्केट डाउन होने के कारण मैंने शॉर्ट-हैंड के लिए परीक्षा दी, चयनित हुआ तथा उसके पश्चात 2019 में मथुरा में फरह स्थित एक निजी दृष्टि-दिव्यांगों हेतु विद्यालय [लुई ब्रेल दृष्धिबाधितार्थ संस्थान] में जुलाई से फरवरी तक अर्थात 8 माह शिक्षण का कार्य किया। 2016 से 2019 तक बैंक पी.ओ. की कई परीक्षाएं दी, किंतु असफल रहा। सन् 2018 में आई.बी.पी.एस. पी.ओ. में मैंने साक्षात्कार भी सफलता पूर्वक पास किया, परंतु अलॉटमेन्ट-लिस्ट में 0.83 अंक से रह गया। उस असफलता के पश्चात मैंने ई.एस.आई.सी. एम.टी.एस. की परीक्षा पास की और आज आप के सामने हूँ।

मैं : वाह!-वाह! रवि जी। कमाल है! इतना संघर्षपूर्ण जीवन तथा आप का साहस सच में प्रेरणा का स्रोत है। अंत में आप संक्षेप में कुछ कहना चाहेंगे?

रवि : बस इतना ही कि हमें जीवन में कभी भी घबराना नहीं चाहिए, हमें हर स्थिति से डटकर सामना करना चाहिए तथा यदि कुछ खो जाए अथवा जो आप पाना चाहें और वह आपको न मिले, तो कभी निराश न हों, अपितु यह सोचें कि ईश्वर ने आप के लिए कुछ और अधिक अच्छा सोच रखा होगा। यक़ीन मानिए, आप के जीवन में सब अच्छा होता चला जाएगा। आप सब से यह भी कहना है कि आप जीवन में किसी भी मोड़ पर हों, पुस्तकें पढ़ना न छोड़ें। विशेष तौर पर आत्मकथाएं तथा जीवनियाँ। बड़ों को सम्मान दे, बराबर वालों से मित्रवत व्यवहार बनाए रखें तथा अपने से कम उम्र वालों को भरपूर स्नेह दें। अंतिम बात यह कि ईश्वरवादी रहें, किंतु अंधविश्वासी न बनें, सब की सहायता करें। यक़ीनन ईश्वर आपकी सहायता करेंगे या यह समझिये कि प्रकृति की सकारात्मक ऊर्जा आप का हित साधेगी।

(भेंट वार्ता का यह अंश रवि जी ने अपने कंप्यूटर पर टाइप करके मुझे व्हाट्सप्प पर भेजा है)

पृथ्वी पर जीवधारियों के लिए जल संरक्षण की आवश्यकता

आशुतोष मिश्र

प्रकृति के द्वारा दी गई बहुमूल्य संसाधनों में जल भी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। सचीद्र भटनागर ने अपनी पंक्तियों के माध्यम से इसका बखूबी जिक्र किया है:-

" प्राणदायी है प्रकृति हर सांस इसकी देन है।
वायु, जल, भू, अग्नि और आकाश इसकी देन है।
व्यर्थ है जीवन की कल्पना इसके बिन।
जो कुछ है हमारे पास सब इसकी देन है।"

"जल ही जीवन है" जीवन की कल्पना इसके बिना नहीं की जा सकती है। हमारे जीने के लिए सभी कार्यों के निष्पादन हेतु जल की आवश्यकता करनी है अथवा यूँ कहा जाएं कि सजीवन के जीने का आधार है जल तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

" जल है तो कल है" इस कथन का तात्पर्य है कि हमारे आने वाले कल के लिए जल का होना अति आवश्यक है। जल प्रकृति द्वारा दी गई महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है अगर समय रहते इसके संरक्षण पर ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाला हमारा कल चुनौतीपूर्ण साबित होगा।

हमारी पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जल से घिरा हुआ है। इस जल में 97% भाग खारा जल है जो पीने योग्य नहीं है। मात्र 3% जल ही पीने योग्य है जिसमें से 2% जल बर्फ तथा ग्लेशियर के रूप में है। अत: केवल 1% जल ही पीने योग्य है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि विश्व में पेय जल की मात्रा बहुत कम है।

नगरीकरण, औद्योगीकरण के दौर में तथा साथ ही साथ बढ़ते प्रदूषण और बढ़ती जनसंख्या के इस दौर में सभी जीवधारियों के लिए पेयजल उपलब्ध कराना एक बड़ी चुनौती बन गई है। हमें इस बात को भलीभांति समझना होगा कि इस जल की समस्या का निवारण एकमात्र जल संरक्षण से ही संभव है। आज के समय में ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि जैसे-तैसे गर्मी का मौसम चला जाए फिर बारिश आने से जल की समस्या अपने आप खत्म हो जाएगी परंतु ऐसा होता नहीं है। हम देखते हैं कि दिन प्रतिदिन बारिश भी समय अनुसार नहीं हो रही है जिससे पानी की कमी यथावत बनी रहती है। इसका मूल कारण वातावरण के संतुलन का बिगड़ना, प्रदूषण तथा ग्लोबल वार्मिंग है। जहां पानी

(पेयजल) की कमी है वहां के लोग इसकी महत्ता को समझने लगे हैं, पर जहां अभी भी जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है वह इसका दुरुपयोग करने से नहीं कतराते।

"विश्व आर्थिक मंच" के अनुसार आने वाले कुछ वर्षों में प्राणी जगत जल की समस्या से और अधिक परेशान होने वाला है। इसी संस्था के रिपोर्ट के अनुसार विश्व की 75% आबादी आज भी शुद्ध पेयजल से वंचित है जो कि जीव धारियों तथा मानव जगत के लिए एक खतरे का सूचक है।

" विश्व स्वास्थ्य संगठन" के एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में पेयजल में परदूषण की मात्रा इतनी ज्यादा बढ़ गई है कि लगभग 86% जनसंख्या प्रदूषित जल का सेवन कर रही है।

अत: जल की समस्या पर सरकार तथा आम जनमानस को ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि दोनों के द्वारा इस विषय पर त्वरित कदम उठाने के साथ-साथ सार्थक पहल की जाए तो बहुत जल्द ही नियंत्रित की जा सकती है। इसके साथ साथ हम लोगों का यह कर्तव्य है कि" 22 मार्च को विश्व जल दिवस" के दिन यह संकल्प लें कि हम सब जल का दुरुपयोग नहीं करेंगे, जल का संरक्षण करेंगे तथा अन्य लोगों को इस संदर्भ में जागरूक बनाने का काम करेंगे।

जल समस्या के इस विषय को अब गंभीरता से नहीं लिया गया तो निश्चित तौर पर आने वाला कल हमारे तथा हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए चुनौतीपूर्ण साबित होगा। सचिंद्र भटनागर की एक और पंक्ति इस विषय पर बखूबी लागू होती है:-

"एक जल की बूंद को इंसान तरसेंगे यहां।
अनगिनत साधन ना कोई साथ फिर देंगे यहां।।
कुछ सरोवर भी लगेंगे मरघटों जैसे यहां।
और मौसम मृत्यु की घबराहटों जैसे यहां।।"

मनुष्य के जीवन पर भ्रमण का प्रभाव

राहुल गुप्ता

सर्वप्रथम हम यह जान ले कि भ्रमण है क्या। इसका मनुष्य के जीवन से क्या नाता है। वास्तव में भ्रमण का अर्थ है मनुष्य का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। मनुष्य का जीवन उसके मानसिक स्वास्थ्य पर परस्पर निर्भर रहता है। फलत: मन के प्रफुल्लित रहने से मनुष्य जो चाहे वह हासिल कर सकता है और इसके विपरीत मन खिन्न व हतोत्साहित रहने से मनुष्य अवसाद में जा सकता है। जिसके कारण हमें अक्सर आत्महत्याएँ जैसी जघन्य अपराधों के विषय में सुनने व पढ़ने को मिलता है। भ्रमण करने से मनुष्य के जीवन में नवीन चेतना, रवानी व उमंग का संचार होता है, जिससे उसे जीवन जीने में साहस और आनंद की अनुभूति होती है। "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" इसलिए हमें मन का उचित ख्याल रखना चाहिए।

जिस प्रकार सूर्य स्थिर न रहकर उदयाचल व अस्ताचल दिख पड़ता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी चलायमान होने से शोभा प्राप्त कर सम्मान का पात्र बनता है। मनुष्य के जीवन और जल में एक समानता दिखाई पड़ती है। दोनों ही प्रवाहित होते रहने से निर्मल बने रहते हैं, लेकिन इसके विपरीत इसके रूक जाने व स्थिर हो जाने से वे दूषित हो व्यवहारिक नहीं रह जाते हैं।

अब हम भ्रमण के विभन्न प्रकार और उनके प्रभाव के बारे में जानते हैं :-

1. प्रातः भ्रमण - यह सबसे महत्वपूर्ण भ्रमण है। क्योंकि "सुबह की शुरुआत ही आने वाला पूरा दिन दिखाती है"। प्रातः काल ही वह बेला है जब मनुष्य भ्रमण कर प्रकृति से शुद्ध ऑक्सीजन और ओज़ोन जैसी जीवनदायिनी गैस प्राप्त कर स्वस्थ्य रह सकता है। प्रात: भ्रमण करने से शारीरिक व्यायाम होता है जिससे मनुष्य की धमनियों में शुद्ध रक्त प्रवाहित होता है जिससे वह अनेक रोगों से यूँ ही मुक्त हो सकता है। फलस्वरूप सुंदर और आकर्षक शरीर पाकर मनुष्य का आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके अलावा प्रकृति के प्रांगण में प्रात: भ्रमण करने से मनुष्य कला की ओर प्रेरित होता है।

2. मानसिक भ्रमण - यह भ्रमण नक्शों/ मेटावर्स तकनीकी/ आभासी दुनिया व यूट्यूब के द्वारा किया जा सकता है। भ्रमण प्रेमी मनुष्य जब शारीरिक रूप से भ्रमण करने में असमर्थ रहता है तब वह इस तरह की मानसिक भ्रमण का सहारा ले सकता है।

3. शैक्षणिक भ्रमण - यह भ्रमण छात्रों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी शैक्षणिक स्थान पर सशरीर उपस्थित रहने से उनके द्वारा किताबों में पढ़ा गया ज्ञान और भी सुदृढ़ और जीवंत हो उठता है।

4.आध्यात्मिक भ्रमण - किसी सिद्ध पीठ व तीर्थ स्थान का भ्रमण करने व वहां सशरीर उपस्थित होने से मनुष्य का मन शांत हो ध्यान में शीघ्र ही स्थापित हो पाता है जिससे उसकी कूल-कुंडलिनी शक्ति जागृत होने में सहायक सिद्ध होती है।

5. सामाजिक भ्रमण - भ्रमण के दौरान मनुष्य समाज के विभिन्न जाति व समुदाय से अद्यतन होता रहता है। कुछ उत्कृष्ट तो कुछ मन को विचलित करने वाली कुरीतियों से मन अवगत हो पाता है। इस विस्तृत दृष्टिकोण से हम अपने जीवन में सर्वोच्च पद्धति अपना कर लाभांन्वित हो सकते हैं। हमारे देश के भावी नेता व समाज सुधारक इन्हीं समाजों में से निकलकर आते हैं। फलत: उन्हें हर समाज के विषय में भली-भांति जानकारी होनी चाहिए। इसलिए भ्रमण के दौरान बच्चों को भी अपने साथ जरूर ले जाएं और उन्हें भ्रमण संबंधित जिम्मेदारियां दें जिससे वे एक काबिल, जिम्मेदार और जानकार नागरिक बन सके।

वास्तव में जीवन जीने की कला एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में ही है। तो जनाब अपना बोरिया बिस्तर समेटिए और ज़रा चलते-फिरते नज़र आईए। यह आपका अपमान नहीं बल्कि एक जीवन-दर्शन का निचोड़ है, क्योंकि **"जो रमता नहीं वह राम नहीं, टिकना तो मौत है"।**

इस संदर्भ में ख्वाज़ा मीर दर्द की दो पंक्तियां इस प्रकार है :-

"सैर कर दुनिया की गाफ़िल जिंदगानी फिर कहां,
जिंदगानी गर कुछ रही तो यह नौजवानी फिर कहां।"

लाचार

पोलीकार्प सोरेंग

अहले सुबह कौओं की कांव-कांव-कांव-काव से अचानक मेरी नींद टूट गई। कौओं का चिल्लाना लगातार जारी था। मैंने खिड़की का पर्दा हटाया और खिड़की से बाहर झाँककर देखा। लगभग 15-20 कौओं ने एक कौवे को घेरकर रखा था। कोई उस एक कौआ पर झपटा मार रहा था तो कोई उसके आगे-पीछे उड़ रहा था। मैं कौओं की इस हरकत को बड़े गौर से देख रहा था और माजरा समझने की कोशिश कर रहा था। कुछ ही देर में बात समझ में आ गई। वह बेचारा कौआ उड़ने में असमर्थ था और ठीक से चल भी नहीं पा रहा था और शायद सभी उसे उड़ाने की कोशिश कर रहे थे। झपटा मार रहे थे ताकि वह चल सके, उड़ सके। लेकिन सब व्यर्थ। कौआ उड़ने की कोशिश में केवल उछल ही पा रहा था। वह हर बार प्रयास करता और गिर पड़ता। कुछ देर प्रयास करने के बाद हार-थककर वह बैठ गया। अन्य कौवे भी दूर जाकर बैठ गए और दूर से ही काँव-काँव करते हुए ताकने रहे। फिर कुछ देर बाद उस वृद्ध और शायद बीमार, घायल कौवे को अकेला छोड़कर सभी अपने नित्य कर्मों में व्यस्त हो गए।

इस घटना को देखकर मुझे अचानक मंगरू बाबा की याद आ गई। वे लगभग 80-85 वर्ष के रहे होंगे। उनका भरा-पूरा परिवार था। उनकी कुल सात बेटियाँ और एक बेटा था। छोटी पुत्री को छोड़कर सभी का व्याह हो चुका था। व्याह के बाद सभी बेटियाँ अपनी-अपनी ससुराल चली गईं और घर में बच गए मंगरू बाबा, उनकी पत्नी, बेटा-बहु और उनके बच्चे। छोटी बेटी पढ़ाई के सिलसिले में घर से बाहर रहती थी। किसानी उनका पेशा था। उनके जीवन की गाड़ी हँसी-खुशी आगे बढ़ रही थी। लेकिन नियति को उनका हँसना-खेलना शायद पसंद नहीं आया। एक दिन मैंने उनके घर के आँगन में कुछ हलचल देखी। लोगों की भीड़ जमा थी। कौतुहलवश मैंने भी उनके घर की तरफ रूख किया। जाकर देखा तो मंगरू बाबा जमीन पर निढाल पड़े हैं। वे दर्द से कराह रहे हैं। पूछने पर बताया गया कि वे रात को खाट से नीचे उतरने के क्रम में नीचे गिर गए थे। उनके कमर में गहरी चोट लगी थी और एक टांग टूट गया था। वहाँ जितने लोग जमा थे सभी अपने हिसाब से उनके बेटे को दवा सुझा रहे थे। कोई कह रहा था उस वैद के पास ले जाओ, कोई कह रहा था वहाँ ले जाओ तो अस्पताल तो कोई कहीं और ले जाने की बात कह रहा था। कुछ देर बाद सभी अपने-अपने घरों को चले गए। उनकी बेटियों को भी खबर भेज दी गई।

एक निश्चित दिन उनकी सभी पुत्रियाँ अपने पिताजी को देखने आए। सभी उनके लिए खाने की कुछ न कुछ पकवान लेकर आए थे। उस दिन घर पर भी अच्छा खाना पकाया गया। घर पर उदासी कम चहल-पहल ज्यादा लग रहा था। उनकी बेटियाँ कह रही थी आज अच्छा खाना खिला देते हैं पता नहीं और कितना दिन हमारे बीच रह पाएँगे। घर पर खान-पान हुआ और सभी अपने-अपने घर विदा हो गई। किसी ने कुछ दिन उनके साथ रुककर सेवा करने की जरुरत नहीं समझा। शायद सबका अपना-अपना काम था। अपना-अपना घर-द्वार संभालना था। अकेला उनका बेटा रह गया जो दिन-रात उनकी सेवा करता। उनके कपड़े बदलता, बिस्तर से उठाकर पेशाब-पैखाना करवाने बाहर ले जाता। पानी पिलाता, खाना खिलाता। लेकिन कब तक ऐसा चलता। धीरे-धीरे वह भी घर से निकल कर खेतों में काम करने चला जाता। अकेला बूढ़ा बाबा विस्तर पर पड़ा-पड़ा दर्द से करहता रहता।

मनुष्य जब तक शक्तिशाली है, जब तक स्वस्थ्य है, जब तक उनके साथ धन-दौलत है उनके बहुत सारे मित्र और चाहने वाले लोग होंगे। लेकिन जैसे ही वह कमजोर पड़ता है सब एक-एक कर किनारा कर लेते हैं। दूसरी तरफ जब आदमी भला-चंगा होता है तो उसे कभी नहीं पूछा जाता कि कुछ खाओगे या खाना समय से खाना, रोज खाना, दूध पीया या नहीं, फल खाया या नहीं आदि। लेकिन जब वह बीमार पड़ता है तब लोग यह पूछते नहीं थकते कि खाना खाया या नहीं, जूस पीया या नहीं। ज्यादा से ज्यादा फल खाया करो, जूस पीया करो और न जाने क्या-क्या। लोग अचानक ही फिक्रमंद हो जाते हैं। एक तरह से यह अच्छा भी है कि लोग अस्वस्थ्य व्यक्ति की परवाह करते हैं।

" यह माना जीन्दगी है चार दिन की
बहुत होते है यारों चार दिन भी"

राजभाषा हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के विकास में तकनीकी सहयोग को समर्पित वेबसाइट

बाणी शुक्ल
पुत्री बिनय कुमार शुक्ल

यह एक कटु सत्य है कि बिना तकनीकी सहयोग के वर्तमान समय में भाषाओं का विकास नहीं हो सकता। साथ ही आम भारतीयों में यह भ्रांति भी है कि भारतीय भाषाओं के अनुप्रयोग और उनके लिए तकनीकी सहयोग उपलब्ध करवाने के लिए कोई विशेष संसाधन उपलब्ध नहीं है। कभी हम भी यही सोचा करते थे। और शायद यही कारण है कि अधिकांशतः लोग अंग्रेजी की बोर्ड का प्रयोग कर अंग्रेजी में लिखकर ही इंटरनेट पर जानकारी ढूंढने का प्रयास करते हैं। आज की इस चर्चा में अंग्रेजी के इस भ्रमजाल के परे हम ऐसे कई वेबसाइटों की बात करेंगे जहां से आपको हिंदी सहित अधिकांश भारतीय भाषाओं के लिए संसाधन उपलब्ध हैं। उनमें से कुछ का विवरण यहां देने का प्रयास किया जा रहा है:-

सबसे पहले हम बात करेंगे https://ildc.in/ की। इस वेबसाइट पर लगभग 28 भारतीय भाषाओं के लिए मुफ्त सॉफ्टवेयर और कई टूल उपलब्ध हैं। इसी वेबसाइट पर तीन और वेबसाइटों का लिंक उपलब्ध है जिनपर आपको भारतीय भाषाओं से संबंधित विविध टूल और सामग्री मिल जाएगी। यदि आप अपने कंप्यूटर में भारतीय भाषाओं का अनुप्रयोग करते हैं तो इस वेबसाइट का लाभ अवश्य लें। इसके लिए इमेज इस वेबसाइट से ले लीजिए। इसी प्रकार से यदि आप संस्कृत, उर्दू, भारतीय भाषाओं में अनुवाद, ओसीआर आदि आजमाना चाहें तो इस लिंक पर आपके लिए ढेरों सामग्री उपलब्ध है। https://tdil-dc.in/index.php?lang=en www.bhashaindia.com Microsoft की वेबसाइट जिसपर आपको भारतीय भाषाओं से संबंधित विविध सॉफ्टवेयर, फॉन्ट परिवर्तक अर्थात फॉन्ट कन्वर्टर, डॉट नेट फ्रेमवर्क आदि मुफ्त उपलब्ध हैं।

अनुवाद सीखने के इच्छुक लोगों के लिए बड़ा ही उपयोगी वेबसाइट है। इसपर अनुवाद और अनुवाद प्रशिक्षण संबंधित कई उपयोगी वीडियों पाठ उपलब्ध हैं। इसे केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा विकसित किया गया है।

जब अनुवाद की बात चली तो एक बात और याद आई। कई बार आपकी इच्छा तो होती है कि अंग्रेजी से हिंदी में खुद ही अनुवाद कर लें पर संकोच और मानक अनुवाद की शंका के कारण आप स्वयं प्रयास नहीं करना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में आपकी सहायता के लिए सबसे सुलभ और सुगम साधन है। Microsoft Translation इस सुविधा का उपयोग करने के लिए वर्ड डॉक्यूमेंट में आप जिस पंक्ति का अनुवाद करना हो उसे सेलेक्ट करें और माउस को राइट क्लिक करें। अगले बॉक्स में आप देखें एक जगह translate विकल्प आएगा। जैसे ही यह विकल्प चुनते हैं, एक और विंडो उसी में खुलेगा जिसमें आपसे किस भाषा में अनुवाद करना होगा उसके लिए पूछा जाता है। ड्रॉप डाउन बटन होता है। अपनी इच्छित भाषा चुन लें। अगले ही पल अंग्रेजी का वह वाक्यांश आपके चयनित भाषा में आ जाएगा। यदि आप लगभग सटीक अनुवाद चाहते हैं तो एक-एक पंक्ति का अनुवाद करें। ऐसी ही एक और वेबसाइट है rajbhasha.net

राजभाषा.नेट हिंदी का प्रयोग कंप्यूटर व इंटरनेट पर सुविधापूर्वक करने के उद्देश्य से बनाई गई है। ओपन सोर्स हिन्दी की सुविधाओं का समुचित प्रयोग-प्रचार करने के लिए तथा हिन्दी का प्रयोग

प्रसार बढ़ाने के लिए राजभाषा.नेट पर इस प्रकार की सुविधाओं तथा हिन्दी के लिए टूल सॉफ्टवेयर को अधिकतम लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

भारतीय इंकस्केप (ग्राफिक डिजाइन सॉफ्टवेयर) का हिंदी संस्करण इंकस्केप एक ओपन सोर्स वेक्टर ग्राफिक्स संपादक है जो illustrator, CorelDraw, या Xara X के समान क्षमताओं से युक्त है जिसमें W3C मानक स्केलेबल वेक्टर ग्राफिक्स (SVG) फ़ाइल स्वरुप का उपयोग किया जाता है।

भारतीय टक्सपेंट (बच्चों के लिए ड्रॉइंग सॉफ्टवेयर) का हिंदी संस्करण: टक्स पेंट, 3 से 12 वर्ष की उम्र के बच्चों के लिए एक मुक्त, पुरस्कार-विजेता ड्रॉइंग प्रोग्राम है। इसमें एक आसानी से उपयोग किया जाने वाला इंटरफेस, मनोरंजक साउंड इफेक्ट और एक प्रोत्साहक कार्टून प्रतीक मौजूद है जो प्रोग्राम का उपयोग करते समय बच्चों का मार्गदर्शन करता है. बच्चों को एक खाली कैनवास और विभिन्न प्रकार के ड्राइंग टूल्स दिए जाते हैं जो रचनात्मक बनने में उनकी सहायता करता है।

भारतीय ज़ूमला (सामग्री प्रबंधन सिस्टम) का हिंदी संस्करण - निःशुल्क भारतीय भाषा सॉफ्टवेयर उपकरण- विंडोज़, लिनक्स, डेस्कटॉप टूल्स हिंदी भाषा के लिए यूनिकोड आधारित की-बोर्ड ड्राइवर (यूनिकोड टाइपिंग टूल) यह मूल रुप से एक टाइपिंग सॉफ्टवेयर है, जो हिन्दी भाषा में डेटा या लेख तैयार करने के लिए उपयोगी है। इसका मतलब है कि आप हिन्दी में ई-मेल टेक्स्ट तैयार करने, हिंदी भाषा में लघु कथाएं तैयार करने, आलेख लिखने, रिपोर्ट तैयार करने, कार्यालय संबंधी सूचना तैयार करने आदि जैसे सरल कार्यों को पूरा करने में सक्षम होंगे।

सिस्टम आवश्यकताएं

हिंदी भाषा के यूनिकोड आधारित ओपन टाइप फॉन्ट्स (यूनिकोड फॉन्ट्स) यह फॉन्ट्स हिंदी भाषा में डेटा या लेख तैयार करते समय इस्तेमाल किये जा सकता है। यह फॉन्ट यूनिकोड आधारित फॉन्ट है और इसलिए ये संग्रहण मानक का पालन करते है। यह फॉन्ट नॉर्मल वेट में सौंदर्यात्मक रुप से सुदंर दिखाई देने वाले फॉन्ट हैं। भारतीय लिब्रे-ऑफिस (ऑफिस सॉफ्टवेयर) का हिंदी संस्करण लिब्रे-ऑफिस, व्यावसायिक रुप से उपलब्ध अन्य ऑफिस सॉफ्टवेयर की तरह एक मुक्त और ओपन सोर्स ऑफिस सॉफ्टवेयर है। इसमें वर्ड प्रोसेसिंग (राइटर), स्प्रेडशीट एप्लिकेशन (कॅल्क), प्रस्तुतीकरण सॉफ्टवेयर (इंप्रेस), डेटाबेस एप्लिकेशन (बेस), ड्रॉइंग सॉफ्टवेयर (ड्रॉ) और गणितीय सूत्र बनाने के लिए एप्लिकेशन (मैथ) के घटक शामिल हैं।

डेस्कटॉप उपयोग के लिए टूल्स

यह सेटअप आपके कंप्यूटर पर निम्नलिखित सभी तीन सॉफ्टवेयरों को इंस्टॉल करेगा।

1. हिंदी भाषा के लिए यूनिकोड आधारित की-बोर्ड ड्राइवर (टाइपिंग टूल)
2. हिंदी भाषा के यूनिकोड आधारित ओपन टाइप फॉन्ट्स (यूनिकोड फॉन्ट्स)
3 . भारतीय लिब्रे-ऑफिस का हिंदी संस्करण (ऑफिस सॉफ्टवेयर)

इनके अलावा अन्य ई टूल्स की बात करें तो इन्टरनेट यंत्र भारतीय फायरफॉक्स (वेब ब्राउज़र) का हिंदी संस्करण फायरफॉक्स एक बहुत ही सशक्त ओपन सोर्स वेब ब्राउजर है. चूंकि यह एक वेब ब्राउज़र है, यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जो उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट पर दस्तावेजों और अन्य संसाधनो तक पहुंचने, इन्हें पुनः प्राप्त करने और देखने में सक्षम बनाता है हमने फायरफॉक्स का स्थानीयकृत संस्करण उपलब्ध कराया है।

भारतीय थंडरबर्ड (ईमेल क्लाइंट) का हिंदी संस्करण (लाइटनिंग प्लगइन के साथ) थंडरबर्ड एक मुफ्त ई-मेल क्लाइंट (ई-मेल एप्लिकेशम है जिसे सेट अप और अनुकूलित करना आसान है.

भारतीय पिड़गिन (सार्वभौमिक चैट क्लाइंट) का हिंदी संस्करण - पिड़गिन एक आसानी से उपयोग किया जाने वाला और मुफ्त चैट क्लाइंट है। जिसे दुनिया भर के लोग बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करते है, इसकी मदद से व्यक्ति एक ही समय में और अन्य चैट नेटवर्कों से जुड़ सकता है.

इंटरनेट उपयोग के लिए टूल्स - यह सेटअप आपके कंप्यूटर पर निम्नलिखित सभी तीन सॉफ्टवेयरों को इंस्टॉल करेगा:

1. भारतीय फायरफॉक्स (वेब ब्राउज़र) का हिंदी संस्करण
2 . भारतीय थंडरबर्ड (ईमेल क्लाइंट) का हिंदी संस्करण (लाइटनिंग प्लगइन के साथ)
3. भारतीय पिड़गिन (सार्वभौमिक चैट क्लाइंट) का हिंदी संस्करण

इसके इसके अलावा इंटरनेट पर हिंदी के तकनीकी अनुप्रयोग के लिए ढ़ेर सारी सामग्री उपलब्ध है एक बार ढूंढ कर तो देखें।

परी के गाँव

अर्णब बनर्जी

धर्मवीर भारती की रचना 'ब्रह्मपुत्र की मोर्चाबंदी' में एक पंक्ति पढ़ी थी, 'फौज का सबेरा भी खूब होता है', इन पंक्तियों का सही अर्थ तब तक समझ नहीं आया जब तक स्वयं फ़ौज अर्थात भारतीय नौसेना में नहीं गया। नौसेना की सेवा करते-करते प्रकृति, मानव और इस प्रकृति के हर चर-चरा-चर से लगाव सा हो गया। जैसे हर सुबह की एक शाम होती वैसे ही हर सेवा की एक अवधि होती है। समय के साथ सेवानिवृत्त होकर सैन्य जीवन से सिविलियन जीवन में प्रवेश कर गया पर नौसेना ने जो गुण हममें भर दिया था वह आज भी हमारे साथ है। मानव सेवा का गुण। एक अंग्रेजी कहावत है **'A soldier, always remains a soldier'** या फिर हिंदी में कहें कि फौजी कभी बूढ़ा नहीं होता तो यह वाक्य चरितार्थ है हमारे साथ।

सेवानिवृत्ति के बाद भी हमारे बैच के सभी मित्रों ने मिलकर एक संगठन बनाया जिसका मूल उद्देश्य समाज की सेवा करना साथ ही इसी बहाने एक गेट-टुगेदर भी हो जाता है । वर्ष में एक बार सेवाकार्य के लिए किसी सुदूर ग्रामीण अंचल में जाते हैं। वहाँ के लोगों के साथ एक रात बिताते हैं और यथाशक्ति उनके लिए सर्दी के कपड़े, उनके बच्चों के लिए कलम -कॉपियाँ और अनान्य वस्तु ले जाते हैं और सादर भेंट करते हैं। अक्सर इस कार्य के लिए जनवरी का महीना चुनते हैं, छुट्टी का दिन हो और एक आध दिन अलग से मिल जाए बस। कोई भी स्थान चुनने से पहले हमारी एक रेकी टीम पहले घूमने जाती है। आवश्यकता के अनुरूप स्थान चुनने के बाद फिर आगे की योजना बनाई जाती है। स्थान चुनना फिर तदनुसार उनकी आवश्यकता के अनुसार बजट बनाना, पैसे इकट्ठे कर यात्रा की योजना बनाना और फिर यात्रा के पूर्व गांव के मुखिया या अन्य लोगों से अपने आने के उद्देश्य की जानकारी साझा करना और फिर अनुमोदन प्राप्ति के पश्चात इच्छित स्थान भ्रमण करना आदि सब तय हो जाता है। बांटे जाने वाले सामानों की सूची ठेकेदार को पहले ही दे दी जाती है। उसका काम है सामान सुरक्षित पंहुचाना और वह समय पर पहुंचा भी देता है। इसलिए सामान पहुँचाने की चिंता नहीं रहती है।

इस बार हमारी रेकी टीम ने मिदनापुर जिले के झाड़ग्राम अंचल के उत्तर बामदा के हरीरी मॉनकों ग्राम का चयन किया। इस गाँव के इतिहास और यहाँ के बच्चों को शिक्षित नागरिक बनाने के उद्देश्य से सेवा कार्य कर रहे मास्टरजी के बारे में सुनकर ही हमने इस गाँव में जाने का मन बना लिया । इससे मास्टरजी के अतुलनीय

त्याग से उपजे शिक्षा स्थल के साथ-साथ ऐसे ग्रामीण अंचल के लोगों से मिलने की तीव्र इच्छा जागृत हो उठी।

हम सभी या तो नौसेना दिवस पर या नेताजी के जन्मदिवस के अवसर पर इस पुनीत कार्य के लिए निकलते थे। इस बार हमलोगों ने मिदनापुर जिले के एक सुदूर ग्राम का चयन किया। इस ग्राम की सबसे बड़ी खासियत है यहाँ की आदिवासी जनता जो साबर जनजाति के हैं और इनका भोजन अधिकांशतः चूहे होते हैं। खेतों और जंगलों में ये चूहे पकड़ते हैं और उनका ही भोजन करते हैं। गरीबी काफी है यहाँ और फिर गरीबों की बस्ती में स्कूल भले ही हो, पढ़ने जाने की ललक भला कहाँ से आएगी। हालांकि इस गाँव में एक विद्यालय है। विद्यालय की कहानी भी किसी सत्ययुग के ऋषि से कम नहीं है। यह स्कूल फर्स्ट जेनेरेशन स्कूल है तथा किसी की दान की हुई जमीन पर एक मास्टर जी इसे चलाते हैं। इसके संस्थापक और संचालक श्री प्रसूनत्रिय हलदार मास्टरजी और उनकी पत्नी हैं जो समर्पित भाव से इस स्कूल का संचालन करते हैं। शुरुआत में वे इस गाँव के बच्चों में शिक्षा का भाव पैदा करने के उद्देश्य से आए थे। शुरू-शुरू में कहीं किसी पेड़ के नीचे या जंगल में ही साफ सुथरी जगह पर बच्चों को लेकर पढ़ाने बैठ जाते थे। बाद में धीरे-धीरे बच्चे उनके विद्यालय में आने लगे। सन 2005 में शुरू किया हुआ उनका यह विद्यालय अब धीरे-धीरे बच्चों से भरने लगा पर विद्यालय के लिए एक भवन की खास आवश्यकता थी। एक पद्य बाबू थे उनके भाई थे उधम हेमरोंग। उनकी कुछ जमीनें थीं। उन्होने एक बार मास्टरजी को बुलाकर कहा कि मेरी कुछ जमीनें है, मैं तो चला जाऊंगा अतः चाहता हूँ कि इसमें से कुछ टुकड़े आप अपने स्कूल के नाम से रजिस्ट्री करवा लीजिए, और फिर इसके साथ ही विद्यालय को एक स्थाई परिसर मिल पाया। स्थानीय प्रशासन और राजनैतिक दल के लोगों से भी सहयोग प्राप्त होता रहता है पर मास्टरजी को लगभग इतने वर्षों तक न तो कोई सरकारी सहायता मिली ना ही वेतन, पर फिर भी वे दोनों पति-पत्नी किसी ऋषि की भांति निःस्वार्थ सेवा करते रहे। सरकारी वेतन उनको सन 2016 से मिलना शुरू हुआ।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में चयनित गंतव्य स्थल पहुंचे। यहां हमलोग शाम को ही पहुंच गए थे। गांव के विद्यालय में रहने की व्यवस्था हो गई। सबने अपना आसन ग्रहण किया और विश्राम करने लगे। मास्टरजी का उस गाँव में विशेष आदर और सम्मान है। उनकी समर्पण भाव से सेवा का ही फल है कि उनके विद्यालय के बच्चे भी काफी अनुशासित और आज्ञाकारी हैं। बच्चों को इतना पता है कि किसी बड़े के पैरों में फूल रखकर उनका सम्मान किया जाता है और उन्हें साष्टांग दंडवत किया जाता है। हर बच्चे ने नेताजी के पैरों के पास फूल चढ़ाया और वास्तव में सबने उनको साष्टांग दंडवत किया। उस गाँव के लोग नेताजी को सुभाष ठाकुर के नाम से सम्बोधन करते हैं। यह समस्त अच्छे आचरण बच्चों में डालने का सम्पूर्ण श्रेय मास्टरजी को ही जाता है। मास्टरजी यहाँ के लोगों और प्रशासन के बीच कई बार कड़ी का काम करते हैं। सदा गाँव वासियों के सुख-दुख में खड़े रहने वाले मास्टरजी की श्रद्धा में जितने भी सुमन चढ़ाए जाएँ बहुत ही कम है। सुबह से लेकर दस बजे तक नेताजी के जन्मदिन और झंडोतोलन के कार्यक्रम की तैयारी में पूरा विद्यालय लगा रहा। सारी तैयारियां होने के बाद मास्टरजी ने बच्चों को आदेश दिया कि सभी अपने-अपने घर जाकर स्कूल ड्रेस पहनकर तत्काल पहुँचे। देखते ही देखते सारे बच्चे गायब और अगले कुछ मिनटों में सब स्कूल की यूनिफॉर्म में तैयार होकर हाजिर। बड़ी हैरानी हुई देखकर कि स्कूल से हर बच्चे का घर चार से पाँच किलोमीटर पर था पर जिस मुस्तैदी से और कम समय में बच्चे तैयार होकर आ गए वह अपने आप में बड़ी ही तारीफ की बात है।

अगले दिन हमारी भेंट परी से हुई। उसका असली नाम अर्चना साबर है। यह किसी दंतकथा की परी तो नहीं थी पर किसी परी से कम न थी। अभी उसकी उम्र ही क्या थी, महज नौ वर्ष, पर

इस नौ वर्ष की अल्पायु में ही उसने इतना कुछ झेला है कि बोलते हुए आंखों से आंसू बह आते हैं। जुबान फड़फड़ाने लगती है। गले में सिसकियों की हिचकी आने लगती है। दो वर्ष पहले कोरोना महामारी ने उससे उसके माता-पिता छीन लिए। बेचारी दुनिया के सितम झेलने के लिए अकेली रह गई। इससे बड़ी आफ़त और क्या हो सकती है किसी के लिए जिसके सिर से इस छोटी सी उम्र में पालनहार का साया, मां की ममता का साया उठ जाए। जिस दिन वह अनाथ हुई वह दिन उसने कैसे काटा यह तो पता नहीं क्योंकि ऐसी बात पूछने की हमारी हिम्मत न हो सकी, उसे महसूस करके ही सिहरन होने लगता है। दुश्मन के टारपीडो, सुनामी की लहरों से भी न डिगने वाले हम सब उनकी कहानी सुनकर अंदर तक हिल गए। पर यहां उसके गांव वालों ने उसे सम्हाल लिया। किसी ने उसे गोद नहीं लिया ना ही कोई उसका गॉडफादर बनकर आया, पर हां सबने यह ध्यान रखा कि उसकी रोज के भोजन की जरूरतें पूरी होती रहें। या तो भोजन या नाश्ते के समय कोई उसके पास खाने का सामान लेकर आ जाता है या फिर वह अपनी इच्छा से किसी के घर चली जाती है, वहां उसके भोजन की आवश्यकता पूरी हो जाती है। कभी मूढ़ी-पानी,तो कभी झाल-मूढ़ी खाकर अपना समय काट लेती है। सबसे अधिक रोना तो यह सुनकर आता है कि वह अपने घर में रात के अंधेरे में अकेले ही सोती है। आम इंसान ग्रामीण अंचल के रात के अंधेरे में अकेले इधर-उधर जाने से जहां कतराता है वहीं वह बेचारी जंगल झाड़ियों के बीच बसे अपने आशियाने में अकेले काटती है। सचमुच ही ईश्वर ने उसे परी जैसे सशक्त और हिम्मतवाली बनाया है।

इसके बाद सभी बच्चे अनुशासित ढंग से कार्यक्रम में शामिल हुए, झंडोतोलन राष्ट्र गान आदि के बाद बिना शोर-शराबे के एक पंक्ति में लगकर प्रसाद ग्रहण करते उन बच्चों को देखकर सहज ही मन उनकी तारीफ करने से नहीं थकता। स्कूल, मास्टरजी और बच्चों के कार्यक्रम के बाद अब हमारा असली कार्यक्रम होना बाकी था। सब उसकी तैयारी में लग गए। हमारी टीम के एक सदस्य बहुत ही स्वादिष्ट खिचड़ी बनाते हैं। यह जिम्मेदारी वे किसी और को देते भी नहीं,वे अपना मोर्चा सम्हाल कर खड़े हो गए। बाकियों ने भी अपनी रुचि और लगन के अनुसार मोर्चा सम्हाल ही लिया था।

राष्ट्र के नाम समर्पित हम सबने ग्रामीणों के साथ मिलकर भोजन किया, उपहार बांटे, हमारा आतिथ्य स्वीकार करने के लिए हम सबने उनका आभार व्यक्त किया और फिर सब अपने-अपने घर की ओर लौट पड़े। परी के गांव से हम चले तो आए हैं पर आज भी उसके बारे में,उसके भविष्य के बारे में सोचकर एक हूक सी उठ आती है।

माँ

धर्मपाल कुमार

माँ तूने मुझे नौ महीने पेट में छुपाया है
मेरे मारे नन्हे पैरों के चोट पर मुस्कुराया है।
जन्म के बाद तूने हर जगह मिठाई भी बँटवाया है
जन्म की खुशी में आंसुओं ने तुम्हारे पलकों को भिगोया है।
माँ तेरी ममता का कोई जवाब नहीं है
तेरी खुशी से बढ़कर कोई सामान नहीं है।

तूने मेरी नन्हीं उंगलियों को पकड़कर सैकड़ों कदम चलाया है
मेरे गिले किऐ बिस्तरों पर सैकड़ों रातों को गुजारा है।
मुझे खिलाने के लिए तूने तोते मैंने की कहानी भी सुनाया है।
मुझे लोरी सुना कर तूने बाहों में सुलाया है
माँ तेरी ममता का कोई जवाब नहीं है
तेरी खुशी से बढ़कर कोई सामान नहीं है।

माँ तूने मुझे घर, स्कूल और कॉलेजों तक पढ़ाया है
अपनी जमा पाई-पाई हम पर ही लुटाया हैं।
तूने मुझे शिक्षित और काबिल बनाया है
समाज में अच्छी और सुसज्जित पहचान भी दिलाया है।
माँ तेरी ममता का कोई जवाब नहीं है
तेरी खुशी से बढ़कर कोई सामान नहीं है।

पाकर दौलत-शोहरत मैंने तुझे भूखे भी सुलाया है
प्यार के बदले तुझे कड़वी बातें भी चखाया है।
तेरी मौत आने हेतु ईश्वर से फरियादे भी लगाया है
करके ममता को शर्मसार तुझपे डंडा भी जमाया है।
माँ मेरी पाप के समंदर का कोई अंत नहीं है।
माँ तेरी ममता का कोई जवाब नहीं है
तेरी खुशी से बढ़कर कोई सामान नहीं है।

सरल प्रशासनिक शब्दावली

क्र. सं.	शब्द	हिंदी पर्यायवाची	अंग्रेजी में प्रयोग	हिंदी में प्रयोग
1.	abide	1. पालन करना 2. दृढ़ रहना, कायम रहना 3. मान लेना	1. We should **abide** by the rules. 2. We **abide** by our oath. 3. The players have to **abide** by the referee's decision.	1. हमें नियमों का **पालन** करना चाहिए। 2. हम अपनी शपथ पर **दृढ़** हैं। 3.खिलाड़ियों को रेफरी के फैसले **को मानना होगा।**
2.	Abnormal	1. अनुचित 2. असामान्य, असाधारण 3. अस्वाभाविक 4. अपसामान्य	1. Due to shortage of food grains in the market, the shopkeepers are charging an **abnormal** price for it. 2. There was an **abnormal** delay in submission of the quarterly report. 3. According to the police, it is a case of **abnormal** death.	1. बाजार में अनाज की कमी के कारण दूकानदार इसकी **अनुचित/ असामान्य** कीमत वसूल रहे हैं। 2. तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करने में **असाधारण** विलंब हुआ। 3. पुलिस के अनुसार यह **अस्वाभाविक** मौत का मामला है।
3.	above	1. (prep) के ऊपर, के परे, से अच्छा, से अधिक 2. (adv) ऊपर, विशेष रूप से 3. (adj) - उपर्युक्त, ऊपर उल्लिखित 4. (n) - उपर्युक्त	1. **Above** all, it is not going to benefit the organization. 2. The committee found the **above** cited case true. 3. The **above** mentioned officers will be on probation for a period of two years. 4. For additional information, contact any of the **above**.	1. **विशेष रूप से** इससे संगठन को कोई लाभ नहीं होगा। 2. समिति ने **ऊपर उल्लिखित** मामले को सही पाया। 3. **उपर्युक्त** अधिकारी दो वर्ष तक परिवीक्षा अवधि पर रहेंगे। 4. अतिरिक्त जानकारी के लिए **उपर्युक्त** में से किसी से भी संपर्क करें।

4.	absence	1.अनुपस्थिति, गैरहाज़री 2. अभाव	1. In the **absence** of the Director, the administrative responsibilities shall be discharged by the Joint Director. 2. The case was dismissed in the **absence** of any definite proof.	1. निदेशक की **अनुपस्थिति** में प्रशासनिक दायित्व संयुक्त निदेशक संभालेंगे। 2. किसी ठोस सबूत के **अभाव** में मामला खारिज कर दिया गया।
5.	affordable	1. वहनीय 2. किफायती, सस्ता	1. The Govt. has launched an **affordable** housing scheme for the poor. 2. The VI has launched an **affordable** plan for its mobile subscribers,.	1. सरकार ने गरीबों के लिए एक वहनीय आवास योजना शुरू की है। 2. वी.आई. ने अपने मोबाईल उपभोक्ताओं के लिए एक **किफायती** प्लान की शुरूआत की है।
6.	benefit	1. फायदा 2. हितलाभ	1. The Government is working for the **benefit** of the poor. 2. This scheme will **benefit** everyone.	1. सरकार गरीबों के **राहत** के लिए काम कर रही है। 2. इस योजना से सभी को **लाभ** होगा।
7.	brief	1. संक्षिप्त 2. संक्षिप्त जानकारी 3. पक्षसार, ब्रीफ	1. In a **brief** statement, the spokesperson concentrated entirely on international affairs. 2. The Secretary was given the **brief** of reorganizing the department. 3. The advocate argued the case and filed a **brief** for petitioner.	1. एक **संक्षिप्त** बयान में प्रवक्ता ने सारा ध्यान अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर केंद्रित किया। 2. विभाग के पुनर्गठन के बारे में सचिव को **संक्षिप्त** जानकारी दी गई। 3. अधिवक्ता ने मुकदमे में तर्क प्रस्तुत किया और याचिकाकर्ता के लिए **पक्षसार** दायर किया।

8.	business	1. कार्य 2. कारोबार, व्यवसाय	1. The **business** of the both houses was interrupted. 2. The Government worried that Indian companies would lose **business**.	1. दोनों सदनों का **कार्य** बाधित हुआ। 2. सरकार को चिंता है कि भारतीय कंपनियों का **कारोबार** घट सकता है।
9.	casual	1. आकस्मिक 2. अनियत 3. लापरवाह, असावधान	1. He was granted two days **casual** leave. 2. **Casual** remittance is required to meet sudden demand of funds. 3. One should not be **casual** about official work.	1. उसे दो दिन का **आकस्मिक** अवकाश स्वीकृत किया गया। 2. निधियों की अप्रत्याशित मांग को पूरा करने के लिए **अनियत** धनप्रेषण आवश्यक है। 3. सरकारी काम के प्रति **लापरवाह** नहीं होना चाहिए।
10.	category	1. कोटि 2. वर्ग 3. श्रेणी, दर्जा	1. The grammatical **category** of some words varies with their usage. 2. Indian society is divided into many **categories**. 3. The result can be divided into three **categories**.	1. कुछ शब्दों की व्याकरणिक **कोटि** उनके प्रयोग के साथ बदलती है। 2. भारतीय समाज कई **वर्गों** में बँटा है। 3. परिणाम को तीन **श्रेणियों** में बाँटा जा सकता है।
11.	charge	1. शुल्क, प्रभार, खर्च 2. पदभार, कार्यभार 3. निगरानी, देखरेख 4. आरोप 5. शुल्क लगाना 6. आरोपित, प्रभारित	1. Electricity **Charge** has been increased from August. 2. The Steel Minister is holding additional **charge** of Department of Mine. 3. The patient is in **charge** of experienced Doctors. 4. All **charges** against him have been dropped. 5. The company will **charge** extra for delivering goods.	1. अगस्त से विद्युत **प्रभार** बढ़ा दिया गया है। 2. इस्पात मंत्री के पास खान विभाग का अतिरिक्त **पदभार** है है। 3. रोगी अनुभवी डॉक्टरों की **देखरेख** में हैं। 4. उसके खिलाफ सभी **आरोपों** को हटा दिया गया है। 5. कंपनी माल पहुंचाने के लिए **अतिरिक्त** शुल्क लेगी।

			6. **Charged** amount on stationary will be shown in the Office Expenditure head.	6. स्टेशनरी पर **प्रभारित** राशि को कार्यालय व्यय शीर्ष में दर्शाया जाएगा।
12.	condition	1. शर्त, प्रतिबंध 2. दशा, स्थिति	1. The terms and **conditions** of his employment were explained to him before his joining. 2. The BSF operates even in the inhospitable **conditions** to protect the borders.	1. कार्यभार ग्रहण करने से पहले उन्हें नौकरी से संबंधित निबंधन और **शर्तें** स्पष्ट कर दी गई थीं। 2. सीमा सुरक्षा बल अत्यंत कठिन **स्थितियों** में देश की सीमाओं की रक्षा करता है।
13.	enter	1. दर्ज करना 2 प्रवेश करना 3. समझौता करना	1. The names of the new employees may be **entered** in the register. 2. He **entered** the All India Radio Service as a general trainee. 3.Both the countries **entered** into an agreement.	1. नए कर्मचारियों के नाम रजिस्टर में **दर्ज** किए जाएं। 2. उसने एक सामान्य प्रशिक्षु के रूप में आकाशवाणी सेवा में **प्रवेश** किया। 3. दोनों देशों ने एक **समझौता** किया।
14.	figure	1. अंक 2. आंकड़ा 3. व्यक्तित्व	1. The employee's salary is now in five **figures**. 2. By 2012, this **figure** had risen to 14 million. 3. The spokesperson is an eminent political **figure**.	1. कर्मचारी का वेतन अब पांच **अंकों** में है। 2. वर्ष 2012 तक यह **आंकड़ा** 14 समसलयन तक पहुंच गया था। 3. प्रवक्ता प्रतिष्ठित राजनीतिक व्यक्तित्व हैं।
15.	fine	1. जुर्माना 2. सूक्ष्म	1. Offenders will be liable to a heavy **fine**. 2. There's no need to make such **fine** distinctions.	1. दोषियों पर भारी **जुर्माना** लगाया जाएगा। 2. इस तरह **सूक्ष्म** भेद करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्ष कार्यालय : कोल इंडिया लिमिटेड

वार्षिक प्रतियोगिता 2022-23

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री धर्मपाल कुमार, बहुकार्मिक कर्मचारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उपक्रम कोलकाता के सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता के हिंदी भाषी वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में अभिवृद्धि हेतु इनकी रुचि एवं समर्पित भावना के लिए इन्हें यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

श्री विनय रंजन	**श्री अजय कुमार चौधरी**
अध्यक्ष नराकास (उपक्रम), कोलकाता तथा	सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम), कोलकाता एवं
निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध)	कार्यकारी निदेशक (कार्मिक/राजभाषा)
कोल इंडिया लिमिटेड	कोल इंडिया लिमिटेड

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), कोलकाता

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अध्यक्ष कार्यालय : कोल इंडिया लिमिटेड

वार्षिक प्रतियोगिता 2022-23

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री फागुन आईच, अ. श्रे. लि., कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उपक्रम कोलकाता के सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित राजभाषा प्रश्नोत्तरी व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के हिंदीतर भाषी वर्ग में सांत्वना (क) पुरस्कार प्राप्त किया है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन में अभिवृद्धि हेतु इनकी रुचि एवं समर्पित भावना के लिए इन्हें यह प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाता है।

श्री विनय रंजन	**श्री अजय कुमार चौधरी**
अध्यक्ष नराकास (उपक्रम), कोलकाता तथा	सदस्य सचिव, नराकास (उपक्रम), कोलकाता एवं
निदेशक (कार्मिक एवं औद्योगिक संबंध)	कार्यकारी निदेशक (कार्मिक/राजभाषा)
कोल इंडिया लिमिटेड	कोल इंडिया लिमिटेड

अंक-13

सेनानी

वर्ष -2022-23

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय भारत सरकार
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700097
पश्चिम बंगाल, दूरभाष: 033-23350052
ई-मेल: dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in